 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

सावन-भादों, संवत् नानकशाही ५४७
वर्ष ८ अंक १२ अगस्त 2015

संपादक : सिमरजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

जग अउरु न याहि महा तम मै अवतारु उजागरु आनि कीअउ ॥
तिन के दुख कोटिक दूरि गए मथुरा जिन्ह अंम्रित नामु पीअउ ॥
इह पधति ते मत चूकहि रे मन भेदु बिभेदु न जान बीअउ ॥
परतछि रिदै गुर अरजुन कै हरि पूरन ब्रहमि निवासु लीअउ ॥
जब लउ नही भाग लिलार उदै तब लउ भ्रमते फिरते बहु धायउ ॥
कलि घोर समुद्र मै बूडत थे कबहू मिटि है नही रे पछुतायउ ॥
ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ अवतारु बनायउ ॥
जप्यउ जिन्ह अरजुन देव गुरू फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ ॥ (पन्ना १४०९)

भट्ट साहिबान के सवैय्यों में शामिल इस पावन सवैय्ये में भट्ट मथुरा जी पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज द्वारा प्रभु-नाम को व्यापक स्तर पर कलयुग के अज्ञानता के अंधकार भरे जीवों के भटकाव की संभावना वाले समय में प्रचारने-प्रसारने से जगत-कल्याण करने के महान कारनामे को करने का वर्णन करते हुए उनकी प्रभु-नाम से अभिन्नता का गुण गायन करते हैं।

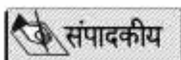
भट्ट मथुरा जी कथन करते हैं कि संसार में अज्ञानता का बड़ा व्यापक पासार हुआ है। इस घोर अंधकारमयी स्थिति में संसार को ज्ञान-प्रकाश में ले जाने के सक्षम महापुरुष यकीनी रूप में श्री गुरु अरजन देव जी ही तो हैं न कि कोई अन्य। हे मथुरा! उनके करोड़ों ही दुख दूर हो गए जिन्होंने गुरु जी से नाम का अमृत पीया है।

भट्ट मथुरा जी आगे कथन करते हैं कि ऐ मेरे मन! यही एकमात्र मार्ग है संसार के आत्मिक कल्याण का जो गुरु जी ने बनाया है, अत: तू भी इस मार्ग को अवश्य पकड़, इसी मार्ग पर चल। कहीं ऐसा न हो कि तू इस मार्ग को अपनाना ही भूल जाए। कहीं गुरु जी और हरि में फर्क न समझ लेना! गुरु अरजन साहिब के हृदय में पूर्ण ब्रह्म-ज्ञान समाया है। परमात्मा का उनके हृदय में प्रत्यक्ष रूप में निवास है।

भट्ट साहिब सच्चे गुरु की शरण में आने से पहले का अपना निज उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जब अभी मेरे माथे पर मेरा अच्छा भाग्य नहीं प्रकट हुआ था तब तक मैं भ्रमता फिरता था, अनेकों स्थानों पर दौड़-दौड़कर जाता था। सच है कि कलयुग रूपी डरावने समुद्र में मैं डूबा हुआ था। हर समय मन पर पश्चाताप भारी पड़ा रहता था।

अंत में भट्ट मथुरा जी अपने आप को और अधिक परिपक्व कराने के मनोभाव से संबोधन करते हैं कि हे मथुरा! तू यह वास्तविकता भलीभांति विचार ले, स्वीकार ले कि परमात्मा ने सारे संसार को भवसागर से पार लगाने हेतु गुरु अरजन साहिब को भेजा है। अत: कलयुग के जिन-जिन अच्छे भाग्य वाले लोगों ने श्री गुरु अरजन देव जी को स्मरण किया वे फिर पुन: जन्म चक्र में नहीं आये, वे अध्यात्म की सर्वोच्च मंज़िल पाने में सफल हुए हैं, उनकी भटकना समाप्त हो गई है।





. . . जरा याद करो कुर्बानी

१५ अगस्त, १९४७ ई का दिन जहां इतिहास में भारत का अंग्रेजों से स्वतंत्रता का दिन दर्ज है वहां यह दिन पंजाबियों का अपने वतन पंजाब के बंटवारे का दिन भी है। पंजाब के विभाजन की बेहद दर्दनाक घटनायें आज भी पंजाबियों के दिलों में टीस की तरह उठती है। सिक्खों के अनेकों गुरुधाम इस बंटवारे का शिकार हो गए। परिवारों के परिवार कत्लेआम की भेंट चढ़ गए। उस समय जब सारा देश स्वतंत्रता का जश्न मना रहा था तो पंजाब के उजड़े निवासी अपने साक-सम्बंधियों की लाशें कंदों पर ढोते फिरते थे या लापता हुओं की ख़बरों पर आशा लगाए बैठे थे। इस समय सबसे ज्यादा दुर्दशा स्त्रियों की हुई जिस तरह किसी दूसरे देश के हमले के समय सब कुछ को लूटपाट का माल समझ लिया जाता है उसी तरह ही इस विभाजन में हुआ, चाहे इस दिन दुनिया के नक्शे पर एक नया देश पाकिस्तान उभरकर सामने आया था जो पहले भारत का ही हिस्सा था तथा यहां के बाशिंदों ने भारतियों के साथ मिलकर अंग्रेजों से स्वतंत्रता लेने हेतु कुर्बानियां दीं। भारत को स्वतंत्र करते समय अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति का प्रयोग कर जाते-जाते भी भारत को बर्बाद करने की कोई कोर-कसर शेष न छोड़ी।

अंग्रेजों के मन में एक बात सदैव ही खटकती रही थी कि अगर पंजाब के शूरवीर योद्धे न होते तो हमने भारत को बहुत देर तक गुलाम बनाए रखना था। इस गुलामी के रास्ते की सबसे बड़ी रुकावट पंजाबी थे, जिनको स्वतंत्र रहने की जन्म घुट्टी गुरु साहिबान द्वारा मिली थी। अंग्रेजों ने चाहे सन् १७६५ ई में बंगाल पर कब्ज़ा कर लिया था परंतु पंजाब में बसते सिक्खों की बहादुरी की ख़बरें उनके पास पहुंचनी शुरू हो गईं। सिक्खों ने १७६१ ई में भारत पर हमला करने आए अहमद शाह अब्दाली को सरहद से पार होने के लिए मज़बूर कर दिया था। अंग्रेज फोर्ट विलियम इस समय सिक्खों की बहादुरी का मुल्लांकन बड़ी गहनता से कर रहा था। सिक्खों की शक्ति अंग्रेजों के भारत में पांव पसारने में बहुत बड़ी रुकावट बनती नज़र आ रही थी। यही कारण है कि अंग्रेज पंजाब पर सबके बाद १८४९ ई में अपनी लूंबड़ चालें चलकर ही काबिज़ हो पाए। पंजाब के बाशिंदों ने अंग्रेजों का कब्ज़ा हो जाने के बाद उनको एक दिन भी टिककर बैठने नहीं दिया, बल्कि पहले दिन से ही स्वतंत्रता हेतु संघर्ष शुरू कर दिया था। इनके पीछे गुरु साहिबान की शिक्षाएं थीं जो पंजाबियों को गुरुद्वारा साहिबान से मिलती थीं। यही कारण था अंग्रेज जाते समय सिक्खों की शक्ति के स्रोतों को भी दो भागों में बांट गए।

भारत की स्वतंत्रता का दिन आया तो साथ ही पंजाब के बंटवारे का भी एलान हो गया। यह दिन यहां पंजाबियों के लिए नई विपत्ति लेकर आया था वहां यह स्त्रियों के लिए जो मुसीबतें लेकर आया वो कहने-सुनने से परे हैं। पंजाब में फिर्काप्रस्ती का प्रारंभ तो चाहे मार्च, १९४७ ई से ही हो गया था जब ज़िला रावलपिंडी, ज़िला अटक तथा ज़िला मुलतान में एक फिर्के के लोगों ने मिलकर गावों के गांव उजाड़ दिए थे। उस समय ज़िला रावलपिंडी के गांव थोहा खालसा

की स्त्रियों ने अपनी इज़्ज़त बचाने की खातिर कुएं में छलांगें लगाकर उपनी जानें कुर्बान कर दीं। इसी तूफान ने आगे बढ़कर अगस्त व सितंबर के माह तक पंजाब को ग्रिफ्त में ले लिया। इस अफरा-तफरी में हज़ारों ही स्त्रियां अगवा कर ली गईं। पहले-पहल पुलिस ने कुछ समाज सेवी संस्थाओं की मदद से अगवा हुई स्त्रियों को ढूंढना शुरू किया परंतु कई जगह पुलिस कर्मचारियों द्वारा ही स्त्रियों के साथ अभद्र व्यवहार किया जाने लगा। पूर्वी पुलिस पंजाब लाइनज़ एजेंसी के अफसरों की मीटिंग में यह बात बताई कि ज़िला गुजरांवाला के गांव कमोकी के एक पुलिस सब-इंसपेक्टर ने कमोकी के रेलवे स्टेशन पर हिंदू व सिक्ख शरणार्थियों की लूटमार की।

सन् १९४९ में भारत सरकार ने "अगवा किए व्यक्तियों की बरामदी व पुन: स्थापना एक्ट" पास किया। इसके अधीन भारत पाकिस्तान ट्रिब्यूनल बनाया गया जिसके द्वारा झगड़े वाले केसों का फैसला किया जाना था। भारत सरकार व पाकिस्तान सरकार द्वारा पश्चिमी पंजाब व पूर्वी पंजाब के ज़िलों में से अगवा हुई स्त्रियों की भाल (ढूंढने) के लिए अफसर नियुक्त किए गए। इस कार्य हेतु समाज सेवकों की सेवाएं भी ली गईं। अगवा हुई स्त्रियों का पता करने हेतु घरों में काम करने वाली स्त्रियों को सूचना देने के गुप्त रूप में पैसे भी दिए जाते थे। उधर पाकिस्तान में अगवा की स्त्रियों को भारतीय अफसरों की नज़र से दूर रखने के लिए जम्मू-कश्मीर के उस हिस्से में भेज दिया गया जहां भारती कर्मचारियों का दाखिला बंद था। इस तरह अगवा हुई स्त्रियों को कई-कई महीनों तक एक जगह से दूसरी जगह ले जाकर कैद कर दिया जाता रहा। दोनों देशों द्वारा, भारत से २५८५६ तथा पाकिस्तान से ९३६६ व्यक्तियों की बरामदी की।

इस समय स्त्रियों के लिए एक बड़ी मुसीबत यह थी कि हिंदू परिवारों की लड़कियों को कई घरों ने अपनाने से इन्कार कर दिया क्योंकि हिंदू समाज में स्त्री को अपने पति के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखने वाली कहा जाता है, यही संकल्प उनको अपने रिश्तेदारों से दूर करता गया, चाहे वो इन हालातों में पूर्ण रूप में बेबस थीं। उनकी बरामदी में एक बड़ी रुकावट यह थी कि उनकी भाल में बहुत देर कर दी गयी थी तथा उनके सारे रिश्तेदार कत्ल कर दिए गए थे, जिस कारण उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। अगवा की स्त्रियों की बरामदी व पुन: स्थापना एक्ट नवंबर १९५७ ई तक लागू रहा इसके बाद इसको खत्म कर दिया। इस समय अगवा हुई स्त्रियों के पैदा हुए बच्चों के रख-रखाव की बहुत बड़ी मुसीबत थी १ जनवरी, १९५७ ई से ३० सितंबर, १९५७ ई तक पाकिस्तान के सुपुर्द की स्त्रियां के ८६० बच्चे भारत में ही रह गए। इन बच्चों की देखभाल हेतु भारत के लिए एक गंभीर समस्या थी। जहां ये स्त्रियां अपने रिश्तेदारों से बिछुड़ने का संताप भोग रही थीं अब ये अपने बच्चों से बिछुड़ने का दर्द भी सीने में भरकर अपने साथ ले गईं।

आज जब हम भारत की स्वतंत्रता का जश्न मनाते हैं तो हमें इस समय इन शूरवीर स्त्रियों की कुर्बानी को भी याद रखना चाहिए, जिन्होंने इस समय अत्यंत जुल्म और स्तिम झेले हैं। पंजाबियों ने वहां सारे भारत देश की स्वतंत्रता हेतु जो रक्त बहाया है, जुल्म और स्तिम झेले हैं सारी दुनिया के इतिहास में सदैव देश भक्तों के लिए प्रेरणास्रोत बना रहेगा। ❁

गुरमति दृष्टिकोण के अनुसार जीवन-आदर्श की महत्ता

*-डॉ शमशेर सिंघ**

सिक्ख गुरुओं द्वारा दर्शाए जीवन-मार्ग को गुरमति विचारधारा के अनुसार 'निर्मल पंथ', 'खालसा पंथ' के नाम दिये गए हैं। इन शब्दों का आंतरिक भाव एक ही ख़्याल का सूचक है जो गुरु साहिबान ने संसार के कल्याण के लिए दिया है। महापुरुष का जीवन एवं कर्त्तव्य एक ऐसी नदी की भांति होते हैं जिससे हर एक जिज्ञासु अपनी श्रद्धा के अनुसार अंजुली भर कर अपनी प्यास बुझा सकता है। प्रभु के सच्चे भक्त सारे संसार का भला चाहते हैं। सिक्खी एक पंथ है, एक मार्ग है। यह मार्ग अति कठिन है। यहां आत्मसमर्पण है, जहां सिर को हथेली पर रखना पड़ता है। इसमें प्रेम ही प्रेम है। वो भी बिना किसी लालच के है। प्रेम एक साधन है, निशाना भी है। 'सिक्खी खंनिउ तिक्खी वालों निक्की' है। इस मार्ग पर चलते हुए पांव पीछे नहीं हटना चाहिए। यदि सिर भी देना पड़े तो कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए। सिक्खी का महल कोई ईंटों एवं गारे से नहीं बना, यह तो शहीदों के खून के गारे से और सिक्खी-सिद्धांतों की ईंटों से मिलकर बना है। इस महल को ढहाने के लिए समय-समय पर कई तूफान आए परंतु इसकी मज़बूती ने इसको कायम रखा।

भाई गुरदास जी ने इस पंथ को 'अगंम' (अगम्य) लिखा है। जिस तरह जल में मछली और आकाश में पक्षी का रास्ता ढूंढना मुश्किल होता है, इसी तरह गुरसिक्ख के रास्ते का अंत पाना अति कठिन होता है। यह पंथ मन-बुद्धि की पहुंच से दूर अगंमी वस्तु है, एक रहस्मयी वस्तु है। इस पंथ को चलाने वाला गुरु है।

गुरमति का निशाना जीव को 'सचिआरा' (सत्य) बनाना है 'सचिआरता' (सत्यता) मानव जीवन का शिखर है, परमात्मा के साथ एकात्मता है, जहां अहं को खत्म करना है। यह पूर्णता, अभेदता या एकात्मता जीवन के बाद नहीं, बल्कि जीवित अवस्था में प्रभु के साथ एकात्मता प्राप्त करके जीवन-मुक्त बनना है। इसे गुरमति में 'सहज' भी कहा गया है। सहज कोई विलक्षण मत नहीं है। सहज एक अवस्था है जिसे बिना किसी मत के बदलते हुए प्राप्त किया जा सकता है।

इस सहज को परम पद, चौथा पद, अमर पद, निर्वाण पद, तुरीआ (तुरीय) अवस्था, महासूख, बंदखलासी आदि नाम दिए गए हैं। जीव ने अधूरे से पूरा बनना है; मलिन से उज्ज्वल होना है; अज्ञानता से ज्ञान की तरफ जाना है। लहर से पुन: समुद्र में आलोप होना है। अवगुणी ने गुणों को धारण करना है। तीन गुणों में रहते हुए इनसे निर्लेप रहना है तीन गुणों के प्रभावाधीन मनुष्य तीन तापों-आधि (मन के कारण दुख), बिआधि (शारीरिक दुख) तथा अपाधि (भ्रम के दुख) का रोगी है। इन बंधनों से मुक्त होना ही सच्चे आदर्श की प्राप्ति है :

मुकति भई बंधन गुरि खोल्हे सबदि सुरति पति पाई ॥ *(पन्ना १२५५)*

जीवन-आदर्श की प्राप्ति तब ही संभव है यदि साधन ही इसकी महत्ता व श्रेष्ठता को समझता है। मनुष्य कई जीव-जंतुओं के चक्करों में से निकलकर यहां पहुंचा है। यदि अब भी इस

**VPO : शेखूपुरा, जिला पटियाला-१४७००१*

जन्म की विलक्षणता को नहीं समझता और यह मानव-जन्म जो सीढ़ी का अंतिम डंडा है, भी हाथ से निकल गया तो फिर इसके लिए आवागमन बना रहेगा। पुन: यह मौका हाथ नहीं आएगा। जीव के पल्ले पश्चाताप ही रह जाएगा।

मनुष्य संसार के शेष सारे जीवों से श्रेष्ठ है। इसमें चेतनता तथा चिंतन जैसे दोनों गुण हैं। मनुष्य अपनी समस्याओं के प्रति चेतन और इनका हल ढूंढने के योग्य है। मनुष्य खुद ज्योति स्वरूप प्रभु को पहचान सकता है। मनुष्य यत्नशील एवं चिंतनशील है। ज्योति रूप में प्रभु का अंश है। प्रभु का निवास ज्योति रूप इसके अंदर है। श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥
(पन्ना ४४१)

मनुष्य प्रभु और संसार के मध्य एक कड़ी है। यदि वो संसार की तरफ अपना मुख मोड़ लेता है, तब वो 'मनमुख' कहलाता है, यदि गुरु (परमात्मा) की तरफ देखता है तब 'गुरमुख' बन जाता है। मनुष्य केंद्रीय-बिंदु है। गुरमति विचारधारा के अनुसार परमात्मा ने मानव-जीवन की समस्याओं का हल अपने ढंग से किया है। संसार का त्याग नहीं, विकारों एवं पदार्थों से वैराग है। यहां पदार्थों को एक साधन रूप में लिया जाता है, निशाना नहीं।

जीव माया के प्रभावाधीन भ्रम में पड़ा प्रभु को शरीर से बाहर गृहस्थ के त्याग में जंगलों में ढूंढता है। वह भ्रम में है। गुरमति ने मानव-जन्म की हीरे-जवाहरात तथा कंचन आदि बहुमूल्य वस्तुओं के साथ तुलना की है। इस शरीर में प्रभु-ज्योति को ढूंढने के लिए बार-बार चेतावनी दी है :

काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला ॥
काइआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला ॥ *(पन्ना ७५४)*
तिनि करतै इकु खेलु रचाइआ ॥
काइआ सरीरै विचि सभु किछु पाइआ ॥
(पन्ना ११७)

धार्मिक तत्ववेत्ताओं ने मानव-चेतना को तीन स्तरों-आत्मिक चेतना, बौद्धिक चेतना तथा आध्यात्मिक चेतना पर विकसित होते दर्शाया है। यही कारण है कि मानव-जन्म ही प्रभु-प्राप्ति के लिए असली मौका है इस जन्म की प्राप्ति के लिए देवते भी लालायित हैं :

इस देही कउ सिमरहि देव ॥
सो देही भजु हरि की सेव ॥ *(पन्ना ११५९)*

कई बार हम इस शरीर को सब कुछ समझ कर इसकी पूर्ति तक ही अपने आप को महदूद कर देते हैं। तब हम अपने असली निशाने से दूर चले जाते हैं। इस शरीर से अलग आत्मिक तत्व की समझ गुरु के द्वारा प्राप्त होती है। गुरु सिक्ख को नाम-मार्ग दिखाकर परम पद की प्राप्ति तक ले जाता है। गुरु शबद के द्वारा शरीर की रचना करता है। शबद के मन में बसने से विकारों का दमन, आशंकाओं का निवारण, दुखों से छुटकारा, दुविधा का नाश हो जाता है। अवगुणों से छुटकारा मिलने पर गुणों का निवास हो जाता है। मन की स्थिरता और आत्म रस की प्राप्ति होती है।

गुरु का शबद कांच रूप मनुष्य को कंचन जैसा कीमती बना देता है। गुरु-शबद के पारस स्पर्श से पत्थर-दिल भी मोम-दिल हो जाते हैं। पशुओं से देवताओं वाला आचरण प्रदान करना सच्चे गुरु की समर्थ्य व आलौकिक चमत्कार है। गुरु विकारों से जुड़ती जा रही मानव-आत्मा को अपने बल से रोक लेता है। गुरु पिंगलों (अपाहिज) को पहाड़ पर चढ़ा सकता है; अंधों को तीन भवनों की समझ प्रदान करने के योग्य है, अहंकारियों का अहंकार दूर करके नम्रता के पुंज बना देता है; कंगाल को समर्थवान बना सकता है। ☼

बारह माहा तुखारी : कुछ विशेष पक्ष

*-डॉ परमवीर सिंघ**

बारह माहा का वर्णन समय-समय पर प्रचलित परंपराओं में मिलता है, पंजाबी भाषा में लिखे जाने से पूर्व अलग-अलग भाषाओं में काव्य-रूपों में इसके प्रत्यक्ष दर्शन किए जा सकते हैं। "बंगाल के वैष्णव सगुण काव्य में बारहमाह मिलते हैं। चैतन्य महाप्रभु तथा उनके अनुयाई भक्तों ने इस रूप का खरा प्रयोग किया है। बंगाली भक्त-बाणी 'पदकलपतरू' में श्याम दास का बारहमाह एक अति सुंदर कृति है। यह बारहमाह सगुण भक्ति के प्रसंग में राधा एवं कृष्ण से सम्बंधित है। बंगाली लोक साहित्य में इसको 'बारहमासी' बोलते हैं, जिसके लेखक बंगाल के वैष्णव कवि बलराम दास हैं।"[१] इसके अलावा भी बहुत सारे बारहमाह प्रचलित हैं जिनका विस्तारपूर्वक वर्णन प्रो पिआरा सिंघ पदम ने अपनी पुस्तक 'पंजाबी बारामाह' में किया है। पंजाबी में सबसे पहला बारह माहा श्री गुरु नानक देव जी द्वारा तुखारी राग में लिखा हुआ मिलता है। इसके बारे में कहा जाता है कि "यह बाणी गुरु नानक साहिब की अंतिम रचना (बाणी) है जो गुरु साहिब ने अपने परलोक गमन के समय करतारपुर में उच्चारण की वाहिगुरु जी द्वारा बुलावा आने पर इस प्रकार महसूस करते हैं कि मायके घर रहती स्त्री अपने पति को मिलने के लिए तैयार होती है।"[२]

बारह माहा में जहां बारह महीनों का वर्णन किया गया है, वहीं साथ ये महीने छः ऋतुओं से भी सम्बंधित हैं। प्रत्येक दो-दो महीने एक-एक ऋतु का वर्णन करते हैं, जैसे चेत तथा वैसाख-- बसंत ऋतु का, ज्येष्ठ तथा आषाढ़-- ग्रीष्म ऋतु का, सावन तथा भादों-- वर्षा ऋतु का, आश्विन तथा कार्तिक-- सर्द ऋतु का, मार्गशीर्ष एवं पौष-- हिम ऋतु का, माघ एवं फाल्गुन-- शिशिर ऋतु का। इन ऋतुओं के बदलने से ही मौसम में परिवर्तन आता है जो कि व्यक्ति की भावनाओं को प्रभावित करता है। कहने से तात्पर्य है कि इन ऋतुओं के बदलने से भी व्यक्ति के मन में खुशी, गमी, उत्साह, आलस्य आदि देखने को मिलते हैं।

प्रचलित बारह माहा का मुख्य विषय वियोग तथा विरह से सम्बंधित है। जीव-स्त्री को अपने घर से दूर गए प्रभु-प्रियतम के वियोग में कोई भी महीना अच्छा नहीं लगता चाहे कि मौसम कितना भी मनमोहक क्यों न हो। जीव-स्त्री के लिए केवल वही महीना सुखदायी माना गया है जब उसका प्रभु-प्रियतम उसके पास है। इन सांसारिक भावनाओं को श्री गुरु नानक देव जी ने आध्यात्मिक रंगत देकर जीव-स्त्री तथा प्रभु-पति के मिलाप का वर्णन किया है। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा रचित बारह माहा, जो कि तुखारी राग में अंकित है, के कुछ विशेष पक्षों का यहां वर्णन किया जा रहा है।

१. आध्यात्मिक पक्ष : श्री गुरु नानक देव जी इस सृष्टि का कर्ता एक अकाल पुरख को मानते हैं, इसलिए सृष्टि की ऋतुएं, महीने तथा दिन भी उसी परमात्मा की सृजना का हिस्सा हैं। भाई गुरदास जी भी गुरु साहिब के इस सिद्धांत

**सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, फोन : ९८७२०-७४३२२*

की प्रौढ़ता करते हुए कहते हैं कि छः ऋतुएं, बारह महीने, सात वार परमात्मा ने ही संसार में बनाए हैं :

--छिअ रुति बारह माह करि सति वार सैंसार अपाइआ। *(वार ३९:१३)*

--छिअ रुति बारह माह करि खाणी बाणी चलतु रचाइआ। *(वार २६:३)*

बारह माहा के कुल १७ पदे हैं और इन में से पहले चार पदों में परमात्मा की सिफ़त-सलाह करके उसके साथ गुरु-शबद द्वारा जुड़ने की प्रेरणा दी गई है। अंतिम पदे में सारांश दिया गया है। बीच वाले पदों में बारह महीनों में प्रभु-पति-मिलन की तड़प का वर्णन किया गया है। गुरु साहिब जीव-स्त्री को परमात्मा का अंश समझते हैं। जीव-स्त्री परमात्मा से बिछुड़ी हुई है। जब जीव-स्त्री के अंदर प्रभु-पति के लिए तड़प पैदा होती है तो वो उसके पास जाना चाहती है। आध्यात्मिक विकास करते-करते जीव-स्त्री अपने प्रभु-पति के साथ जुड़ सकती है। इस बाणी में से श्री गुरु अरजन साहिब का यह सिद्धांत दृढ़ करने में मदद मिलती है :

राजु ना चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥ *(पन्ना ५३४)*

२. *मनोवैज्ञानिक पक्ष :* बारह माहा तुखारी में जीव-स्त्री की मनो-दशा का विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है। स्त्री को हमेशा पति के साथ की ज़रूरत महसूस होती है और जब पति पास न हो तो उसको मिलने की तीव्र इच्छा बनी रहती है, बेचैनी एवं एकाकीपन महसूस होता है; डॉ. वज़ीर सिंघ स्त्री की मनो-दशा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि "आत्मा रूपी स्त्री कभी अपनी कल्पना में निसि बासुर प्रियतम का साथ अनुभव करती है, कभी वियोग की कसक में से फरियाद कर उठती है, कभी उसकी अमंगें तीक्ष्ण मनोवेग बन जाती हैं, कभी ठंडे मीठे प्यार के मनोभावों में पलट जाती हैं, कभी-कभी वो अपने आप को कोसने लग जाती है कि प्रियतम तो पास में नहीं और मैं वेश व हार-शृंगार में खचित हुई फिरती हूं।"[३]

गुरु साहिब ने स्त्री मानसिक दशा का वर्णन बारह महीनों में करके उसके प्रभु-पति के प्रति अंदरूनी आकर्षण का वर्णन किया है कि कैसे एक जीव स्त्री अपने प्रियतम को मिलने के लिए बेचैन है, उसका यह समय कैसे गुज़रता है, उसको एक-एक पल छः-छः महीने के समान लगता है। इस वियोग में उसका मन तथा तन, दोनों क्षार हो रहे हैं :

पिरु घरि नही आवै धन किउ सुखु पावै बिरहि बिरोध तनु छीजै ॥ *(पन्ना ११०८)*

३. *प्राकृतिक पक्ष :* यह पक्ष बारह माहा का एक अटूट अंग है। बारह महीनों में छः ऋतुओं का परिवर्तन आता है, इस कारण हर महीने का अपना-अपना विशेष महत्त्व उजागर होता है। चेत, वैसाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, सावन, भादों, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन-- इन बारह महीनों का वर्णन बारह माहा में मिलता है। मौसम के बदलाव से व्यक्ति का मन भी प्रभावित होता है। "गुरु नानक साहिब ने भी अपने बारह माहा में प्रकृति का चित्रण अपनी विरह-भावना को रूपमान करने के लिए किया है। यह बात खास वर्णनयोग्य है कि गुरु साहिब बदल रही ऋतुओं, थित्तों को इस प्रकार गहनता से देखते-परखते हैं कि उनके वर्णन में बदल रही प्रकृति भी साकार हो उठती है ।"[४]

बारह माहा-तुखारी में श्री गुरु नानक देव जी ने प्रकृति का वर्णन करते हुए जहां ऋतुयों में बदलाव के बारे में चर्चा की है वहीं प्रकृति में समय-समय पर तथा मौसम के बदलाव से पैदा हो रहे भंवरों, फूलों, कोयलों, पपीहों, मेढकों, मच्छरों आदि का भी वर्णन किया है। ये इस

बात का संकेत करते हैं कि प्रत्येक मौसम अपने हिसाब से प्रकृति की सुंदरता में वृद्धि कर रहा है, जैसे यदि गर्मी आदि का मौसम प्रकृति में से बाहर निकाल दिया जाए तो शेष समय के मौसम भी शायद व्यक्ति को इतना प्रभावित न कर सें। ऋतुयों तथा मौसमों के बदलाव के कारण ही व्यक्ति के मन में बदलाव की संभावना बनती है। जैसे ज्येष्ठ-आषाढ़ की तपिश के बाद जब बादल बारिश करते हैं तो मन को कुछ शांति मिलती है, सूखी पड़ी वनस्पति हरी हो जाती है, यहां तक कि पशु-पक्षी भी खुशहाली महसूस करते हैं। इस बदलाव का ज़िक्र करते हुए साहिब फरमान करते हैं :

सावणि सरस मना घण वरसहि रुति आए।
(पन्ना ११०८)

४. विरह पक्ष : इस बाणी का मुख्य विषय विरह माना गया है, जिसके द्वारा बिछोड़े की पीड़ा एवं दर्द का एहसास होता है। विरह को सूफी फकीरों ने ज़िंदगी का वो गीत बताया है, जिसको अपनाकर परम-पद की प्राप्ति की जा सकती है। ज़िंदगी के अन्य रसों के साथ-साथ विरह रस की भी अपनी ही अहमियत है। इसके बिना व्यक्ति के जीवन में खालीपन आ सकता है तथा असके आध्यात्मिक विकास में रुकावट पैदा हो सकती है। आध्यात्मिक विकास में विरह काइ होना आवश्यक माना गया है। जैसे केवल मीठा खाने से ही मिठास का पता नहीं चलता तथा नमकीन की भी ज़रूरत है, उसी तरह विरह भी महां रस की प्राप्ति की सीढ़ी है जिसका अस्तित्व जीवन में अनिवार्य माना गया है :

बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु ॥
फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै सो तनु जाणु मसानु ॥ *(पन्ना १३७९)*

बारह माहा के सारे महीनों में पति-प्रियतम के प्रति प्यार की तड़प तथा उसको मिलने की तीव्रता का ज़िक्र किया गया है। प्रियतम के मिलाप के बिना विरहिणी स्त्री को मौसम का लुभावनापन भी दुखी करता है तथा किसी भी महीने या ऋतु के बदलने से उसके मन में कोई परविर्तन नहीं आता। वह पूरा वर्ष अपने प्रियतम के मिलाप के इंतज़ार में गुज़ार देती है और किसी भी मौसम का आनंद भोगने से असमर्थ रहती है। इतना ही नहीं लुभावने मौसम में भी एकाकीपन का डर महसूस करती हुई कहती है :

पिरु घरि नही आवै मरीऐ हावै दामनि चमकि डराए ॥ *(पन्ना ११०८)*

सावन के बाद भादों महीने में भी चाहे प्रकृति के नज़ारों का आनंद वनस्पति तथा लुभावने मौसम को देखकर भोगा जा सकता है किंतु मानसिक विरह इस मौसम में जीव-स्त्री को तंग करती है, जिसका वर्णन करते हुए गुरु साहिब बारह माहा में फरमान करते हैं।

भादउ भरमि भुली भरि जोबनि पछुताणी ॥
जल थल नीरि भरे बरस रुते रंगु माणी ॥
बरसै निसि काली किउ सुखु बाली दादर मोर लवंते ॥
प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा बोले भुइअंगम फिरहि डसंते ॥ *(पन्ना ११०८)*

विरह पक्ष का वर्णन करते हुए गुरु साहिब प्रत्येक महीने में स्त्री के मनों-भावों तथा अन्य प्रकटावों के द्वारा यही पेश कर रहे हैं कि प्रभु-प्रियतम से बिछुड़कर जीने से ज़िंदगी का सारा समय व्यर्थ ही जा रहा है, जिस कारण जीवन में कोई आनंद पैदा नहीं होता तथा व्यक्ति छोटी-छोटी वस्तुओं के अभाव से क्षीण होता है। यदि प्रभु के साथ जुड़ा जाए तो जहां परम आनंद पैदा होता है वहीं जीवन के प्रत्येक समय में व्यक्ति हुल्लास तथा आनंद में रहता है।

५. दार्शनिक पक्ष : गुरु साहिब का मुख्य उद्देश्य

व्यक्ति को परमात्मा के साथ जोड़ता है। इस कार्य के लिए गुरु साहिब ने बारह माहा में दार्शनिक विचारधारा का प्रयोग किया है। सुहागिन को अच्छे गुणों वाली स्त्री के रूप में प्रकट कर उसके द्वारा ज्ञान, भक्ति, आत्मा परमात्मा, कर्म, नाम आदि का वर्णन बहुत सुंदर ढंग से किया मिलता है। चाहे कि बारह माहा में दुनियावी काव्य रूप का प्रयोग किया गया है मगर इसके जरिए वो समस्त बातें समझाई गई हैं जिसके द्वारा आध्यात्मिक विकास के मार्ग की ओर साधारण व्यक्ति को भेजा जा सके। दोहागण के रूप में उन व्यक्तियों का ज़िक्र किया गया है जो कि प्रभु से दूर रहते हैं तथा मनमति करते हैं। इसके द्वारा जहां प्रभु के साथ जुड़ने का उपदेश दिया गया है वहीं प्रभु के अजूनी, कृपालु तथा दयालु होने के बारे में दृढ़ कराया गया है :

नानक वरसै अंम्रित बाणी करि किरपा घरि आवै ॥ *(पन्ना ११०७)*

बारह माहा तुखारी में गुरु साहिब यह स्पष्ट करते हैं कि आत्मा ही ज्ञान का स्वरूप है तथा ज्ञान ने इसी आत्मा के साथ मेल करना है। जब आत्मा ज्ञान-स्वरूप हो गई तो इसने अपने आप को तो प्रकाश-स्वरूप करना ही है, साथ ही दूसरों के लिए ज्ञान पैदा करने में सहायी भी होना है। इसको अलंकार रूप में पेश करते हुए गुरु साहिब कहते हैं कि एक ज्ञान विहीन आत्मा 'प्रकाश' के दीपक के अभाव के कारण भटक रही है। इस ज्ञान विहीन आत्मा के भीतर यह तड़प ज्ञानवान आत्माओं को देखकर प्रकट होती है, जिसका वर्णन करते हुए गुरु साहिब फरमान करते हैं :

घरि घरि कंतु रवै सोहागणि हउ किउ कंति विसारी ॥
उनवि घन छाए बरसु सुभाए मनि तनि प्रेमु सुखावै ॥
नानक वरसै अंम्रित बाणी करि किरपा घरि आवै ॥ *(पन्ना ११०७)*

बारह माहा तुखारी में गुरु साहिब की कर्म फ़िलासफी के दर्शन भी होते हैं कि व्यक्ति के बुरे कर्म उसको पतन की ओर ले जाते हैं जिसकी तुलना उन्होंने दोहागण से की है। जब व्यक्ति परमात्मा को अपना मूल समझ लेता है, उसकी ओर मुड़ने का यत्न करता है तो निश्चित रूप में ही एक अच्छा इन्सान बन सकता है, जिसकी तुलना एक सुहागिन तथा नेक स्त्री से की गई है, जो प्रभु के हुक्म मे रह कर कर्म करती है। गुरु साहिब इस तरह की स्त्री के बारे में टिप्पणी करते हुए फरमान करते हैं :

नानक सा सोहागणि कंती पिर कै अंकि समावए ॥ *(पन्ना ११०८)*

श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा के अनुसार भक्ति एक अहम तथा महत्त्वपूर्ण पक्ष है जिसकी झलक बारह माहा में मिलती है। बारह माहा में चाहे दुनियावी रिश्तों का वर्णन किया गया है, मगर इसका मुख्य उद्देश्य उस निरंकार की भक्ति करना ही है जो सृष्टि में रसा हुआ है। गुरु साहिब कहते हैं कि जब व्यक्ति की भक्ति संपूर्ण होती है या जब व्यक्ति भक्ति करता हुआ अपने प्रियतम के समीप पहुंच जाता है तो मन खुशी तथा आनंद के सदैव अस्तित्व का पात्र बनता है। बारह माहा का अंतिम बंद व्यक्ति की भक्ति के सफल होने की झलक पेश करता है :

बे दस माह रुति थिती वार भले ॥
घड़ी मूरत पल साचे आए सहजि मिले ॥
प्रभ मिले पिआरे कारज सारे करता सभ बिधि जाणै ॥
जिनि सीगारी तिसहि पिआरी मेलु भइआ रंगु

माणै ॥
घरि सेज सुहावी जा पिरि रावी गुरमुखि मसतकि भागो ॥
नानक अहिनिसि रावै प्रीतमु हरि वरु थिरु सोहागो ॥ *(पन्ना ११०९)*

६. *साधना पक्ष :* बारह माहा तुखारी का मुख्य विषय जीव-आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ना है। इसमें जीव आत्मा को बहुत साधारण रूप में पेश किया गया है और परमात्मा के अथाह शक्तियों का मालिक बताया गया है। इसलिए जीव-आत्मा को परमात्मा पर सदैवकालीन निर्भर रहना पड़ता है। इसकी निर्भरता तभी ख़त्म हो सकती है अगर इसका मिलाप परमात्मा के साथ हो जाए। परमात्मा के साथ मिलाप के लिए जीव-आत्मा को प्रयत्न करते हुए पेश किया गया है, यह तभी संभव हो सकता है जब जीव-आत्मा अपना सर्वस्व परमात्मा को अर्पित कर दे। प्राचीन भारतीय परंपरा में प्रभु-मिलाप के लिए साधना करने हेतु वनों में जाना, संसार से नाता तोड़ लेना, सांसों को दसम द्वार तक चढ़ा लेना, उदासी हो जाना, तप योग आदि पर ज़ोर देना आम बात थी। गुरु नानक साहिब ने जीव-आत्मा को परमात्मा तक ले जाने के लिए उपरोक्त कोई भी रास्ता अपनाने से रोकते हुए इस बात पर ज़ोर दिया है कि साधना इसी संसार में रहते हुए तथा गृहस्थ धर्म को निभाते हुए की जा सकती है। परमात्मा को तो मनुष्य की घर-परिवार तथा सामाजिक फर्ज़ों की पूर्ति करते हुए की गई भक्ति अथवा साधना ही प्रवान है, इसलिए गुरु नानक साहिब ने बारह माहा तुखारी में जिन बिंबों तथा अलंकारों का वर्णन किया है वे सब गृहस्थियों के इर्द-गिर्द ही घूमते हैं, जैसे सुहागिन, दुहागिन, शृंगार, महल, सेज, कंत आदि। मूल रूप में जीव-आत्मा को परमात्मा की साधना करते हुए पेश किया गया है, जिसके बिना यह जीवन निरर्थक-सा लगता बताया गया है :

. . . हरि बिनु घड़ी न जीवा ॥
. . . हरि बिनु रहणु न जाए (पन्ना ११०७)
. . . हरि बिनु किउ पावै सुख महली ॥
हरि बिनु नीद भूख कहु कैसी . . . ॥
(पन्ना ११०८)

इस तरह बारह माहा के भिन्न-भिन्न पक्षों पर विचार करने से यह मालूम पड़ता है कि श्री गुरु नानक देव जी ने मनुष्य के आध्यात्मिक विकास के लिए बारह माहा को एक माध्यम के तौर पर चुना है। गुरु साहिब सृष्टि को उस परमात्मा का रूप ही समझते हैं तथा यहां पैदा हुई ऋतुएं, महीने व दिनों को उसकी रचना। इस कारण जो वस्तु परमात्मा द्वारा पैदा की गई है, वो सब शुभ है। किसी दिन या महीने को खास, पवित्र या अपवित्र नहीं समझना चाहिए, बल्कि सारे ही वे दिन एवं महीने ठीक हैं जब परमात्मा का नाम याद रहता है।

संदर्भ-सूची :

१. प्रो प्रेम सिंघ बारह माहा तुखारी : एक विशलेषण खोज पत्रिका, गुरु नानक देव विशेष अंक, नवंबर १९६९ पृष्ठ २२४
२. शबदारथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पोथी चौथी पृष्ठ ११०७
३. डॉ वज़ीर सिंघ, बारह माहा तुखारी : सुहजवादी द्रिषटीकोण, आलोचना, जनवरी-दसंबर, १९६९, पृष्ठ ४५८
४. प्रो प्रेम सिंघ, बारह माहा तुखारी : एक विशलेषण खोज पत्रिका, गुरु नानक देव विशेष अंक, नवंबर १९६९ पृष्ठ २३२

अनुवादक : गुरप्रीत सिंघ भोमा



थाल विचि तिंनि वसतु पईओ . . .

*-डॉ मनजीत कौर**

समूची मानवता की रहनुमाई करने वाला पावन ग्रंथ, जिसकी संपादना बाणी के बोहिथ श्री गुरु अरजन देव जी ने की, यह पुनीत कार्य १६०१ ई में प्रारंभ हुआ और १६०४ ई में इस महान कार्य की संपूर्णता हुई।

अनेकता में एकता, धर्म, दर्शन, इतिहास प्राचीन गाथाएं, मानव-मूल्य, युग विशेष की परिस्थितियां सब कुछ जितनी गहरी होंगी उसे उतने ही कीमती और अनमोल रत्न प्राप्त हुए हैं, इस विलक्षण ग्रंथ से। निर्भर करता है खोजी पर कि इस संदर्भ में ये काव्य-पंक्तियां कितनी सटीक हैं :

जिन खोजा तिन पाईआ गहरे पानी पैठ।
मैं बोरन डूबन डरी रही किनारे बैठ।

अत: स्पष्ट है कि इस पावन बाणी की जितनी श्रद्धा, विश्वास, एकाग्रता एवं तन्मयता से जिसने पढ़-सुनकर मनन किया उनकी अवस्था को शब्दों द्वारा बयान नहीं किया जा सकता। डॉ परशुराम चतुर्वेदी के शब्दों में "यह (पावन) ग्रंथ वास्तव में एक अपूर्व शब्दकोश है जिसमें न केवल परमतत्व के आध्यात्मिक स्वरूप की एक अनुपम झांकी मिलती है अपितु इसमें गहरी अनुभूति पर ऐसे अनेक संदेश भी मिलते हैं जिनसे सर्वांगीण मानव-जीवन के निर्माण की प्रेरणा ग्रहण की जा सकती है।" *(श्री गुरु ग्रंथ साहिब परिचय, पृष्ठ २०६)*

१४३० पन्नों की अमूल्य निधि में विविध भाषाओं, विविध धर्मों, विविध संतों-भक्तों की अमृतमयी बाणी के अनुपम हीरे-मोती कितनी गुणवत्ता संजोए हैं, इसको शब्दों द्वारा बयान करना नामुमकिन है। अत: पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने 'मुंदावणी' शीर्षक में इस विलक्षण ग्रंथ की महिमा को बयान करते हुए कितना सुंदर रूपक बांधा है, यथा:

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥
अंम्रित नाम ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥
जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥
एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥ *(पन्ना १४२९)*

अर्थात् इस पावन श्री गुरु ग्रंथ साहिब रूपी (थाल) में सत्य, संतोष एवं वीचार (चिंतन) का संकलन है। इस थाल में ईश्वर-प्रदत्त आत्मिक जीवन देने वाला नाम-रस डाला गया है, जिसका आधार (आश्रय) प्रत्येक जीवन के लिए अनिवार्य है इस आत्मिक खुराक को अगर कोई मनुष्य हमेशा खाता रहे तथा आनंद सहित भोगता रहे तो विषय-विकारों से बचा जा सकता है।

हे भाई! अगर आत्मिक उद्धार की आवश्यकता है तो आत्मिक आनंद देने वाली 'नाम' रूपी यह अनुपम वस्तु त्यागी नहीं जा सकती, अत: इसे सदैव हृदय में संभालकर रखो।

पंचम पातशाह कलयुगी जीवों को दिशा-निर्देश करते हुए वचन करते हैं कि इस नाम

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

के द्वारा प्रभु के चरणों से लगकर घोर अंधकारमयी संसार-समुद्र पार किया जा सकता है और इस तरह परमेश्वर का प्रकाश सर्वत्र दिखाई देने लगता है।

श्री गुरु ग्रंथ कोश में डॉ. भाई वीर सिंघ ने 'मुंदावणी' की बहुत सुंदर व्याख्या की है। साहित्य में एक ऐसी रचना जिसके प्रत्यक्ष अर्थ के अतिरिक्त और अर्थ या सार्थक पद भी बन जाते हैं। धातु है 'मुद' अर्थात् प्रसन्न करना; पंजाब में 'मुंदावणी' जिसका भाव या अर्थ 'छिपा कर' (मूंद कर) रखा हुआ है। पहेली पूछना, जो बात आसानी से समझ न आए। गुरबाणी में कई शब्दों के अर्थ बड़े गूढ़ हैं, जिन्हें रहस्यमयी ढंग से समझाया गया है। अगर इस पहेली के आंतरिक भाव को समझ लिया जाए तो हृदय खुशी से झूम उठता है। श्री गुरु अंगद देव जी का एक शबद इसी भाव को लक्षित करते हुए रचित है, यथा :

अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा ॥
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥
जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥
(पन्ना १३९)

भक्त कबीर जी की बाणी में इस तरह के गूढ़ भाव व्यक्त करने वाले अनेक शबद दर्ज हैं। हिंदी साहित्य में इन्हें 'उल्टबासियां' कहा जाता है। राग आसा में भक्त कबीर जी का एक शबद यहां उल्लेखनीय है :

फीलु रबाबी बलदु पखावज कऊआ ताल बजावै ॥
पहिरि चोलना गदहा नाचै भैसा भगति करावै ॥
राजा राम ककरीआ बरे पकाए ॥
किनै बूझनहारै खाए ॥ (पन्ना ४७७)

उपरोक्त शबद के बाहरी अर्थ-- "हाथी रबाब बजा रहा है, बैल पखावज बजा रहा है, कौआ मंजीरे बजा रहा है।" इस शबद का गूढ़ अर्थ है कि "ईश्वर ने जब कृपा की तो खोटे कर्मों को सुकर्मों में बदल दिया अर्थात् मनुष्य की पशु-वृत्ति सतसंगी स्वभाव में परिवर्तित हो गई।"

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी ने भी ईश्वरीय भोजन के थाल का ज़िक्र किया है, यथा :

थालै विचि तै वसतु पईओ हरि भोजनु अंम्रितु सारु ॥
जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥
इहु भोजनु अलभु है संतहु लभै गुर वीचारि ॥
एह मुदावणी किउ विचहु कढीऐ सदा रखीऐ उरि धारि ॥
एह मुदावणी सतिगुरू पाई गुरसिखा लधी भालि ॥
नानक जिसु बुझाए सु बुझसी हरि पाइआ गुरमुखि घालि ॥ (पन्ना ६४५)

तीसरे पातशाह का पावन फरमान है-- "एक थाल है। उसमें तीन पदार्थ परोसे गए हैं जो ईश्वरीय भोजन है, रूहानी (आत्मिक) खुराक है, जिसे खाने से मन को तृप्ति मिलती है तथा मोक्ष-द्वार की प्राप्ति होती है। ये तीनों पदार्थ गुप्त हैं। गुरु-दर्शाए मार्ग पर चलकर ही इनकी प्राप्ति संभव है। जिस पर परमेश्वर की कृपा होती है उसे यह गूढ़ रहस्य समझ आता है।"

आओ! गुरु-कृपा से इन तीन अनमोल रत्नों पर विचार करने की कोशिश करें :

१. सतु - सच अर्थात् ऊंचा आचरण
२. संतोख - संतोष अर्थात् जो ईश्वर ने दिया है उसी में राज़ी (प्रसन्न) रहना।
३. वीचारो - चिंतन अर्थात् आत्मिक जीवन की समझ नीर-क्षीर विवेकी बुद्धि।

१. सतु : उस पर पिता परमेश्वर का नाम सच है, जैसा कि गुरु नानक पातशाह ने जपु जी साहिब के पहले सलोक में उस प्रभु के सत्य

स्वरूप का वर्णन किया है :

आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ (पन्ना १)

अर्थात् उस परमेश्वर का नाम जगत रचना से पूर्व भी सत्य था, वर्तमान में भी सत्य है तथा आने वाले समय में भी वह सदैव सत्य स्वरूप रहेगा। ऐसे सदीवी सत्य-स्वरूप अथाह गुणों के मालिक प्रभु की सिफत-सलाह करने से जीव का हृदय भी गुणों से भर जाता है तथा विकार हृदय-घर से सहजता से बाहर निकलने शुरू हो जाते हैं। उस परमेश्वर का अमृतमयी नाम हृदय घर में बसना शुरू हो जाता है। यहीं से शुरूआत होती है ऊंचे आचरण के निर्माण की। प्रभु-नाम के उच्चारण मात्र से मुख पवित्र हो जाता है। गुरबाणी का प्रमाण है :

सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥
बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥ (पन्ना ९२२)

पवित्र आचरण की संरचना में गुरु की मध्यस्थता अति आवश्यक है क्योंकि गुरु के बिना यह समझ पैदा ही नहीं हो सकती, यथा :

करि किरपा घरि आइआ गुर कै हेति अपारि ॥
वरु पाइआ सोहागणी केवल एकु मुरारि ॥ (पन्ना ४२८)

क्योंकि जीवन का वास्तविक मंतव्य गुरु द्वारा ही समझ आता है, यथा :

गुर की बाणी गुर ते जाती जि सबदि रते रंगु लाइ ॥
पवितु पावन से जन निरमल हरि कै नामि समाइ ॥ (पन्ना १२४६)

उस सच्चे प्रभु के नाम के साथ जुड़ने से हृदय रूपी कमल हमेशा खिला रहता है, यथा :

सचु बाणी सचु सबदु है जा सचि धरे पिआरु ॥
हरि का नामु मनि वसै हउमै क्रोधु निवारि ॥
मनि निरमल नामु धिआईऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ (पन्ना ३३)

उस परमेश्वर का नाम करोड़ों पाप नाश करने में समर्थ है और गुरु-कृपा से जिन्हें यह अमोलक दात प्राप्त होती है उनका मन और बुद्धि दोनों पवित्र हो जाते हैं, उनकी करनी एवं कथनी निर्मल हो जाती है, यथा :

गुरमती मुख सोहणे हरि राखिआ उरि धारि ॥
ऐथै ओथै सुखु घणा जपि हरि हरि उतरे पारि ॥ (पन्ना १२४६)

२. सतोखु (संतोष) : संतोष को मनीषियों ने अति व्यापक मूल्य के रूप में माना है। संतोष अर्थात् यथा लाभ तथा संतुष्ट रहने की प्रवृत्ति। हमें जो ईश्वर ने दिया है उसी में उसका सहृदय से शुक्राना करना तथा हर हाल में खुश रहना है।

अक्सर इन्सान अपने दुखों से उतना दुखी नहीं जितना दूसरों के सुखों को देखकर परेशानी में हो जाता है। अत: इन्सानी फितरत है कि वह दूसरों का हक छीनने में कसर नहीं छोड़ता। इस संदर्भ में गुरबाणी हमारा मार्गदर्शन करती है, यथा :

हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥ (पन्ना १४१)

गुरु नानक पातशाह ने पराया हक मुसलमान भाई के लिए सूअर तथा हिंदू भाई के लिए गाय का मांस खाने के समान बताया है।

इच्छाओं का विस्तार इन्सान के वास्तविक सुख, चैन, सुकून को छीन लेता है। हमारी इच्छाओं का दायरा जितना विस्तृत होगा उतना ही हम वास्तविक सुख-आनंद से वंचित हो जायेंगे।

पावन गुरबाणी गृहस्थी को यही पावन

उपदेश देती है कि उचित साधनों से मेहनत करके नेक कमाई को मिल-बांटकर खाएं, यही जीव की वास्तविक साधना है, यथा गुरु नानक साहिब जी का पावन संदेश है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

बाहरी चकाचौंध एवं लोक दिखावे में न पड़कर सच्चा एवं संतोषी जीवन-यापन करना ठीक वैसे ही है जैसे कमल जल में निर्लेप भाव से रहता है, यथा :

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ (पन्ना ९३८)

वास्तव में वही योगी है जो माया में रहते हुए भी माया से निर्लिप्त है तथा संतोषी वृत्ति का है :

जोगु न बाहरि मड़ी मसाणी जोगु न ताड़ी लाईऐ ॥
जोगु न देसि दिसंतरि भविऐ जोगु न तीरथि नाईऐ ॥
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥ (पन्ना ७३०)

और यह सब कुछ तभी संभव है जब ईश्वर-कृपा से हमारे हृदय में कोई किनका प्यार का, इस पावन बाणी का बस जाए, यथा पंचम पातशाह की ही बाणी का प्रमाण है :

किनका एक जिस जीअ बसावै ॥
ता की महिमा गनी न आवै ॥ (पन्ना २६२)

३. वीचारो : आत्मिक जीवन की समझ जिसे गुरु-कृपा से प्राप्त हो जाती है वास्तव में उसी का ही लोक-परलोक सफल समझो। विचारहीन व्यक्ति अपने अहंकार के नशे में चूर रहता है। अपनी चतुराइयों तथा अकलमंदी का झूठा अभिमान करता हुआ वो अपना जीवन नर्क बना लेता है, जैसा कि तीसरे पातशाह की बाणी इस संदर्भ में हमारा मार्गदर्शन करती है :

न सबदु बूझै न जाणै बाणी ॥
मनमुखि अंधे दुखि विहाणी ॥
सतिगुरु भेटे ता सुखु पाए ॥
हउमै विचहु ठाकि रहाए ॥ (पन्ना ६६५)

गुरु-शबद को विचार कर जीवन-मनोरथ को समझना तथा सफल जीवन जीने की कला गुरबाणी मुताबिक जीवन बनाने वालों का ही जीवन धन्य है :

गुरमुखि होवै सु गिआनु ततु बीचारै हउमै सबदि जलाए ॥
तनु मनु निरमलु निरमल बाणी साचै रहै समाए ॥ (पन्ना ९४६)

इसी भाव को जपु जी साहिब में गुरु पातशाह स्पष्ट करते हैं कि :

मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥
गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥ (पन्ना २)

वस्तुत: जीवन कर्मकांडी होकर रह गया है। हम विचार ही नहीं करते कि अगर सतिगुरु की एक शिक्षा (उपदेश) पर भी सही मायने में अमल कर लिया जाए तो मनुष्य की बुद्धि में रत्न, जवाहरात और अमूल्य मोती उपज पड़ते हैं। गुरमति के अनुसार रत्न-वैराग्य का जवाहरात "नाम एवं ज्ञान" का तथा माणक "श्रवण एवं मनन" का प्रतीक माने गए हैं। अत: गुरदेव की एक सीख सुनने मात्र से हृदय में परमेश्वर के गुण पैदा हो जाते हैं। हे सतिगुरु! तेरे चरणों में यही विनती है कि समस्त जीवों का दाता हमें भूल न जाए अर्थात् हमारे मन से समस्त जीवों को दातें बख़्शने वाला दातार पिता विस्मृत न

हो जाए।

मनुष्य जीवन में जिज्ञासु वृत्ति का हो जाना आध्यात्मिक सफर का पहला कदम है। जब हृदय किसी विशेष मकसद को लेकर प्रश्न करे कि मैं कौन हूं? मेरा जगत में आने का मकसद क्या है? ईश्वर से तथा जगत से मेरा क्या सम्बंध है? मैं ईश्वर से क्यों बिछुड़ा हूं? मेरे दुखों का कारण क्या हैं? आत्मिक सुख कैसे प्राप्त हो सकता है? फिर इन प्रश्नों के उत्तर की खोज प्रारंभ हो। गुरबाणी से जुड़ाव जिज्ञासु भी बनाता है तथा मार्गदर्शन भी करता है। श्री गुरु नानक देव जी ने जिज्ञासु मन का बहुत उपयोगी प्रश्न उठाकर उसका सुंदर सटीक उत्तर भी सुझाया है, यथा :

किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥
(पन्ना १)

अर्थात् उस अकाल पुरख वाहिगुरु का हृदय में पावन प्रकाश कैसे हो? झूठ, फरेब का पर्दा कैसे हटे? हम सत्यमार्गी कैसे बनें? फिर स्वयं ही सहज जवाब (मार्ग) दर्शाया है कि केवल एक ही मार्ग है, हर हाल में उस मालिक की रज़ा (हुक्म) को खुशी से मान लेना और यह हुक्म प्रत्येक जीव के लिए अति आवश्यक है क्योंकि यह जीव के साथ धुर (दरगाह) से ही चला आ रहा है। उसका हुक्म मीठा करके मानना ही उसकी दरगाह में प्रवान होने की पहली शर्त है। 'आसा की वार' बाणी में इसी भाव की पुष्टि हुई है, यथा :

हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥
खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥ (पन्ना ४७१)

ये जो महल हैं अनमोल हैं, दुनियावी कोई भी कीमत चुका कर प्राप्त नहीं हो सकते, यह तो केवल गुरबाणी विचार की बरकतों से मिल सकता है, यथा :

मोलि कित ही नामु पाईऐ नाही नामु पाईऐ गुर बीचारा ॥ (पन्ना ७५४)

सत, संतोष, विचार के साथ इस पावन ग्रंथ रूपी थाल में आत्मिक जीवन देने वाला नाम डाला गया है, जिसका सहारा प्रत्येक जीव के लिए आवश्यक है। जो कोई भी इस अमृतमयी पावन नाम को हृदय में बसा लेगा, इस अमृतमयी भोजन को खाकर पचा लेगा अर्थात् पढ़-सुनकर अमल करेगा, उसका उद्धार होगा। साथ ही गुरु पातशाह ने स्पष्ट किया है :

एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥ (पन्ना १४२९)

अर्थात् अपरोक्त तीनों वस्तुएं सत, संतोख, वीचार तथा आनंदमयी परमेश्वर का नाम इन शुभ गुणों को हृदय में धारण करना ही समूची मानवता के कल्याण का मार्ग है क्योंकि यह सारा संसार मोह और माया के अंधेरे में केवल ठोकरें खा रहा है।

हमारा आचरण बिलकुल वैसा ही हो जैसे हम दिखाई देते हैं, पर वैसा नहीं है, इसलिए पंचम पातशाह ने सुखमनी साहिब में हिदायत दी है :

करतूति पसू की मानस जाति ॥
लोक पचारा करै दिनु राति ॥
बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥
छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥
बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥
अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥ (पन्ना २६७)

अर्थात् कहलाता है मनुष्य, कर्म पशुओं जैसे। बाहरी सुंदर वेश तथा मन माया की कलुषता से काला। बाहरी प्रयत्नों से अंदर की मैल छिपती नहीं है। यही नहीं, गुरु नानक

साहिब जी की बाणी तो इन्सान को यहां तक झिंझोड़ती है :

जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥
(पन्ना १४०)

अर्थात् अगर कपड़े पर खून का धब्बा लग जाए तो उसे अपवित्र मान लिया जाता है और दूसरों का हक जबरदस्ती छीनने वालों, खून चूसने वालों का हृदय कैसे पवित्र हो सकता है? अर्थात् बाहरी दिखावे के लिए किया गया कोई भी धार्मिक कर्म तब तक सफल नहीं जब तक बंदे की नीयत में खोट है और यह खोटा सिक्का खरा बन सकता है अगर वो गुरु की संगत करे, सतसंग में आकर उस परमेश्वर की बंदगी करे। सतसंग में आकर जीव गुणों का ग्राहक बन जाता है, धीरे-धीरे अवगुण हृदय-स्थान को खाली कर जाते हैं, यथा :

ऊतम संगति ऊतमु होवै ॥
गुण कउ धावै अवगण धोवै ॥ (पन्ना ४१४)

यही नहीं संगत रूपी पारस साधारण जीव को भी खरा सोना बना देता है :

पारसु भेटि कंचनु धातु होई सतसंगति की वडिआई ॥ (पन्ना ५०५)

श्री गुरु रामदास जी ने संगत में आने से पूर्व तथा बाद की दशा का कितना हृदयग्राही भाव अभिव्यक्त किया है :

जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा
सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ॥
हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता
गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥
धंनु धंनु गुरू नानक जन केरा
जितु मिलिऐ चूके सभि सोग संतापे ॥
(पन्ना १६७)

श्री गुरु रामदास जी फरमान करते हैं कि गुरदेव की शरण एवं सेवा में आकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी कीड़े को बादशाही मिल गई हो। यही नहीं, गुरु की संगत पाकर समस्त दुख, दरिद्र, संताप, चिंताएं मिट जाते हैं।

जहां सतसंगत से आत्मिक उन्नति का सबब बनता है वहीं दूसरी ओर सामाजिक एकता, भाईचारा, धर्मनिरपेक्षता को भी बल मिलता है, जहां समस्त जातियों, धर्मों, वर्णों आदि के लोग एक साथ बैठकर गुरु-उपदेश एवं हरि-यश श्रवण करते हैं :

तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥ (पन्ना १५२१)

अर्थात् सारा संसार अंधकारमयी है। ईश्वर के चरणों का ओट-आश्रय लेकर इस भवसागर से पार उतरा जा सकता है। पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि गुरु-चरणों की प्रीति की बदौलत गुरु-दर्शाए मार्ग पर चलते हुए मनुष्य को सर्वत्र में पारब्रह्म परमेश्वर के ही दीदार होते हैं।

वस्तुत: सच से अर्थात् ईश्वर-चरणों की प्रीति से संतोषी जीवन बनता है तथा संतोषी व्यक्ति ही उस प्रभु की रज़ा से हमेशा राज़ी रहता है और विवेक बुद्धि से सही और गलत की पहचान कर सदैव प्रभु-कृपा से सही मार्ग अपनाता है। यही नहीं, वो प्रत्येक प्राप्ति एवं गुण हेतु सहृदय से प्रभु का शुक्राना करता है-- 'वाहिगुरु तेरा शुक्र है! वाहिगुरु तेरा शुक्र है!!' इस तरह उस प्रभु के रंग में रंगा हुआ जीव गुरु-उपदेश की कमाई करके सहजता से इस संसार रूपी भवसागर को पार कर जाता है।



श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अहंकार की निवृत्ति संबंधी आए उपदेश

-डॉ नवरत्न कपूर

अहंकार के पर्यायवाची शब्द :- मनुष्य की सामान्य व्यवहार को बिगाड़ने वाली मानसिक स्थिति को विकार कहा जाता है। ये संख्या में पांच माने गए हैं, यथा : काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। इनका उल्लेख निम्नलिखित पदों में एक साथ हुआ है। एतदर्थ श्री गुरु अरजन देव जी का एक पद उद्धृत है

हउ हउ करत बधे बिकार ॥
मोह लोभ डूबौ संसार ॥
कामि क्रोधि मनु वसि कीआ ॥
सुपनै नामु न हरि लीआ ॥ *(पन्ना ११९२)*

'हउ हउ' वस्तुत: पंजाबी शब्द 'हउमै' का लघु रूप है, जिसका अर्थ है 'अहंकार'। इस शब्द के अन्य अनेक पर्याय हमारे गुरु साहिबान के बहुभाषी ज्ञान के सूचक हैं, यथा :

--आइआ मरणु धुराहु हउमै रोईऐ ॥
गुरमुखि नामु धिआइ असथिरु होईऐ ॥
(पन्ना ३६९)

--करण पलाव करे नही पावै इत उत ढूढत थाकि परे ॥
कामि क्रोधि अहंकारि विआपे कूड़ कुटंब सिउ प्रीति करे ॥ *(पन्ना १०१४)*

--अहंबुधि कउ बिनसना इह धुर की ढाल ॥
बहु जोनी जनमहि मरहि बिखिआ बिकराल ॥
(पन्ना ८०७)

--जगु कऊआ मुखि चुंच गिआनु ॥
अंतरि लोभु झूठु अभिमानु ॥ *(पन्ना ८३२)*

हउ हउ की तरह "हम हम" भी अहंकार का प्रतीकात्मक शब्द है, जिसका उल्लेख निम्नलिखित पद में हुआ है :

--हम कीआ हम करहगे हम मूरख गावार ॥
करणै वाला विसरिआ दूजै भाइ पिआरु ॥
(पन्ना ३९)

अहंकार निवारक गुरु साहिबान के मनोहर वचन : माया के कुप्रभाव के कारण मनुष्य के मन में अहंकार की उत्पत्ति होती है। इसलिए इसकी निंदा करते हुए श्री गुरु रामदास जी फरमान करते हैं :

हउमै माइआ सभ बिखु है
नित जागि तोटा संसारि ॥ *(पन्ना ३००)*

अर्थात् माया के प्रभाव के कारण उत्पन्न हउमै (अहंकार) विष के समान होता है। अभिमान ग्रस्त व्यक्ति सदैव सांसारिक जीवन में हानियां ही सहता है।

किसी व्यक्ति को अपने शौर्य और यौवन का अभिमान होता है और किसी को अपनी ऊंची कुल का। इसके बारे में श्री गुरु अरजन देव जी का कथन है :

हउ सूरा परधानु हउ को नाही मुझहि समानी ॥
जोबनवंत अचार कुलीना मन महि होइ गुमानी ॥
(पन्ना २४२)

यही गुरु साहिब अपने पुत्रों और सुंदर पत्नी के कारण अभिमानग्रस्त प्राणियों को प्रताड़ित करते हुए कहते हैं :

किआ तू रता देखि कै पुत्र कलत्र सीगार ॥
रस भोगहि खुसीआ करहि माणहि रंग अपार ॥

**१६९७ मुहल्ला दीवान मूल चंद (समीप आर्य समाज) पटियाला पंजाब-१४७००१। मो: ५९५२४-२६०८३*

बहुतु करहि फुरमाइसी वरतहि होइ अफार ॥
करता चिति न आवई मनमुख अंध गवार ॥
(पन्ना ४२)

अर्थात् माया के मोह में पड़ा हुआ मनुष्य अपने बेटों को देखकर फूला नहीं समाता और अपनी पत्नी के साथ गृहस्थ जीवन व्यतीत करता है। यदि कोई उसके पास किसी की सहायता के लिए विनती करने आ जाए तो वह अपनी ऐंठ (अफार) दिखाने लगता है। ऐसा अंधा, गंवार तथा मनमानी करने वाला मनुष्य ईश्वर तक को भूल जाता है।

अभिमानी व्यक्ति विकारग्रस्त हो जाता है। वह अहंकार के साथ-साथ लोभ और मोह में ग्रस्त होने के कारण दिन-रात सभी से झगड़ा करता रहता है। वस्तुत: विकारग्रस्त व्यक्ति की सद्बुद्धि का नाश ही मानो ईश्वर ने कर दिया हो। यह मत श्री गुरु रामदास जी का है, यथा :

मनमुख मूलहु भुलाइअनु विचि लबु लोभु अहंकारु ॥
झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करै वीचारु ॥
सुधि मति करतै सभ हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥ *(पन्ना ५४९)*

अहंकार के कारण ही मनुष्य जन्म-मरण के चक्कर में फंसा रहता है। इस संबंध में श्री गुरु नानक देव जी का कथन है :

-- *हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥*
(पन्ना ४६६)

-- *एतु मोहि फिरि जूनी पाहि ॥*
मोहे लागा जम पुरि जाहि ॥ *(पन्ना ३५६)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के इन्हीं मनोहर वचनों से प्रेरित होकर अन्य गुरु साहिबान ने मनुष्य जाति को अहंकार से बचने के लिए इस प्रकार प्रेरित किया था।

हउमै माइआ सभ बिखु है नित जगि तोटा संसारि ॥
लाहा हरि धनु खटिआ गुरमुखि सबदु वीचारि ॥
(पन्ना ३००)

अर्थात् धन-संपत्ति की प्राप्ति के बावजूद अभिमानी व्यक्ति संसार में रहते हुए अर्थात् जीवन भर अपने आप को अभावग्रस्त समझता रहता है। उसे चाहिए कि गुरु साहिबान के मुख से निकले वचनों के अनुसार भगवान के नाम रूपी धन की कमाई करे।

अहंबुधि कउ बिनसना इह धुर की ढाल ॥
बहु जोनी जनमहि मरहि बिखिआ बिकराल ॥
(पन्ना ८०७)

अर्थात् सृष्टि के आरंभ से यही रीति चली आ रही है कि अभिमानी (अहंबुद्धि) का सदा विनाश होता है। इसी भयानक विष के फलस्वरूप मनुष्य अनेक योनियों में जन्म लेता है और मृत्यु की प्राप्ति के कारण आवागमन के जंजाल में फंसा रहता है।

अहंकार से छुटकारा पाने के साधन :- अपने अहं भाव के कारण मनुष्य की जीवन आपदाओं से छुटकारा पाने और विशेषत: आवागमन से मुक्ति पाने का साधन श्री गुरु नानक देव जी तथा उनके परवर्ती गुरु साहिबान ने सद्गुरु की शरणागति, सत्संग और भगवद्-नाम जप बताया है। एतदर्थ उन सभी के मनोहर वचन क्रमश: उद्धृत हैं :

गुर की सेवा सबदु वीचारु ॥
हउमै मारे करणी सारु ॥
जप तप संजम पाठ पुराणु ॥
कहु नानक अपरंपर मानु ॥ *(पन्ना २२३)*

अर्थात् गुरु की सेवा करो और उनके उपदेश पर मनन करो। यही करने से शिष्य अपने अभिमान का अंत करने में सफल हो

सकता है। जप, तप, संयम और पुराणों का पाठ करने से मनुष्य अत्यंत अभिमानी बन जाता है, ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं।

हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥
हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥
हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ॥
हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥
हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥
नानक कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥
(पन्ना ४६६)

अर्थात् अभिमान मनुष्य का स्वाभाविक लक्षण है। वस्तुत: इसी बंधन में फंसा हुआ मनुष्य जन्म-मरण के चक्कर में फंसा रहता है और विभिन्न योनियों में जन्म लेता रहता है। अभिमान की उत्पत्ति का कारण क्या है और इसे संयमित करने का साधन क्या है? वस्तुत: अभिमान के कारण मनुष्य को अपने कुकर्मों का फल भोगना पड़ता है। अभिमान एक भयानक रोग है, इससे छुटकारा पाने के लिए मनुष्य को गुरु की शरण में जाना चाहिए और कृपालु गुरु के शुभ वचनों का अक्षरश: पालन करना चाहिए। गुरु साहिब फरमान करते हैं हे भक्तो! गुरु के वचनों का ध्यानपूर्वक पालन करने से आपके सभी दुख मिट जाएंगे।

तिसना अगनि जलै संसारा ॥
लोभु अभिमानु बहुतु अहंकारा ॥
मरि मरि जनमै पति गवाए अपणी बिरथा जनमु गवावणिआ ॥ *(पन्ना १२०)*

अर्थात् सांसारिक जीव तृष्णा की अग्नि में जलते रहते हैं और इसकी वृद्धि में मनुष्य के लोभ और अभिमान ही कारण होते हैं। इन विकारों के कारण मनुष्य जन्म-मरण के चक्कर में पड़ा रहता है और अपना सम्मान तथा मानव-जीवन व्यर्थ में गंवा देता है। इससे छुटकारा पाने का साधन गुरु साहिब ने इस प्रकार बताया है :

जिना गुरु नही भेटिआ भै की नाही बिंद ॥
आवणु जावणु दुखु घणा कदे न चूकै चिंद ॥
कापड़ जिवै पछोड़ीऐ घड़ी मुहत घड़ीआलु ॥
नानक सचे नाम बिनु सिरहु न चुकै जंजालु ॥
(पन्ना १०८८)

अर्थात् जो लोग गुरु की शरण में नहीं जाते और भगवान से नहीं डरते वे जन्म-मरण में फंसे रहते हैं और सदैव चिन्ताग्रस्त रहते हैं। कैसे? जिस प्रकार कपड़े को धोते समय उसे बार-बार पटड़े पर पटका जाता है और घड़ियाल बार-बार चोटें झेलता है। इसी प्रकार (गुरु साहिब के दिए हुए) नाम-सिमरन के उपदेश के बिना भटका हुआ मनुष्य सदैव सांसारिक जाल (तृष्णा, मोह, अभिमान आदि) से छुटकारा पाने में असमर्थ रहता है :

अंम्रितु हरि हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए अंम्रितु गुरमति पाए राम ॥
हउमै माइआ बिखु है मेरी जिंदुड़ीए हरि अंम्रिति बिखु लहि जाए राम ॥
मनु सुका हरिआ होइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हरि नामु धिआए राम ॥
हरि भाग वडे लिखि पाइआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि समाए राम ॥ *(पन्ना ५३८)*

अर्थात् हे मेरी सुंदर ज़िंदगी (जीवन)! परमात्मा का नाम ही अमृत है और इसकी प्राप्ति गुरु के उपदेश से होती है। अभिमान और माया (धन) का लोभ विष के समान है। गुरु साहिब के प्रभु-नाम स्मरण करने के उपदेश का अक्षरश: पालन करने से यह विष उतर जाता है। जो जीव सदा प्रभु का नाम-सिमरन करता है, उसका शुष्क मन इस प्रकार हरा-भरा

(प्रसन्न) हो जाता है, जिस प्रकार वर्षा के जल के कारण सूखा पेड़ हरा-भरा हो जाता है। वे लोग भाग्यशाली होते हैं जो गुरु साहिब के बताए हुए प्रभु-नाम सिमरन में सदैव लीन रहते हैं।

-- मन महि क्रोधु महा अहंकारा ॥
पूजा करहि बहुतु बिसथारा ॥
करि इसनानु तनि चक्र बणाए ॥
अंतर की मलु कब ही न जाए ॥१॥
एतु संजमि प्रभु किन ही न पाइआ ॥
भगउती मुद्रा मनु मोहिआ माइआ ॥ रहाउ ॥
पाप करहि पंचां के बसि रे ॥
तीरथि नाइ कहहि सभि उतरे ॥
बहुरि कमावहि होइ निसंक ॥
जम पुरि बांधि खरे कालंक ॥ . . .
-- अंतरि कलप भवाईऐ जोनी ॥
अंन ते रहता दुखु देही सहता ॥
हुकमु न बूझै विआपिआ ममता ॥६॥
बिनु सतिगुर किनै न पाई परम गते ॥
पूछहु सगल बेद सिंम्रिते ॥
मनमुख करम करै अजाई ॥
जिउ बालू घर ठउर न ठाई ॥७॥
जिस नो भए गोबिंद दइआला ॥
गुर का बचनु तिनि बाधिओ पाला ॥

(पन्ना १३४८)

अर्थात् जो कथित भक्त स्नान करके तीन बार सूर्य परिक्रमा करता है और दीर्घकाल तक पूजा करता है किंतु स्वभाव से अत्यंत क्रोधी और अभिमानी होता है, उसका हृदय कभी भी शुद्ध नहीं होता। अनेक प्रकार की भाव-भंगिमाओं द्वारा आराधना करता है, तब भी उसका मन नियंत्रित न होने के कारण उसे ईश्वर-प्राप्ति नहीं होती। वह काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अंहकार के वशीभूत रहता है और यह समझता है कि तीर्थ-स्नान करने से उसके पाप दूर हो जाएंगे। फिर भी ऐसा संभव नहीं होता। ऐसे स्वभाव वाला व्यक्ति नि:शंक भाव से खूब धन कमाता है किन्तु कथित भक्ति करने के बावजूद कलंकित होने के कारण जन्म-मरण के चक्कर में फंसा रहता है। अनेक कल्पों तक वह विभिन्न योनियों में जन्म लेता रहता है। अपने कुकर्मों के फल के कारण कई बार गरीब घर में अथवा पशु-योनि में जन्म लेने के कारण भोजन न मिलने के कारण दु:ख सहन करता रहता है। अपने परिवार के प्रति ममता भाव के कारण वह ईश्वरीय आदेश को नहीं समझता। वस्तुत: ऐसे लोगों को सद्गुरु की शरण में जाने से ही दुखों तथा आवागमन से मुक्ति (परम गति) मिल सकती है। ईश्वर से विमुख (मनमुख) व्यक्ति के सभी कार्य (पूजा-भक्ति आदि) निरर्थक होते हैं, जैसे रेत का बना घर अधिक देर तक नहीं टिकता उसी तरह पांच विकारों से ग्रस्त लोगों की हालत होती है। जिस पर ईश्वर सचमुच दयालु होता है, वह सद्गुरु के उपदेश का पालन करके अपने सभी कष्टों से मुक्ति प्राप्त कर लेता है। ☼



गुरसिखा के मुह उजले करे हरि पिआरा

-डॉ सत्येन्द्रपाल सिंघ*

एक सच्चा सिक्ख मानव सभ्यता के एक चमकदार और आकर्षक आभूषण की तरह है, जिससे समाज का गौरव बढ़ता है और जन-जन लाभान्वित होता है। अनुयायी किसी भी धर्म के हों, यदि वे अपने धर्म की शिक्षाओं का निष्ठा से पालन करते हैं तो इससे मानवीय मूल्य संरक्षित होते हैं। एक सिक्ख जब सच्चे सिक्ख की तरह विचरण करता है तो लगता है कि वह उस परमेश्वर की इच्छा और आज्ञा का अनुपालन कर रहा है जो सबका पिता है। सिक्ख अपने गुरु से गुरु की बाणी द्वारा जुड़ा हुआ है और सतिगुरु की बाणी, धुर की बाणी है अर्थात् परमात्मा की प्रेरणा है :

संतहु सुखु होआ सभ थाई ॥
पारब्रहमु पूरन परमेसरु रवि रहिआ सभनी जाई ॥रहाउ॥
धुर की बाणी आई ॥
तिन सगली चिंत मिटाई ॥
दइआल पुरख मिहरवाना ॥
हरि नानक साचु वखाना ॥ (पन्ना ६२८)

जिस बाणी के द्वारा एक सिक्ख गुरु से जुड़ता है वह उस पारब्रह्म से सृजित होकर आयी है जो परम दयालु है, कृपा करने वाला है और सृष्टि में सर्वत्र व्याप्त है अर्थात् सारी सृष्टि जिसकी सत्ता के अधीन है। उसकी कृपा से सर्वत्र सुख व्याप्त हो रहा है और सारी चिंताएं दूर हो गई हैं।

परमात्मा की बाणी परमात्मा से कम महान कैसे हो सकती है? जिस तरह मनुष्य के शब्द उसके व्यक्तित्व को लाख छिपाने के बाद भी किसी न किसी रूप में व्यक्त कर ही देते हैं, उसी तरह परमात्मा की बाणी उसकी महिमा के अनुरूप ही है। मनुष्य भय और दबाववश स्वयं को छिपाने का प्रयत्न करता है और कई बार उसकी वाणी से उसका आंकलन कठिन हो जाता है किंतु परमेश्वर तो भय-मुक्त है और वह सारे द्वेषों से भी मुक्त है, इसलिए परमेश्वर के शब्दों में उसका सच्चा स्वरूप और भाव बार-बार प्रकट होता है और सरलता से दिखायी दे जाता है। उस पारब्रह्म ने शब्दों में स्वयं को प्रकट किया और सतिगुरु ने इन शब्दों के माध्यम से मनुष्य को पारब्रह्म के दर्शन कराने और उससे तादातम्य स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने एक नितांत सीधा और सच्चा मार्ग सामने रखा जिससे मनुष्य को मोक्ष प्राप्त हो जाये। इस धुर की बाणी को अमृत की संज्ञा दी गयी :

गुर अंम्रित भिंनी देहुरी अंम्रितु बुरके राम राजे ॥
जिना गुरबाणी मनि भाईआ अंम्रिति छकि छके ॥
गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके ॥
हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥
(पन्ना ४४९)

परमात्मा अमृत का सागर है और अपने अमृत से सभी को निहाल कर रहा है। जो भी धुर की बाणी से जुड़ गया वही इस अमृत का पान कर सका और आवागमन से मुक्त हो गया

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: ९४१५९-६०५३३

अथवा अमरत्व प्राप्त कर गया। ऐसा मनुष्य हरि से जुड़कर हरि जैसा हो गया और उसमें व हरि में कोई भेद ही नहीं रहा अर्थात् हरि ने उसे अपने अस्तित्व का ही हिस्सा बना लिया। एक गुरसिक्ख के लिए यह बड़े भाग्य की बात है कि सतिगुरु ने उसे गुरबाणी के माध्यम से मुक्ति का एक सहज मार्ग दिखाया और सरल अवसर प्रदान किया जिसे प्राप्त करने के लिए कितने ही जन्म व्यर्थ चले जाते हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु मान मस्तक झुकाना है परंतु इसके साथ-साथ इसमें अंकित धुर की बाणी को पढ़ना, सुनना और समझना भी है। जब एक गुरसिक्ख श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष यह विश्वास करके माथा टेकता है कि इससे उसे मुक्ति का मार्ग प्राप्त होने वाला है और इस चेतना के साथ गुरबाणी से जुड़ता है कि ऐसा करके वह हरि का हिस्सा बनने जा रहा है तो उसमें गुरबाणी के प्रति आदर, समर्पण, प्रेम और एकाग्रता स्वयं ही उत्पन्न हो जाती है और गुरबाणी उसके आचरण में उतर आती है। उस समय एक 'गुरसिक्ख' बदलकर 'गुरमुख' हो जाता है। 'गुरसिक्ख' को गुरमुख बनना चाहिए सारे भ्रम और संशयों का त्याग करके अपने पूरे विश्वास को गुरु और गुरबाणी पर टिका देना चाहिए। ऐसा तब संभव नहीं है जब तक गुरबाणी की महिमा का ज्ञान और उस पर दृढ़ आस्था न उत्पन्न हो जाये। परमात्मा हम पर कृपा करके हमें शबद के रूप में दर्शन दे रहा है और हमसे निकटता स्थापित कर रहा है। उसे ऐसे लोग ही प्रिय हैं जो उसे अपने निकट जानें और उसे देख सकें :

ते गुर के सिख मेरे हरि प्रभि भाए
जिना हरि प्रभु जानिओ मेरा नालि ॥
जंन नानक कउ मति हरि प्रभि दीनी
हरि देख निकटि हदूरि निहाल निहाल निहाल निहाल ॥ (पन्ना ९७८)

उपरोक्त वचन एक गुरमुख के लिए बहुत ही अमूल्य है। इसमें उन सारी भ्रांतियों को तोड़ा गया है कि परमात्मा दूर है, अलभ्य है और दृष्टि से परे है। गुरु साहिब अपने इस वचन में कहते हैं कि परमात्मा को तो ऐसे ही लोग अच्छे लगते हैं जो उसे अपने साथ खड़ा हुआ पाते हैं। हरि ने मनुष्य को ऐसी सामर्थ्य प्रदान की है कि वो हरि के प्रत्यक्ष दर्शन कर सके और अपने जीवन को हर दृष्टि से सार्थक कर सके। एक गुरसिक्ख जब गुरबाणी से जुड़ता है और परमात्मा द्वारा प्रदान की गयी मति स्वयं खुलने लगती है और शबद के भीतर परमात्मा उसे दिखने लगता है। गुरबाणी तो सभी का उद्धार करने वाली है :

सतिगुर बचन तुम्हारे ॥
निरगुण निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥
महा बिखादी दुसट अपवादी ते पुनीत संगारे ॥
जनम भवंते नरकि पड़ंते तिन्ह के कुल उधारे ॥
कोइ न जानै कोइ न मानै से परगटु हरि दुआरे ॥
कवन उपमा देउ कवन वडाई नानक खिनु खिनु वारे ॥ (पन्ना ४०६)

गुरबाणी दुष्टों-दुराचारियों के जीवन को निर्मल बनाने में सक्षम है। गुणों से रहित लोगों का जन्म-जन्म आवागमन के फेर में पड़े हुओं का उद्धार करने में समर्थ है। जिनका कोई भी मान-सम्मान और स्थान नहीं गुरबाणी उन्हें भी परमात्मा के दरबार में उच्च प्रतिष्ठा दिला सकती है। इसकी उपमा ही नहीं की जा सकती; इसके गुणों का वर्णन ही नहीं किया जा सकता; बस, इस पर पल-पल कुर्बान ही हुआ जा सकता है।

जब हम गुरबाणी पर कुर्बान जाने की

बात करते हैं तो स्वयं ही हमारे अंदर गुरबाणी के सत्कार का संस्कार पैदा हो जाता है, गुरबाणी को अंगीकार करने का सलीका आ जाता है। गुरबाणी पढ़ने, गायन करने या सुनने के साथ-साथ कुर्बान जाने का विषय है। एक गुरसिक्ख जब गुरबाणी पर कुर्बान जाता है तो वह सच्चे आनंद से भर उठता है :

तिना अनंदु सदा सुखु है जिना सचु नामु आधारु ॥
गुर सबदी सचु पाइआ दूख निवारणहारु ॥
सदा सदा साचे गुण गावहि साचै नाइ पिआरु ॥
किरपा करि कै आपणी दितोनु भगति भंडारु ॥
(पन्ना ३६)

जिन्होंने मात्र शबद को अपने जीवन का आधार बना लिया है उन्हें सदैव आनंद और सुख प्राप्त होता रहता है। शबद से पारब्रह्म प्राप्त होता है और सारे दुखों का निवारण हो जाता है। शबद-गायन से परमात्मा के प्रति प्रेम उपजता है और उस प्रेम में परमात्मा की कृपा से उसकी भक्ति का तो आनंद ही कुछ और है :

मन रे सदा अनंदु गुण गाइ ॥
सची बाणी हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥१॥रहाउ॥
सची भगती मनु लालु थीआ रता सहजि सुभाइ ॥
गुर सबदी मनु मोहिआ कहणा कछू न जाइ ॥
जिहवा रती सबदि सचै अंम्रितु रसि गुण गाइ ॥
गुरमुखि एहु रंगु पाईऐ जिस नो किरपा करे रजाइ ॥
(पन्ना ३६)

गुरबाणी में रम जाने वाले गुरमुख का रंग ऐसा निराला हो जाता है कि जिह्वा पर शबद उसे अमृत-से लगते हैं, उसका मन परमात्मा की भक्ति से सराबोर हो जाता है और यह भक्ति उसे सहज ही मिल जाती है जो अन्य को नाना प्रकार के प्रयास, हठ, तप, साधना करने के बाद भी दुर्लभ रहती है। उसे सदैव शबद में ही आनंद मिलता है और इस आनंद की अवस्था में ही वह परमात्मा तक जा पहुंचता है। जो शबद से जुड़ता है उस पर परमात्मा स्वयं कृपा करता है।

एक सच्चे सिक्ख का लक्ष्य सांसारिक उपलब्धियां प्राप्त करना एवं भौतिक सुख-साधना अर्जित करना नहीं है जो तृष्णा को बढ़ाने वाले और जीवन को असहज बनाने वाले हैं। ऐसी मनोकामनाएं लेकर शबद-गुरु के समक्ष मस्तक झुकाना अपनी अज्ञानता को प्रकट करना है, अपने जीवन को व्यर्थ गंवा देना है और उस सुअवसर से वंचित रह जाना है जो हमें गुरबाणी से जुड़ने के रूप में मिला है। गुरबाणी को श्वास-श्वास बसाये रखने में ही उद्धार है :

अनदिनु नामु जपहु गुरसिखहु हरि करता सतिगुरु घरी वसाए ॥
सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए ॥
गुरसिखा के मुह उजले करे हरि पिआरा गुर का जैकारु संसारि सभतु कराए ॥
जनु नानकु हरि का दासु है हरि दासन की हरि पैज रखाए ॥
(पन्ना ३०८)

जो लोग दिन-रात उसका स्मरण करते हैं, उसकी बाणी को आदर सहित अंगीकार करते हैं अथवा शबद को परमात्मा के तुल्य सम्मान देते हैं, परमात्मा अपने उन भक्तों की मर्यादा स्वयं सुरक्षित रखता है और उनका मान बढ़ाता है। इस भाव को अपने मन में धारण करने के बाद एक गुरसिक्ख शबद से जुड़ेगा तो परमेश्वर अपनी कृपा से उसे निहाल, निहाल, निहाल कर देगा।



क्षमा श्रृंगार

-डॉ जगीर सिंघ*

आपके प्रति किसी ने अवज्ञा की है। आप उसके प्रति अपने मन में क्रोध लिए बैठे हो। यह क्रोध आपको बहुत हानि पहुंचा सकता है। यह आपके कार्य-व्यवहार पर विपरीत प्रभाव डाल सकता है। यह आपको बीमार भी कर सकता है। यदि आप उसे क्षमा कर देते हो तो आपकी स्थिति एक विजेता वाली बन जाती है। बदला लेने की रुचि नुकसान भी पहुंचा सकती है और बदला लेने के बाद बदला लेने वाला खुद को पराजित हुआ अनुभव कर सकता है। गुरबाणी में इस परिस्थिति के समय विचरण के बारे में एक ढंग बताया हुआ है कि किसी ने आपके साथ ज्यादती की है तो उसकी निंदा न करो, बल्कि अपने अंदर ताको और देखो कि कहीं ज्यादती करने वाला ठीक तो नहीं :

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु ॥
(पन्ना १३७८)

यदि पता चल ही गया कि आपके साथ जान-बूझकर ज्यादती की गई है तो उससे बदला लेकर अपने आप को और नीचा न बनाओ बल्कि उसे क्षमा करके ऊंचे हो जाओ। शेख़ फरीद जी का कथन है :

फरीदा जो तै मारनि मुकीआं तिन्हा न मारे घुंमि ॥
आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिन्हा दे चुंमि ॥
(पन्ना १३७८)

क्षमा करना और क्षमा मांगना दोनों ही गुण समाज में विचरण करने के लिए सुनहरी गुण हैं। क्षमा बहुपक्षीय सामाजिक गुण है। क्षमा करने के लिए सहनशीलता और दया की आवश्यकता है। जो सहनशील नहीं, वो दूसरों की ज्यादतियों को सहन नहीं कर सकता। वो क्षमा भी नहीं कर सकता। जिसमें अहंकार है वो क्षमा मांग भी नहीं सकता। क्षमा का महत्त्व समझाने के लिए गुरबाणी में इसे अनेक रूपों एवं दृष्टातों से समझाया गया है।

गुरबाणी में प्रभु-मिलाप के लिए क्षमा का श्रृंगार करने का विचार अनेक स्थानों पर बताया गया है। शेख़ फरीद जी अन्य गुणों के साथ 'खवण गुण' अर्थात् 'क्षमा गुण' को भी महत्त्वपूर्ण समझते हैं। उनके निम्नलिखित सलोक धार्मिक जीवन में ही नहीं बल्कि सामाजिक जीवन में भी बहुत लाभदायक साबित हो सकते हैं। प्रश्न है :

कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु ॥
कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कंतु ॥
(पन्ना १३८४)

उत्तर है :

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥
ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु ॥
(पन्ना १३८४)

यह वेश केवल कंत (स्वामी, मालिक) को ही नहीं बल्कि प्रत्येक को आनंदित कर सकता है। 'क्षमा श्रृंगार' का वर्णन अन्य पंक्तियों में भी

*अमृत कीर्तन, ४२२ १५-A, चंडीगढ़।

मिलता है जैसे :

मनु मोती जे गहणा होवै पउणु होवै सूत धारी ॥
खिमा सीगारु कामणि तनि पहिरै रावै लाल पिआरी ॥ (पन्ना ३५९)

अर्थात् जीव-स्त्री अपने मन को शुद्ध मोतियों जैसा आभूषण बना ले। मोतियों की माला बनाने के लिए धागे की आवश्यकता पड़ती है। यदि श्वास-श्वास का सिमरन मोतियों की माला बनाने के लिए धागा बने, यदि दुनिया की ज्यादती सहार ले अर्थात् क्षमा के स्वभाव को जीव-स्त्री श्रृंगार बनाकर अपने शरीर पर पहन ले तो वो प्रभु-पति को प्यारी होकर उससे मिल जाती है।

राग सोरठि में श्री गुरु रामदास जी ने भी क्षमा का कपड़ा पहनने का उपदेश दिया है :

हरि हरि सीगारु बनावहु हरि जन हरि कापड़ु पहिरहु खिम का ॥
ऐसा सीगारु मेरे प्रभ भावै हरि लागै पिआरा प्रिम का ॥ (पन्ना ६५०)

अर्थात् हे हरि के लोगो! हरि के नाम का श्रृंगार बनाओ और क्षमा की पोषाक पहनो। ऐसा श्रृंगार प्यारे हरि को अच्छा लगता है। हरि को प्रेम का श्रृंगार प्यारा लगता है।

वार सूही में श्री गुरु अमरदास जी सांसारिक रूप से पहना हुआ सूहा (लाल) वेश उतारने एवं क्षमा का श्रृंगार धारण करने के लिए कहते हैं :

सूहा वेसु सभु उतारि धरे गलि पहिरै खिमा सीगारु ॥ (पन्ना ७८६)

प्रभु को खुश करने के लिए जहां गुरु का ज्ञान रूपी दीया जलाने की आवश्यकता है, वहीं क्षमा का श्रृंगार भी आवश्यक है :

खिमा सीगार करे प्रभ खुसीआ मनि दीपक गुर गिआनु बलईआ ॥ (पन्ना ८३६)

अर्थात् जो जीव-स्त्री क्षमा वाले स्वभाव को अपने आत्मिक जीवन की सजावट बनाती है; जो अपने मन में गुरु से मिली आत्मिक जीवन की समझ का दीया जलाती है, प्रभु-पति उस पर प्रसन्न हो जाता है।

जहां क्षमा का श्रृंगार करने का उपदेश है वहां इस गुण को बहुमूल्य समझते हुए इसे धन की भांति इकट्ठा करने तथा इसकी संभाल पर ज़ोर दिया गया है। श्री गुरु नानक देव जी मारू राग में सन्यासी के लक्षण बताते हुए उच्चारण करते हैं :

सो संनिआसी जो सतिगुर सेवै विचहु आपु गवाए ॥
छादन भोजन की आस न करई अचिंतु मिलै सो पाए ॥
बकै न बोलै खिमा धनु संग्रहै तामसु नामि जलाए ॥
धनु गिरही संनिआसी जोगी जि हरि चरणी चितु लाए ॥ (पन्ना १०१३)

अर्थात् असल सन्यासी वो है जो गुरु की बतायी सेवा करता है और अपने अंदर के अहं-भाव दूर करता है। लोगों से कपड़े-भोजन की आशा नहीं बनाए रखता, स्वाभाविक रूप से जो मिल जाता है वो ले लेता है। वो ऊंचा-नीचा नहीं बोल सकता। वो क्षमा-भाव अर्थात् दूसरों की ज्यादती सहन करने का स्वभाव रूपी धन अपने अंदर एकत्र करता रहता है। प्रभु के नाम की बरकत से वो अपने भीतर से क्रोध को भस्म कर लेता है। जो मनुष्य सदा परमात्मा के चरणों से चित लगाए रखता है वो भाग्यशाली है, चाहे वो गृहस्थी है या योगी या सन्यासी।

राग बसंत में श्री गुरु नानक देव जी वास्तविक सिमरन वाले मनुष्य का लक्षण क्षमा-धन इकट्ठा करने वाला बताते हैं :

राम रवंता जाणीऐ इक माई भोगु करेइ ॥

ता के लखण जाणीअहि खिमा धनु संग्रहेइ ॥
(पन्ना ११७१)

अर्थात् वही मनुष्य परमात्मा का सिमरन करता हुआ समझा जा सकता है जो अविद्या (माया) को खत्म कर दे। जो मनुष्य अविद्या को खत्म करता है उसके रोज़ाना जीने के लक्षण ये प्रतीत होते हैं कि वो क्षमा-भाव अर्थात् दूसरों की ज्यादती को ठंडे स्वभाव से सहारने का आत्मिक धन सदा इकट्ठा करता रहता है।

जब गुरबाणी में धार्मिक कर्मकांडों के वातावरण का ज़िक्र होता है तो वहां भी क्षमा की महत्ता को दृढ़ किया जाता है। श्री गुरु नानक देव जी राग गाउड़ी में कथन करते हैं :

खिमा गही ब्रतु सील संतोखं ॥
रोगु न बिआपै ना जम दोखं ॥
मुकत भए प्रभ रूप न रेखं ॥ (पन्ना २२३)

अर्थात् भला मनुष्य गृहस्थ में रहकर ही दूसरों की ज्यादती को सहने (क्षमा) का स्वभाव बनाता है। मीठा स्वभाव एवं संतोष उसके नित्य के कर्म हैं। ऐसे मनुष्य पर कामादिक रोग ज़ोर नहीं डाल सकते उसे मृत्यु का भय नहीं होता। ऐसे मनुष्य विकारों से रहित हो जाते हैं, क्योंकि वे रूप-रेख-रहित परमात्मा का रूप हो जाते हैं।

राग आसा में श्री गुरु नानक देव जी अपने आप को योगी समझते हुए खिंथा या गोदड़ी की जगह क्षमा गोदड़ी धारण करने की बात करते हैं :

गुर का सबदु मनै महि मुंद्रा खिंथा खिमा हढावउ ॥
जो किछु करै भला करि मानउ सहज जोग निधि पावउ ॥ (पन्ना ३५९)

अर्थात् हे योगी! गुरु का शबद मैंने अपने मन में टिकाया हुआ है, ये मुंदराएं हैं, जो मैंने कानों में नहीं बल्कि मन में पहनी हुई हैं। मैं क्षमा का स्वभाव पक्का कर रहा हूं। यही वो गोदड़ी है जो मैं पहनता हूं अर्थात् मैं क्षमा रूपी पोशाक धारण करता हूं। जो कुछ परमात्मा करता है उसे मैं जीवों की भलाई हेतु मानता हूं। इस प्रकार मेरा मन विचलित होने से बचा रहता है। यह है योग-साधना का खज़ाना जो मैं इकट्ठा कर रहा हूं। क्षमा के बारे में गुरु साहिबान की बाणी में कुछ अन्य पंक्तियां भी विचार करने योग्य हैं :

खोजत खोजत अंम्रितु पीआ ॥
खिमा गही मनु सतगुरि दीआ ॥
खरा खरा आखै सभु कोइ ॥
खरा रतनु जुग चारे होइ ॥ (पन्ना ९३२)

अर्थात् सतिगुरु की समझ की सहायता से जो मनुष्य पुन:-पुन: अपना आप खोजता है और आत्मिक जीवन देने वाला नाम-जल पीता है। वो दूसरों की ज्यादती सहारने का स्वभाव पक्का कर लेता है और अपना मन अपने सतिगुरु में लीन कर लेता है। प्रत्येक जीव उसके शुद्ध-सच्चे जीवन की प्रशंसा करता है। वो सदा के लिए शुद्ध और श्रेष्ठ बन जाता है।

श्री गुरु अरजन देव जी मारू राग में उच्चारण करते हैं :

सहन सील पवन अरु पाणी बसुधा खिमा निभराते ॥
पंच तत मिलि भइओ संजोगा इन महि कवन दुराते ॥ (पन्ना ९९९)

अर्थात् हे भाई! हवा और पानी, ये दोनों तत्व सहार सकने के स्वभाव वाले हैं। धरती तो नि:संदेह क्षमा-रूप ही है। पांच तत्व मिलकर मनुष्य का शरीर बनता है। इन पांचों में से बुरा कौन-सा है ?

सत संतोखि रहहु जन भाई ॥ खिमा गहहु सतिगुर सरणाई ॥
आतमु चीनि परातमु चीनहु गुर संगति इहु निसतारा हे ॥ (पन्ना १०३०)

अर्थात् हे भाई-जनो! सेवा और संतोष में जीवन बिताओ। गुरु की शरण में जाकर दूसरों की ज्यादती को सहन करने का गुण ग्रहण करो। अपने आत्म को पहचान कर दूसरों की आत्मा को भी पहचानो। गुरु की संगत में रहकर यह निर्णय आता है।

श्री गुरु नानक देव जी क्षमा की माला पहनने का उपदेश दे रहे हैं :

सचु वरतु संतोखु तीरथु गिआनु धिआनु इसनानु ॥
दइआ देवता खिमा जपमाली ते माणस परधान ॥
जुगति धोती सुरति चउका तिलकु करणी होइ ॥
भाउ भोजनु नानका विरला त कोई कोइ ॥
(पन्ना १२४५)

जो सच को अपना उपवास संतुष्टता को अपना यात्रा-स्थान ज्ञान एवं सिमरन को स्नान; कृपालता को अपना देवता, क्षमा करने और दूसरों की ज्यादती को सहारने को अपनी माला बनाते हैं, वे पुरुष सबसे अच्छे हैं मगर कम हैं।

भक्त कबीर जी ने कहा है कि जहां क्षमा है वहां परमात्मा खुद निवास करता है :

कबीरा जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु ॥
जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि ॥
(पन्ना १३७२)

अर्थात् जन्म उद्देश्य को पूरा करने का कर्त्तव्य-पालन मात्र वहां हो सकता है जहां यह समझ हो कि हीरा जन्म किस लिए मिला है, मगर जहां झूठ एवं लोभ का ज़ोर हो वहां धर्म की जगह पाप और आत्मिक मृत्यु ही हो सकते हैं। परमात्मा का निवास मात्र उसी हृदय में होता है जहां शांति है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी अपनी बाणी में सन्यास का ज़िक्र करते हुए क्षमा का गुण धारण करने का उपदेश दिया है :

अलप अहार सुलप सी निंद्रा दया छिमा तन प्रीत ॥ *(दसम ग्रंथ)*

गुरु साहिब की सेवा में एक बार सिक्खों ने धर्म संबंधी प्रश्न पूछे जिनके उत्तर में गुरु जी ने वचन किए- "क्षमा करना, ज्यों-ज्यों बड़े होना त्यों-त्यों नम्रता रखना, निर्धन का सत्कार करना, जिसका कोई रखवाला नहीं उसका संरक्षण करना, मरातिब को पाकर गर्व नहीं करना।"

'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' के अनुसार श्री गुरु अमरदास जी का उपदेश जो उन्होंने उस समय गोपी, मोहन, रामू तथा अमरू को दिया, इस प्रकार है :

सहिन शीलता छिमा धरीजै। किस के संग न द्वैष रचीजै।
बाक कठोर अनादर करे। सुनि करि तपहि न रिसि कबि धरे। *(रासि १, अंसु ४०)*

इसी तरह श्री गुरु तेग बहादर साहिब का भाई मक्खण शाह को उपदेश है :

करनी छिमा महां तप जान। छिमा करनि ही दैबो दान।
छिमा सकल तीरथ अशनान। छिमा करति नर की कलिआन ॥
छिमा समान आन गुन नांही। यां ते छिमा धरहु मन मांही।
सद गुन को नहि तियागन कीजै ॥ सदा रिदै महि इसथिर कीजै ॥ *(रासि १, अंसु १८)*

सामूहिक रूप से विचार करने से पता चलता है कि क्षमा किसी भी समाज का महत्त्वपूर्ण गुण है। आधुनिक समाज में यह गुण कम हो रहा है। जिस समाज में क्षमा-गुण नहीं होता उसके बारे में गुरबाणी में कथन है :

खिमा विहूणे खपि गए खूहणि लख असंख ॥
गणत न आवै किउ गणी खपि खपि मुए बिसंख ॥
(पन्ना ९३७)

भट्ट बाणीकार

-सिमरजीत सिंघ*

भट्ट अपने समय के विद्वान थे जो शूरवीर योद्धाओं की विशेष गाथाएं लिखते और महाराजाओं की प्रशंसा में कविताएं लिखकर शाही दरबार में गायन किया करते थे। ये लोग कुल परंपरा से राजाओं तथा कुलीन पुरुषों की प्रशंसा और उनके घरानों की ऐतिहासिक घटनाओं को भट्टाखरी भाषा में लिखकर बहियों की संभाल करते थे। 'भट्ट' शब्द के अर्थ अलग-अलग कोशों में अलग-अलग दिए गए हैं, भाई कान्ह सिंघ नाभा अनुसार 'भट्ट' के अर्थ "प्रशंसा करने वाला कवि", राज्य दरबार में योद्धाओं तथा राजाओं की प्रशंसा करने वाला पंडित आदि किए हैं। पंडित तारा सिंघ नरोतम जी के 'गुरू गिरार्थ कोश' अनुसार "भट्ट पंडित स्वामीपुना प्रशंसा करके आजीविका कमाने वाला बंदी जन" है। ज्ञानी हज़ारा सिंघ 'श्री गुरू ग्रंथ कोश' में लिखते हैं कि यह सम्मानित उपाधि पहले साहिबज़ादों तथा फिर बड़े-बड़े विद्वानों को दी जाती थी। फिर उन महाकवियों का नाम हो गया जो कीर्तन उच्चारण करते थे। ज्ञानी गुरदित्त सिंघ अनुसार "पंजाब के भट्ट साशत ब्राह्मण जाति के थे। ये अपनी उत्पति कोशिश ऋषि से हुई मानते हैं। तथाकथित ऊंची जाति के ब्राह्मणों द्वारा भट्टों को तथाकथित नीची जाति के ब्राह्मण माना जाता है। किसी समय यह लोग सरस्वती नदी के किनारे निवास करते थे, यह नदी पहले पिहोवा, ज़िला करनाल के पास से बहती थी। जो भट्ट नदी के इस ओर निवास करते थे, वो सारसुत तथा जो उस ओर निवास करते थे, वो गौड़ कहलाने लग पड़े। आज भी इनके बहुत-से घराने जींद तथा पिहोवे के बीच के क्षेत्रों में रहते हैं। कुछ घराने यहां से प्रस्थान कर यमुना पार उत्तर प्रदेश की पश्चिमी सीमा के समीप जा बसे हैं।

भट्ट लोग अधिकतर राजपूत जातियों चौहान, पवार, राठौर, तमूर, जादो आदि प्रोहित का कार्य करते थे। प्रोहित का कार्य निभाने के कारण तथाकथित दूसरे ब्राह्मण इनको अपने से नीच समझने लग पड़े थे। भट्ट परिवार राजपूत घरानों में खुशी-गमी के समय पर जाकर उनके घराने में की गई कोई शूरवीरता की वार्त्ता को पीढ़ी-दर-पीढ़ी कवि रूप में सुनाकर सम्बंधित परिवार से बख्शिश प्राप्त करते थे। ये लोग प्रत्येक खुशी-गमी की वार्त्ता को सन्/संवत अनुसार अपनी बहियों में दर्ज करते और पीढ़ी-दर-पीढ़ी संभालकर रखते थे। अब भी इनके द्वारा लिखित बहियों में से कई महत्त्वपूर्ण घटनाओं के बारे में पता चल जाता है।

भट्ट बहियों के आधार पर इनकी वंश परंपरा (बंसावली) भगीरथ नाम के भट्ट से शुरू हुई है। इस भगीरथ की नवम् पीढ़ी में रईया नामक एक भट्ट हुआ, जिसके छः सुपुत्र- भिखा जी, सेखा जी, तोखा जी, गोखा जी, चोखा जी, एवं ठोडा जी थे। इनमें से भिखा जी के तीन सुपुत्र-- मथुरा जी, जालप जी तथा कीरत जी थे। भट्ट बाणीकारों में बल जी, हरिबंस जी कलसहार जी, गयंद (परमानंद) जी, भिखा जी के भतीजे थे। ये सभी गांव-गांव घूमकर आत्म आनंद

*संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।

की खोज करते थे। प्रत्येक स्थानों पर जाकर भी इनकी जिज्ञासा शांत नहीं हुई परंतु जब ये खोजते-खोजते पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की शरण में पहुंचकर गुरु साहिब के दर्शन कर श्री गुरु नानक साहिब जी की विचारधारा को प्रत्यक्ष रूप में फलते-फूलते देखा तो इनकी प्रत्येक आशंका समाप्त हो गई और इन्होंने आत्म आनंद की प्राप्ति की। भट्ट भिखा जी इस अनुभव को बयान करते हुए लिखते हैं :

रहिओ संत हउ टोलि साध बहुतेरे डिठे ॥
संनिआसी तपसीअह मुखहु ए पंडित मिठे ॥
बरसु एकु हउ फिरिओ किनै नहु परचउ लायउ ॥
(पन्ना १३९५)

जब भट्ट साहिबान श्री गुरु अरजन देव जी की शरण में पहुंच गए तो वहां आकर उनकी प्रत्येक आध्यात्मिक जिज्ञासा शांत हो गई। यह सब कुछ तभी संभव हुआ जब उन पर अकाल पुरख की कृपा हुई :

जब लउ नही भाग लिलार उदै तब लउ भ्रमते फिरते बहु धायउ ॥
कलि घोर समुद्र मै बूडत थे कबहू मिटि है नही रे पछुतायउ ॥
ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ अवतारु बनायउ ॥
जपउ जिन्ह अरजुन देव गुरू फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ ॥ (पन्ना १४०९)

एक अनुमान के अनुसार ये भट्ट साहिबान सन् १५८१ ई में भट्ट कलसहार जी की अगुवाई में श्री गुरु अरजन देव जी के गुरगद्दी पर आसीन होते समय श्री गोइंदवाल साहिब आए थे। इस समय दूर-दराज़ से संगत श्री गुरु अरजन देव जी के दर्शनों हेतु पहुंची थी। भट्ट साहिबान ने इस समय पर वहां पहुंचकर सवैय्ये का उच्चारण किया, जिसका प्रमाण भट्ट साहिबान की बाणी में मिलता है। अपनी वंश-परंपरा अनुसार यह भट्ट गुरु साहिबान तथा उनके परिवार और प्रमुख सिक्खों की मुख्य घटनाएं तथा ज़रूरी सूचना अपनी भट्ट बहियों में दर्ज करते रहे हैं। इस सूचना सम्बंधी कुछ घटनाओं के भट्ट साहिबान स्वयं साक्षी होते थे और कुछ घटनाओं की सूचना सुनी-सुनाई होती थी। इसलिए इन बहियों में प्राप्त सम्पूर्ण सूचना को सही नहीं माना जा सकता किंतु जो जानकारी भट्ट साहिबान ने स्वयं देखकर लिखी है वह इतिहास का एक बहुत प्रमुख प्रमाणित स्रोत है। इन बहियों को ढूंढने का कठिन परिश्रम भाई गरजा सिंघ ने किया था, जिसका गुरमुखी में अनुवाद भी किया गया था। जब पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का संपादन करवाकर भाई गुरदास जी से बाणी लिखवाई तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ग्यारह भट्ट बाणीकारों के १२३ सवैय्ये दर्ज किए जो दमदमी बीड़ के पावन स्वरूप में पन्ना १३८९ से १४०९ तक दर्ज मिलते हैं। गुरु साहिब ने भट्ट साहिबान की बाणी दर्ज कर इनको सदैव के लिए अमर कर दिया।

भट्ट कलसहार जी : भट्ट कलसहार जी के पिता जी का नाम भट्ट चोखा जी था जो भट्ट भिखा जी के छोटे भाई थे। भट्ट गयंद जी आपके भाई थे। कई सवैय्यों में आप जी का नाम कलसहार के स्थान पर उपनाम टल्ह अथवा कल्ह भी प्रयोग किया गया है। भट्ट बाणीकारों में भट्ट कलसहार जी ने सबसे अधिक बाणी उच्चारण की है। भट्ट कलसहार जी ने पांच गुरु साहिबान की प्रशंसा (स्तुति) में सवैय्ये उच्चारण किए हैं, श्री गुरु नानक देव जी की महिमा में १० सवैय्यों का उच्चारण किया है जिनमें ५ सवैय्ये चार-चार तुकों वाले तथा अन्य छ:-छ: तुकों वाले थे। भट्ट कलसहार जी श्री गुरु नानक देव जी की महिमा करते हुए बयान करते हैं :

सतजुगि तै माणिओ छलिओ बलि बावन भाइओ ॥
त्रेतै तै माणिओ रामु रघुवंसु कहाइओ ॥
दुआपुरि क्रिसन मुरारि कंसु किरतारथु कीओ ॥
उग्रसैण कउ राजु अभै भगतह जन दीओ ॥
कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरु अंगदु अमरु कहाइओ ॥
स्री गुरू राजु अबिचलु अटलु आदि पुरखि फुरमाइओ ॥ *(पन्ना १३९०)*

श्री गुरु अंगद देव जी की स्तुति में भी भट्ट कलसहार जी ने १० सवैय्यों का उच्चारण किया है। इनमें चार सवैय्ये चार-चार तुकों वाले तथा पांच सवैय्ये छः-छः तुकों वाले और एक सवैय्या सात तुकों वाला है। भट्ट कलसहार जी श्री गुरु अंगद देव जी की महिमा करते हुए बयान करते हैं कि महान गुरु के चरण-स्पर्श प्राप्त करने से जन्म-मृत्यु के प्रत्येक दुख दूर हो जाते हैं :

सु कहु टल गुरु सेवीऐ अहिनिसि सहजि सुभाइ ॥
दरसनि परसिऐ गुरू कै जनम मरण दुखु जाइ ॥
(पन्ना १३९२)

भट्ट कलसहार जी ने श्री गुरु अमरदास जी की स्तुति में ९ सवैय्ये उच्चारण किए हैं। इन सवैय्यों में भट्ट कलसहार जी कहते हैं कि उस चिरंजीव अकाल पुरख का सिमरन करो जिसका एक नाम विश्व में अटल है, जिस नाम ने भक्तों को भव-सागर से पार किया है। उसी नाम में श्री गुरु नानक देव जी आनंद ले रहे हैं। उस नाम द्वारा भाई लहिणा जी स्थिर हो गए जिस कारण प्रत्येक रूहानी शक्तियां उनको प्राप्त हो गईं, उस नाम की बरकत से ऊंची बुद्धि के मालिक श्री गुरु अमरदास जी इस दुनिया में प्रशंसा पा रहे हैं :

कीरति रवि किरणि प्रगटि संसारह साख तरोवर मवलसरा ॥
उतरि दखिणहि पुबि अरु पसमि जै जै कारु जपंथि नरा ॥
हरि नामु रसनि गुरमुखि बरदायउ उलटि गंग पसमि धरीआ ॥
सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥ *(पन्ना १३९२-९३)*

भट्ट कलसहार जी ने श्री गुरु रामदास जी की महिमा में १३ सवैय्यों का उच्चारण किया है। भट्ट कलसहार जी श्री गुरु रामदास जी की स्तुति करते हुए लिखते हैं कि मैं सदैव ही श्री गुरु रामदास जी के निर्मल गुण गायन करता हूं, जिससे मुझे आत्मिक जीवन देने वाला नाम अनुभव प्राप्त हुआ है, भट्ट कलसहार जी बयान करते हैं कि ठाकुर हरिदास जी के सुपुत्र श्री गुरु रामदास जी हृदय रूपी रिक्त सरोवरों को नाम जल द्वारा भरने वाले हैं, श्री गुरु रामदास जी अकाल पुरख के नाम के रसिया, गोबिंद के गुणों के ग्राहक, अकाल पुरख से प्यार करने वाले तथा समद्रिष्टता के सरोवर हैं :

हरि नाम रसिकु गोबिंद गुण गाहकु चाहकु तत समत सरे ॥
कवि कल् ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ *(पन्ना १३९६)*

भट्ट कलसहार जी ने श्री गुरु अरजन देव जी की महिमा में १२ सवैय्यों का उच्चारण किया है। अपने सवैय्यों में श्री गुरु अरजन देव जी के गुण बयान करते हुए कहते हैं कि श्री गुरु अरजन देव जी ने धैर्य को धर्म बनाया है, गुरु जी गुरमति की बहुत गहरी जानकारी रखते हैं, गुरु जी दूसरों के दुख को दूर करने वाले हैं और उदारचित हैं। हरि का नाम और नौ निधियां गुरु जी के भंडार में से कभी भी समाप्त नहीं होते :

ध्रंम धीरु गुरमति गभीरु पर दुख बिसारणु ॥
सबद सारु हरि सम उदारु अहंमेव निवारणु ॥
महा दानि सतिगुर गिआनि मनि चाउ न हुटै ॥
सतिवंतु हरि नामु मंत्रु नव निधि न निखुटै ॥

गुर रामदास तनु सरब मै सहजि चंदोआ ताणिअउ ॥
गुर अरजुन कलचरै तै राज जोग रसु जाणिअउ ॥
(पन्ना १४०७)

भट्ट जालप जी : भट्ट जालप जी को भट्ट जल्ह जी भी कहा जाता है। आप भट्ट भिखा जी के सुपुत्र थे। भट्ट मथुरा जी तथा भट्ट कीरत जी आपके भाई थे। आप जी की बाणी के मुताबिक आपके मन में गुरु-घर और श्री गुरु अमरदास जी का बहुत सम्मान था, जिसकी सीमा निर्धारण करना मुश्किल है। आप जी ने श्री गुरु अरजन देव जी की महिमा में ५ सवैय्ये उच्चारण किए हैं जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। भट्ट जालप जी अपनी बाणी में बताते हैं कि श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु अंगद देव जी की सेवा कर, प्रभु का सिमरन कर जीवन-मुक्त हुए तथा जीवन मुक्त होने का रास्ता भी बताते हैं। गुरु साहिब जी ने शरीर के प्रत्येक अंगों को गुरु मत के साथ जोड़ने का संदेश दिया है। भट्ट जालप जी लिखते हैं कि जिन गुरमुखों ने अकाल पुरख की प्रसन्नता प्राप्त की है उनको किसी प्रकार के दुख परेशान नहीं करते और वह सदैव प्रसन्न रहते हैं :

सफल होत इह दुरलभ देही ॥
जा कउ सतिगुरु मइआ करेही ॥
अगिआन भरमु बिनसै दुख डेरा ॥
जा कै हिरदै बसहि गुर पैरा ॥

भट्ट जालप जी अपनी बाणी में भक्त जैदेव जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त कबीर जी, भक्त प्रहिलाद जी आदि के बारे में प्रभु भक्ति करने का वर्णन करते हुए श्री गुरु रामदास जी की महिमा करते हुए बताते हैं कि इन भक्तों ने अकाल पुरख की कृपा से गुरमति को धारण कर प्रेम भक्ति द्वारा विवेक/बुद्धि की प्राप्ति की है। भक्त कबीर जी ने अकाल पुरख की आराधना कर उसको पा लिया :

नारदु ध्रू प्रहलादु सुदामा पुब भगत हरि के जु गणं ॥
अंबरीकु जयदेव त्रिलोचनु नामा अवरु कबीरु भणं ॥
तिन कौ अवतारु भयउ कलि भिंतरि जसु जगत्र परि छाइयउ ॥
श्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ *(पन्ना १४०५)*

भट्ट कीरत जी : भट्ट कीरत जी भट्ट भिखा जी के सुपुत्र थे। आप जी ने बहुत ही दिलकश अंदाज़ में श्रद्धापूर्ण बाणी उच्चारण की है। आप जी ने श्री गुरु अरजन देव जी की महिमा में ४ तथा श्री गुरु रामदास जी की महिमा में ४ कुल ८ सवैय्ये उच्चारण किए जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। भट्ट कीरत जी के मुताबिक श्री गुरु अमरदास जी की ज्योति परम ज्योति का स्वरूप है, जिसने शबद दीपक द्वारा जीवन को नूरो-नूर कर दिया है। श्री गुरु रामदास जी के व्यक्तित्व की महिमा करते हुए भट्ट कीरत जी कहते हैं कि गुरु ज्योति का चंदन श्री गुरु नानक देव जी के समय से सुगंधी बांटता आ रहा है। हम इस सागर की समझ गुरु संगत में जाकर पा सकते हैं। आप जी छठम् पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साथ श्री अमृतसर के युद्ध में शामिल होकर ज़ालिमों का संहार करते हुए मुरतजां खां के साथ युद्ध करते हुए शहीद हो गए।

भट्ट कीरत जी का पड़पोता भट्ट नरबद सिंघ जी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय उनके साथ नादेड़ गया था। सन् १७०८ ई में जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परलोक गमन से पूर्व श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरतागद्दी सौंपी तो उस समय का वर्णन भट्ट नरबद सिंघ जी ने अपनी भट्ट बही में किया है।

जब सन् १७१० ई में मुगल बादशाह बहादुर शाह ने सिक्खों के कत्लेआम के लिए 'नानक प्रसतां रा हर या बयाबंद बकतल रसानद' का हुक्म जारी किया तो अलग-अलग गांव में से ४० सिंघों को लाहौर के समीप आलोवाल में जीवित ही ज़मीन में गाड़कर शहीद कर दिया गया। इनमें से ३ सिंघ भाई केसो सिंघ जी, भाई हरि सिंघ जी, भाई देसा सिंघ जी भट्ट कीरत जी के पोते थे। भट्ट नरबद सिंघ की चौथी पीढ़ी के भाई सरूप सिंघ तथा भाई सेवा सिंघ ने सिक्ख इतिहास के बहुमूल्य ग्रंथ गुरु की साखियां पर शहीद बिलास की रचना की और सरूप सिंघ की तीसरी पीढ़ी में हुए भाई छज्जू सिंघ ने ग्रंथों को भट्टाखरी से गुरमुखी अक्षरों में किया और इनको ही ज्ञानी गरजा सिंघ जी ने संपादित किया था।

भट्ट भिखा जी : भट्ट भिखा जी भट्ट रईया जी के सुपुत्र थे। आप जी का जन्म सुलतानपुर में हुआ था। पंथ प्रसिद्ध भट्ट कीरत जी, भट्ट मथरा जी तथा भट्ट जालप जी आपके सुपुत्र थे। भट्ट भिखा जी ने २ सवैय्ये तीसरी पातशाही श्री गुरु अमरदास जी की महिमा में उच्चारण किए जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना १३९५-९६ में दर्ज है। आपकी बाणी में अकाल पुरख के सिमरन में रहने को प्रमुखता दी गई है। भट्ट भिखा जी गुरु साहिब के लिए बयान करते हैं कि गुरु जी ज्ञान का भंडार हैं, मन को काबू में करने वाले हैं। ऐसे गुरु श्री गुरु अमरदास जी कलयुग में करता पुरख का स्वरूप हैं। भट्ट भिखा जी कहते हैं कि उन्होंने घूम-घूमकर अधिकतर साधू-संत देखे हैं परंतु वह साधू-संत कहलाने वाले रहित मर्यादा में नहीं रहते, प्रत्येक हरि का नाम छोड़कर धन के पीछे लगे हुए हैं। इसलिए उनसे कुछ प्राप्त नहीं हुआ। केवल श्री गुरु अमरदास जी से मिलकर हमें जीवन-तत्व की समझ आई है :

रहिओ संत हउ टोलि साध बहुतेरे डिठे ॥
संनिआसी तपसीअह मुखहु ए पंडित मिठे ॥
बरसु एकु हउ फिरिओ किनै नहु परचउ लायउ ॥
कहतिअह कहती सुणी रहत को खुसी न आयउ ॥
हरि नामु छोडि दूजै लगे तिन्ह के गुण हउ किआ कहउ ॥
गुरु दयि मिलायउ भिखिआ जिव तू रखहि तिव रहउ ॥ (पन्ना १३९५)

भट्ट सल्ह जी : भट्ट सल्ह जी भट्ट सेखा जी के सुपुत्र थे और भट्ट सेखा जी भट्ट भिखा जी के भाई थे। भट्ट सल्ह जी ने श्री गुरु अमरदास जी की महिमा में एक तथा श्री गुरु रामदास जी की स्तुति में दो कुल तीन सवैय्ये उच्चारण किए जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में श्री गुरु अरजन देव जी ने दर्ज किए हैं।

श्री गुरु अमरदास जी के बारे में भट्ट सल्ह जी बताते हैं कि जिस तरह गुरु साहिब जी ने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी दैतों की जंग अपनी आंखों से देखी हो और फिर गुरु संदेश द्वारा मन में दृढ़ हरि नाम को बसाकर विषय-विकारों के साथ युद्ध किया, अपने पावन हाथों से ईमान की कमान पकड़ी हुई है। प्रभु सिमरन के प्रचंड (तीव्र) बाण चलाकर मन को अजय किया है और पांचों दूतों-- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के टुकड़े-टुकड़े कर दिए :

पहिरि समाधि सनाहु गिआनि है आसणि चड़िअउ ॥
ध्रंम धनखु कर गहिओ भगत सीलह सरि लड़िअउ ॥
भै निरभउ हरि अटलु मनि सबदि गुर नेजा गडिओ ॥
काम क्रोध लोभ मोह अपतु पंच दूत बिखंडिओ ॥
(पन्ना १३९६)

आगे भट्ट सल्ह जी श्री गुरु अमरदास जी की महिमा करते हुए लिखते हैं कि हे भले पुरुषों

की वंश के सिरमौर श्री तेजमान जी के सुयोग्य सुपुत्र श्री गुरु अमरदास जी! आप जी ने निरंतर सच्चे नाम का जाप कर विकारी दल से युद्ध में विजय प्राप्त की और नानक ज्योति के वरदान की बदौलत जगत गुरु बने।

भलउ भूहालु तेजो तना न्रिपति नाथु नानक बरि ॥
गुर अमरदास सचु सल्ह भणि तै दलु जितउ इव जुधु करि ॥ (पन्ना १३९६)

भट्ट सल्ह जी श्री गुरु रामदास जी के लिए अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए कहते हैं कि गुरु जी पांचों दूतों को नष्ट कर गुरु-पदवी के अधिकारी बने हैं। गुरु जी अपने प्रचंड प्रताप द्वारा क्रोध को नष्ट कर तथा लोभ को अपमानित कर पीछा छुड़वा दिया है।

मोहु मलि बिवसि कीअउ कामु गहि केस पछाड़उ ॥
क्रोधु खंडि परचंडि लोभु अपमान सिउ झाड़उ ॥ (पन्ना १४०६)

भट्ट सल्ह जी अनुसार श्री गुरु रामदास जी की शरण में आकर प्रत्येक प्राणी पापों व जमों के भय से मुक्त हो जाता है। श्री गुरु रामदास जी के सम्पूर्ण सिक्ख हुक्म में, आनंद में रहते हुए भवसागर से पार हो जाते हैं :

जनमु कालु कर जोड़ि हुकमु जो होइ सु मंनै ॥
भव सागरु बंधिअउ सिख तारे सुप्रसंनै ॥ (पन्ना १४६६)

भट्ट सल्ह जी स्तुति करते हुए कहते हैं कि श्री गुरु रामदास जी के पावन शीश पर गुरुता का सच्चा छत्र झूल रहा है जो सदैव स्थिर है। आप जी का राज्य अटल है :

सिरि आतपतु सचौ तखतु जोग भोग संजुतु बलि ॥
गुर रामदास सचु सल भणि तू अटलु राजि अभगु दलि ॥ (पन्ना १४०६)

भट्ट सल्ह जी कहते हैं कि श्री गुरु रामदास जी चारों युगों के जीवों का पार उतारा करने वाले हैं :

तू सतिगुरु चहु जुगी आपि आपे परमेसरु ॥
सुरि नर साधिक सिध सिख सेवंत धुरह धुरु ॥ (पन्ना १४०६)

श्री गुरु रामदास जी ने तीनों लोकों में अपनी कला प्रकट की है। आप जनमानस को भवसागर से पार-उतारने वाला रास्ता दिखा रहे हैं। आप नाम-सिमरन का संदेश देकर वृद्ध अवस्था तथा जमकाल के भय से बचाने वाले हैं :

आदि जुगादि अनादि कला धारी त्रिहु लोअह ॥
अगम निगम उधरण जरा जंमिहि आरोअह ॥ (पन्ना १४०६)

भट्ट सल्ह जी कहते हैं कि श्री गुरु अमरदास जी ने श्री गुरु रामदास जी को आत्मिक रूप में परिपक्व कर सदैव के लिए स्थिर रहने वाले सच्चे-सुच्चे गुरुता तख़्त की पदवी पर सुशोभित किया है कि आप ही जीवों को भव-सागर से तारने के लिए अर्थात् पार-उतारा करने वाले जहाज़ रूप हैं। जो जीव गुरु जी की शरण में आता है उनके पापों और जमराज का भय दूर हो जाता है।

गुर अमरदासि थिरु थपिअउ परगामी तारण तरण ॥
अघ अंतक बदै न सल्ह कवि गुर रामदास तेरी सरण ॥ (पन्ना १४०६)

भट्ट भल्ह जी : भट्ट भल्ह जी भट्ट सल्ह जी के भाई तथा भट्ट भिखा जी के भतीजे थे। आपने श्री गुरु अमरदास जी की महिमा में सवैय्या उच्चारण किया जो श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज किया है :

घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न आवै ॥
रवि ससि किरणि उदरु सागर को गंग तरंग अंतु को पावै ॥
रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के कबि जन भल

उनहु जुो गावै ॥
भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥ *(पन्ना १३९६)*

भट्ट भल्ह जी श्री गुरु अमरदास जी की स्तुति करते हुए फरमान करते हैं कि बादलों की बूंदें, पृथ्वी की वनस्पति, बसंत के फूलों की गिनती नहीं की जा सकती। सूर्य और चंद्रमा की किरणें, समुद्रों की गहराई, गंगा नदी की लहरों का कोई अंत नहीं पा सकता। उस अकाल पुरख द्वारा बख़्शे ज्ञान द्वारा तो चाहे कोई मनुष्य इन उपर्युक्त वर्णित वस्तुओं के बारे में बता सकता हो परंतु श्री गुरु अरजन देव जी के गुणों का वर्णन करना हमारी पहुंच से परे है।

भट्ट नल्ह जी : भट्ट नल्ह जी का उपनाम दास भी है क्योंकि इनकी धारणा थी कि चरण-स्पर्श प्राप्त करने से जिज्ञासु का उद्धार हो जाता है, आप जी ने श्री गुरु रामदास जी की महिमा में १६ सवैय्ये उच्चारण किए हैं, जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पन्ना १३९८ से १४०१ तक दर्ज हैं। आपने अपनी बाणी में श्री गोइंदवाल साहिब को बैकुंठ का दर्जा देकर अपनी श्रद्धा के पुष्प भेंट किए हैं। भट्ट नल्ह जी बताते हैं कि जब तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी पूर्ण रूप में श्री गुरु रामदास जी से प्रसन्न हो गए तो उन्होंने श्री गुरु रामदास जी अगमी गुरता के तख़्त की बख़्शिश कर दी :

सभ बिधि मानिउ मनु तब ही भयउ प्रसंनु राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥ (पन्ना १३९९)

भट्ट नल्ह जी कहते हैं कि श्री गुरु अमरदास जी से मिलकर श्री गुरु रामदास जी परसन योग्य हो गए हैं अर्थात् सम्माननीय गुरु बन गए, अकाल पुरख ने उनके सिर पर हाथ रखकर उनको गुरगद्दी की बख़्शिश की है :

रामदासु गुरू हरि सति कीयउ समरथ गुरू सिरि हथु धरउ ॥ *(पन्ना १४००)*

भट्ट नल्ह जी श्री गुरु रामदास जी की महिमा करते हुए बयान करते हैं कि मेरे भीतर प्रभु के नाम का अमृत ग्रहण करने की तीव्र इच्छा थी जो गुरु जी के दर्शन करने पर सम्पूर्ण हो गई। मन शांत हो गया और सम्पूर्ण दुविधाएं समाप्त हो गई हैं :

गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायउ ॥
हुती जु पिआस पिऊस पिवंन की बंछत सिधि कउ बिधि मिलायउ ॥
पूरन भो मन ठउर बसो रस बासन सिउ जु दहं दिसि धायउ ॥
गोबिंद वालु गोबिंद पुरी सम जल्हन तीरि बिपास बनायउ ॥
गयउ दुखु दूरि बरखन को सु गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायउ ॥ *(पन्ना १४००)*

भट्ट गयंद जी : भट्ट भिखा जी के छोटे भाई चोखा जी के सुपुत्र थे। भट्ट गयंद जी, भट्ट बल्ह जी, भट्ट हरिबंस जी तथा भट्ट कलसहार जी आपके भाई थे। इनका वास्तव नाम भट्ट परमानंद जी था, भट्ट गयंद जी ने श्री गुरु अरजन देव जी की महिमा में १३ सवैय्ये उच्चारण किए जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं, इन सवैय्यों में सिक्खों की अपने गुरु के प्रति आस्था को रूपमान किया गया है।

भट्ट गयंद जी श्री गुरु रामदास जी की महिमा करते हुए फरमान करते हैं कि श्री गुरु रामदास जी कृपा के खज़ाने हैं। श्री गुरु रामदास जी सब पर कृपा करने वाले हैं, इनकी विश्व के प्रत्येक जीवों पर मेहर (कृपा) है :

सिरी गुरू साहिबु सभ ऊपरि ॥
करी क्रिपा सतजुगि जिनि ध्रू परि ॥
श्री प्रहलाद भगत उधरीअं ॥
हस्त कमल माथे पर धरीअं ॥ (पन्ना १४०१)

भट्ट गयंद जी अपनी बाणी में बताते हैं कि इस संसार-सागर को तारने वाले जहाज़ भी गुरु

खुद ही हैं तथा मलाह भी खुद ही हैं। गुरु की कृपा से ही प्रभु तथा मुक्ति प्राप्त होती है।

गुरु जहाजु खेवटु गुरू गुर बिनु तरिआ न कोइ ॥
गुर प्रसादि प्रभु पाईऐ गुर बिनु मुकति न होइ ॥
(पन्ना १४०१)

भट्ट गयंद जी श्री गुरु रामदास जी में से प्रत्यक्ष परमात्मा के दर्शन करते हुए कहते हैं कि जो परमात्मा दुनिया के समस्त जीवों का मालिक है, सबको पालने वाला है, वो प्रत्यक्ष रूप में श्री गुरु रामदास जी के शरीर में प्रकट है, श्री गुरु रामदास जी जो सारे संसार को तार रहे हैं की आत्मिक अवस्था अकथनीय है :

परतखि देह पारब्रहमु सुआमी आदि रूपि पोखण भरणं ॥
सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की श्री रामदासु तारण तरणं ॥ . .
रघुबंसि तिलकु सुंदरु दसरथ घरि मुनि बंछहि जा की सरणं ॥
सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की श्री रामदासु तारण तरणं ॥ (पन्ना १४०१-०२)

भट्ट गयंद जी श्री गुरु रामदास जी को निरंकार रूप में देखते हुए बयान करते हैं कि हे गुरु! तू धन्य है, जो अपने सेवकों के हृदय में हर पल रहता है। आप ही चौरासी लाख किस्म के जीव पैदा करके उनका लालन-पालन करने वाले हो :

सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ॥
निरंकारु प्रभु सदा सलामति कहि न सकै कोऊ तू कद का ॥
ब्रहमा बिसनु सिरे तै अगनत तिन कउ मोहु भया मन मद का ॥
चवरासीह लख जोनि उपाई रिजकु दीआ सभ हू कउ तद का ॥ (पन्ना १४०३)

भट्ट मथुरा जी : भट्ट मथुरा जी भट्ट भिखा जी के सुपुत्र थे तथा भट्ट कीरत व भट्ट जालप जी आप जी के भाई थे। आप जी ने श्री गुरु रामदास जी की स्तुति में ७ सवैय्ये तथा श्री गुरु अरजन देव जी की स्तुति में ७ सवैय्ये कुल १४ सवैय्ये उच्चारण किए हैं जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। इन सवैय्यों में उन्होंने श्री गुरु रामदास जी को धर्म धुजा तथा मान सरोवर कहा है, जिसके किनारे गुरमुख हंस कलोलें (क्रीड़ाएं) करते हैं। श्री गुरु अरजन देव जी एक जहाज़ है जिसमें बैठकर जिज्ञासु का पार-उतारा हो जाता है। परमेश्वर वाहिगुरु ही श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी तथा श्री गुरु अरजन देव जी में प्रकाशमान है। भट्ट मथुरा जी श्री गुरु अरजन देव जी तथा पारब्रह्म में कोई विभिन्नता नहीं है तथा उनको 'परतख हरि' के रूप में स्वीकृत करते हैं :

भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख हरि ॥ (पन्ना १४०९)

भट्ट मथुरा जी कहते हैं कि गुरु जी दिन-रात नाम में विलीन रहते हैं। उनसे ही हमको अपने जीवन के लिए कुछ मांगना चाहिए। दुनिया का कोई भी प्रसिद्ध पुरुष गुरु जी का भेद नहीं जान सका। भट्ट मथुरा जी हमको बताते हैं कि इस दुनिया के घोर अंधकार में से हमें गुरु के अतिरिक्त कोई नहीं बचा सकता। सिर्फ जो प्राणी नाम जपता है वो दोबारा जन्म-मृत्यु के चक्कर में नहीं पड़ता। भट्ट मथुरा जी श्री गुरु अरजन देव जी की स्तुति करते हुए फरमाते हैं कि श्री गुरु अरजन साहिब ज्योति रूप में खंड-ब्रह्मांडों में विचरण कर रहे हैं तथा गुरु साहिब व परमात्मा में कोई अंतर नहीं।

भट्ट मथुरा जी श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय रूहीला नामक स्थान पर जंग में चंदु के पुत्र कर्म चंद तथा भगवान दास घेरड़ की

ज़ालिम फौज में जूझते हुए शहादत प्राप्त कर गए। गुरु बिलास पातशाही छेवीं के अनुसार भट्ट भिखा का सुपुत्र भट्ट मथुरा जी सेनापति बैरम ख़ान से बहुत बहादुरी से लड़ा।

भट्ट बल्ह जी : भट्ट बल्ह जी भट्ट भिखा जी के भाई थे तथा भट्ट सेखा जी के सुपुत्र थे। भट्ट बल्ह जी ने श्री गुरु रामदास जी की स्तुति में पांच सवैय्ये उच्चारण किए जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज हैं। ये सतिगुरु का गौरव बताते हुए कहते हैं कि जो मनुष्य नाम-सिमरन करते हैं, उनका काम, क्रोध मिट जाता है तथा दुख, दरिद्रता भी दूर हो जाती है। गुरु परमपद प्राप्त पुरुष हैं, जिनके दर्शनों से अज्ञानता की तप्श मिट जाती है तथा प्रभु की प्राप्ति हो जाती है :

मनसा करि सिमरंत तुझै नर कामु क्रोधु मिटिअउ जु तिणं ॥
बाचा करि सिमरंत तुझै तिन्ह दुखु दरिद्रु मिटयउ जु खिणं ॥
करम करि तुअ दरस परस पारस सर बल्ह भट जसु गाइयउ ॥
स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ (पन्ना १४०५)

भट्ट हरिबंस जी : भट्ट हरिबंस जी भट्ट भिखा जी के भाई तथा भट्ट गोखा जी के सुपुत्र थे। भट्ट हरिबंस जी ने श्री गुरु अरजन देव जी की स्तुति करते हुए २ सवैय्ये उच्चारण किए हैं जो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पन्ना १४०९ पर दर्ज हैं। इन्होंने अपनी विलक्षण शैली में गुरु साहिबान की महत्ता का वर्णन किया है। यह अपनी बाणी में बताते हैं कि ज्योति बुझने वाली नहीं है, यह गंगा के प्रवाह की तरह सदैव गतिशील रहती है। इसमें किया स्नान मन को पवित्र करता है। गुरु जी के सिर पर ईश्वरीय चंवर झुल रहा है। यह छत्र गुरु जी को परमात्मा ने बख़्शिश किया है। भट्ट हरिबंस जी कहते हैं कि श्री गुरु रामदास जी परमेश्वर के हुक्म से सचखंड जा विराजमान हुए हैं तथा सचखंड पिआना करते समय आप जी धरती का छत्र, गुरिआई सिंहासन श्री गुरु अरजन देव जी को बख़्शकर अपनी ज्योति उनमें स्थापित कर गए :

अजै चवरु सिरि ढुलै नामु अंम्रितु मुखि लीअउ ॥
गुर अरजुन सिरि छत्रु आपि परमेसरि दीअउ ॥
(पन्ना १४०९)

भट्ट हरिबंस जी बताते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी और आगे वो श्री गूरु अमरदास जी तथा श्री गुरु रामदास जी अकाल पुरख में अभेद हो गए हैं जिस कारण इनकी शोभा विश्व के हर कोने में हो रही है :

मिलि नानक अंगद अमर गुर गुरु रामदासु हरि पहि गयउ ॥
हरिबंस जगति जसु संचरउ सु कवणु कहै स्री गुरु मुयउ ॥ (पन्ना १४०९)

भट्ट हरिबंस जी अपनी बाणी में स्पष्ट करते हैं श्री गुरु रामदास जी ज्योति जोति समाए तो अकाल पुरख ने श्री गुरु अरजन देव जी को तख़्त पर सुशोभित किया। पापी भाग खड़े हुए। श्री गुरु रामदास जी ने श्री गुरु अरजन देव जी को धरती का छत्र तथा ऊंचा सिंहासन अकाल पुरख की बख़्शिश सदका दे दिया।

देव पुरी महि गयउ आपि परमेस्वर भायउ ॥
हरि सिंघासणु दीअउ सिरी गुरु तह बैठायउ ॥
रहसु कीअउ सुर देव तोहि जसु जय जय जंपहि ॥
असुर गए ते भागि पाप तिन्ह भीतरि कंपहि ॥
काटे सु पाप तिन्ह नरहु के गुरु रामदासु जिन्ह पाइयउ ॥
छत्रु सिंघासनु पिरथमी गुर अरजुन कउ दे आइअउ ॥ (पन्ना १४०८) ❁

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के प्रति सत्कार

-डॉ. सरूप सिंघ अलग*

मानव मात्र के सर्वपक्षीय कल्याण हेतु अकाल पुरख परमात्मा की अपार कृपा से पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के महानतम संपादन के प्रयत्नों ने इस संसार के चिंतित लोगों को युग-युगांतर तक अटल रहने वाले और शबद-गुरु के रूप में सन् १६०४ ई को लासानी 'ग्रंथ साहिब' का ईश्वरीय वरदान दिया, जिसे प्रारंभ में 'आदि ग्रंथ साहिब' का नाम दिया गया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में ६ सिक्ख गुरु साहिबान के अतिरिक्त भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों, धर्मों, संप्रदायों, भाषाओं और संस्थानों से सम्बंधित परमात्मा की स्तुति में लीन १५ भक्तों, ११ भट्टों और गुरु-घर के ४ निकट-प्रेमियों की बाणी भी शोभायमान है, जो ३१ रागों की एक क्रमबद्ध और ५८७२ शबदों के आकार रूप में, "धुर की बाणी" के रूप में संसार में विद्यमान हुई। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का भाईचारक और आध्यात्मिक फलसफा, किसी एक फिर्के, जाति, बिरादरी या भाईचारे की मलकियत नहीं। श्री गुरु अरजन देव जी के बताए अनुसार श्री गुरु ग्रंथ साहिब नामक थाल में पड़ी चार अमूल्य वस्तुएं सत्य, संतोष, विचार और नाम ऐसी वस्तुएं हैं जो मानवता के प्रकाश का आधार हैं, इसलिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सर्वव्यापकता, सर्वांगता, सरप्रस्ती, मज़हबो-मिलल्त और देश-काल की सारी सीमाएं लांघकर हर समय के सर्व प्रकार के जीवों के लिए सदा-सर्वदा के लिए अगुवाई करती हैं। ऐसा संरक्षण हमारे सौभाग्य का परिचारक है। किसी को नाम लेकर आवाज़ दो तो वह आगे से ज़रूर बोलता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भी अकाल पुरख के नामों, गुणों प्रशंसा और शक्तियों का भिन्न-भिन्न प्रकार से वर्णन किया गया है। यदि हम एकाग्र मन होकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ करें और बाणी में दिए उपदेशों पर चलें तो यह भी ईश्वर का नाम लेकर पुकारने वाली ही बात है। हमारा निश्चय सच्चे दिल से पुकारने का होना चाहिए, फिर वह मधुरभाषी सज्जन हमारी आवाज़ सुनकर अवश्य बोलेगा, हमारे साथ बातें करेगा और अपना सहारा देकर हमें अपना आशीर्वाद प्रदान करेगा। बस हमें अपने अंत:करण का निरीक्षण करके यही देखना है कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब से जुड़ते समय क्या हम उपरोक्त कही श्रद्धापूर्ण, सत्कारित-भावना वाली अवस्था में होते हैं? बहुत अवस्थाओं में दुख से यही कहना पड़ता है कि नहीं, क्योंकि सांसारिक पदार्थों की लालसा में हमारी सारी शक्तियों, विकारों और रुचियों को ऐसे लगता है जैसे भगवान से बेमुख कर दिया हो, जिसके परिणामस्वरूप धर्म और ईश्वर के प्रति हमारा निश्चय बहुत कम हो गया है और जो थोड़ा बहुत है भी वो भी बस, व्यापारिक ढंग का ही है। उसमें भी अंदर ही अंदर प्राय: यही लालसा काम

*४९३, अरबन अस्टेट-२, फोकल प्वाइंट, लुधियाना-१४१०१०

कर रही होती है कि गुरु का दरवाज़ा खटखटा कर नाम का दान मांगने के स्थान पर नाशवान परंतु लोभायमान माया के सुखों की प्राप्ति के लिए ही प्रार्थना की जाए। यदि लगन और निष्ठा के अनुसार इस बात को अपने ऊपर घटित करके देखें तो हम देखेंगे कि युग-युगांतर तक अटल श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बारे में भी (कुछेक निष्ठावान सिक्खों को छोड़कर) हमारा स्नेह, प्यार, सत्कार बिलकुल रस्मी और व्यापारिक किस्म का ही बनकर रह गया है। प्राय: अरदास में प्रार्थना की भावना कम होती है और बार-बार यही कहा जाता है कि सच्चे पातशाह जी, हमारा काम निर्विघ्नता सहित समाप्त हो जाये, यह बात पूरी हो जाये, बीमार स्वस्थ हो जाये आदि। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को नांदेड़ में १७०८ ई. में गुरु-पद सौंपते हुए यह भी फरमाया है कि मेरी आत्मा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में और शरीर पंथ में विलीन हो गया है, इसलिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी सन्मुख होते समय यह सोचना चाहिए कि हम महानतम शक्ति के समक्ष खड़े हैं। छोटे-से हाकिम के सामने खड़ा होना हो तो हम हाथ जोड़ लेते हैं, हमें नम्रता के, सम्मान करने के सारे ढंग आ जाते हैं, खुशामदें करनी आ जाती हैं परंतु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जैसे ईश्वरीय प्रकाश के सत्कार में कई बार हम अनजान और गैर-जिम्मेदार लगने लग जाते हैं चार सौ साल से युगों-युग अटल गुरु की शरण में होने के बावजूद भी हमें गुरु को सत्कार देने का ढंग नहीं आया। हम कुछ धन गुरु के आगे अर्पित करके समझते हैं कि हमने उसे खुश कर दिया है यह हमारी गलतफ़हमी है।

यदि हमने सचमुच वाहिगुरु की शरण में आकर आत्मिक आनंद प्राप्त करना है तो हमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब की भावना से ही जुड़ना पड़ेगा, व्यर्थ के वहमों, रीति-रिवाज़ों से कोई प्राप्ति नहीं हो सकती। इस प्रकार या तो हमारी नास्तिकता बढ़ती है या अहंकार और यह अहंकार ही हमें मूल स्रोत का ज्ञान नहीं होने देता। अपने अहंकार को मारकर गुरु की शरण में जाना आवश्यक है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब का हर शबद हमारे जीवन में से काम, क्रोध, अहंकार, लोभ और मोह जैसे दुष्ट प्रभावों को नष्ट करके नाम का जाप, सेवा, संतोष आदि की ओर आकर्षित करता है। इस सब कुछ के लिए हमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब के आत्मिक अनुभव के साथ एकरस होना पड़ेगा, नेक कमाई के लिए संघर्ष करना पड़ेगा, बांटकर खाना, दूसरे की सहायता करना, मानवता को भगवान का अपना स्वरूप समझकर उसकी सेवा के लिए सदैव तत्पर रहना पड़ेगा। सरोवर के किनारे पर खड़े होकर परछाई के माध्यम से रस्मी स्नान करने के स्थान पर सरोवर में उतरने से ही बात बनेगी। इसलिए यदि हम परमात्मा के दरबार में पहुंचना चाहते हैं तो हमें गुरबाणी के पाठ और विचार के अनुसार व्यवहार और प्यार करना सीखना होगा। श्री गुरु अरजन साहिब का फरमान है :

हउ वारिआ अपणे गुरू कउ जिनि मेरा हरि सजणु मेलिआ सैणी ॥ *(पन्ना ६५२)*

हमें बाणी मन से पढ़नी चाहिए। एक श्रद्धालु भक्त की यही रुचि होती है। इस भावना वाले मनुष्य से गुरु दूर नहीं हो सकता, बल्कि वह तो उसके अंग-संग रहता है, चतुराई से उसे कोई प्राप्त नहीं कर सका,

गुरबाणी के अर्थ अपनी सोच और आवश्यकता के अनुसार निकालने उचित नहीं हैं। परमात्मा ने तो हमारा वैराग्य देखना है, जो अंतर-मन की तरंग है। दुनिया हमारे बाहरी प्रताप को देखती है, जिसका धर्म से कोई सरोकार नहीं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की रचना एक योजनाबद्ध कार्यक्रम का सार्थक रूप है। शबद-गुरु सारी मानवता का गुरु और पथ-प्रदर्शन है। इसके सृजन में ३६ महापुरुषों का योगदान है जो भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों, धर्मों संप्रदायों, भाषाओं, और समाजों का प्रतिनिधित्व करते हैं। श्री गुरु नानक देव जी की इच्छा थी कि मानवता को 'शबद-गुरु' की छत्रछाया और संपर्क में लाया जाये क्योंकि शबद-गुरु ही 'पूर्ण गुरु' है। 'धुर की बाणी' वाला शबद वास्तव में गुरु का आत्मिक स्वरूप है। यह शबद-गुरु ही हमारा शिक्षा-दाता है, जिसमें गुरु की हस्ती विराजमान है। श्री गुरु नानक साहिब ने भी शबद को ही अपना गुरु बताया है, जो प्रभु की हस्ती की तर्ज़मानी में साक्षात विराजमान है। शबद के रूप में ही श्री गुरु नानक साहिब के लिए गुरु की भूमिका स्वयं अकाल पुरख ने निभाई तभी उनमें और अकाल पुरख में किसी प्रकार का भी भेद-भाव नहीं है। गुरु साहिब का यही प्रकाश दस गुरु साहिबान में प्रकाशमान होता हुआ अंत में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विलीन हो गया, इसलिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब वाहिगुरु का शाब्दिक स्वरूप हैं। ऐसे परमात्मा रूपी गुरु की संगत करना हमारा पल-पल का कर्म अथवा धर्म है।



उपहार ऐसा जो जीवन भर याद रहे

यह बात हर एक आम व खास व्यक्ति के मन को कचोटती रहती है कि वो अपने मित्रों, सम्बंधियों को यदि उपहार दे तो क्या दे? किसी के जन्म-दिन आदि या किसी विशेष दिवस पर किसी को कुछ भेंट किया जाए तो ऐसा उपहार हो जिसे स्वीकार करने वाला जिंदगी भर याद रखे। इसके लिए अब ज्यादा सोचने और चिंता की जरूरत नहीं है। जीवन भर का उपहार है 'गुरमति ज्ञान'। उपहार भी ऐसा कि जब हर माह मित्र आदि के घर पर जाकर डाकिया 'गुरमति ज्ञान' की प्रति थमाएगा तो आपका मित्र हर माह आपका शुक्रिया करता नहीं थकेगा। आप अपने मित्र या किसी सम्बंधी को केवल १००/- रुपये में उपहारस्वरूप 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बना दीजिए और हासिल कीजिए अपने मित्र की जीवन भर की खुशियां। यह सौदा बेहद सस्ता एवं लाभकारी रहेगा। आज ही मनीआर्डर या बैंकड्राफ्ट के जरिए चंदा भेजकर अपने मित्र या सम्बंधी को 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बनाकर उसे इस बहुमूल्य 'उपहार' से निवाजें।

-संपादक।

गुरबाणी में दर्ज सृष्टि-रचना का विधान

-डॉ. रछपाल सिंघ*

गुरबाणी सर्वकालीन सदीवी सच है। यह 'धुर की बाणी' है अथवा अकाल पुरख जी का 'अगंमी हुक्म' है। गुरबाणी में मानव जीवन से संबंधित सभी प्रकार की सामग्री उपलब्ध है। गुरबाणी आधुनिक वैज्ञानिक युग अथवा खोजों का आधार है। इसमें बहुत-सी सामग्री वैज्ञानिक पक्ष से संबंधित है। वैज्ञानिक खोज इस समय चर्म सीमा पर पहुंच चुकी है परंतु सृष्टि का आरंभ कब हुआ, के बारे में स्पष्ट नहीं है। विज्ञान की दृष्टि से हर वस्तु परिवर्तनशील है, ब्रह्मांड भी परिवर्तनशील है। यह लगातार फैल रहा है। विज्ञान के अनुसार आज से लगभग १८ अरब वर्ष पहले गैसों का एक बहुत बड़ा धमाका हुआ, जिस को वैज्ञानिओं ने "बिग-बैग" के सिद्धांत का नाम दिया है। इस धमाके से पूरे ब्रह्मांड में धुंद ही धुंद हो गई। बहुत बड़ा धुंधूकार फैल गया। इससे असीम ऊर्जा पदार्थों में प्रवर्तित हो गई। यही पदार्थ जब ठंडे हुए तब सुंगड़कर असंख्य तारे और गृह बन गए। धरती जैसे गृह में हवा बन गई। ज़ोरदार बरसाते हुईं और कई दरिआ अस्तित्व में आ गए। परंतु इससे पहले क्या था यह कोई नहीं बता पा रहा। श्री गुरु नानक देव जी का इसके बारे में स्पष्ट फरमान है :

कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥
कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥ (पन्ना ४)

गुरबाणी के अनुसार सृष्टि की रचना से पहले आकाश, धरती, सूर्य, चांद, हवा, पानी, रात, दिन इत्यादि कुछ भी नहीं था। केवल धुंधूकार था। अकाल पुरख सुन्न समाधि में लीन थे।

अरबद नरबद धुंधूकारा ॥
धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥
ना दिनु रैनि न चंदु न सूरजु सुंन समाधि लगाइदा ॥ (पन्ना १०३५)

श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है कि अकाल पुरख के हुक्म से सारा पसारा हुआ है और इसी से ही लाखों दरिआ बने :

कीता पसाउ एको कवाउ ॥
तिस ते होए लख दरीआउ ॥ (पन्ना ३)

आज के विज्ञान की धारणा है ब्रह्मांड में बहुत-सी धरती हैं, कई आकाश हैं, कई सूर्य हैं और कई चंद्रमा हैं। श्री गुरु नानक देव जी इस के बारे में लगभग कई सदियां पहले ही फरमान कर गए थे :

केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥
केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥ (पन्ना ७)

गुरबाणी के अनुसार तारा मंडिलों और बृह्मांडों का भी कोई अंत नहीं। ये बेअंत हैं :

तिथै खंड मंडल वरभंड ॥
जे को कथै त अंत न अंत ॥
तिथै लोअ लोअ आकार ॥

*पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रिय खोज केंद्र, गुरदासपुर (पंजाब)- १४३५२१

जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥
वेखै विगसै करि वीचारु ॥
नानक कथना करड़ा सारु ॥ (पन्ना ८)

जब प्रभु ने सृष्टि रचना करनी चाही तो उनके हुक्म से सृष्टि रचना हो गई। प्रभु का हुक्म आदि काल से निरंतर चल रहा है।

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥ (पन्ना १)

इसी हुक्म से ही कई प्रकार की धरतियां, पर्वत, सूर्य, चांद और बृह्मांड अस्तित्व में आ गए।

धरती, सूर्य, चांद, गृह, हवा, पानी अथवा समूची वनस्पति केवल एक अटल विधान (हुक्म) में ही बंधी हुई है। धरती पर विभिन्न प्रकार की ऋतुएं, दिन, रात आदि सभी अनुशासन में हैं। धरती एक ऐसा स्थान है जिस पर विभिन्न प्रकार के जीव निवास करते हैं। गुरबाणी कथनानुसार अनुसार :

राती रुती थिती वार ॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥
तिन के नाम अनेक अनंत ॥ (पन्ना ७)

गुरबाणी का सदीवी सच आधुनिक विज्ञान की पहुंच से अभी भी बहुत दूर है। कई सदियां बीत जाने के बाद भी मनुष्य गुरबाणी के दर्शाए वैज्ञानिक सच के कुछ अंश ही खोज सका है।



कविता

धर्म मर्म जानिए

नफ़रतों की भीड़ में, धर्म कहीं खो गया।
ओढ़ चोला धर्म का, अधर्म हावी हो गया।
धर्म न तूफान में, यह सहज प्रवाह में।
धर्म न आतंक में, यह तो प्रेम-राह में।
धर्म ही वह सूत्र जो, हम सभी को जोड़ता।
है वही अधर्म जो, प्रेम-बंध तोड़ता।
धर्म नहीं थोप सकते, यह बसे स्वभाव में।
धर्म नहीं ओढ़ सकते, यह तो आत्मभाव में।
धर्म नहीं शोर में, रहता शांत चित्त में।
धर्म नहीं होड़ में, रहता सह-अस्तित्व में।
धर्म ही वह तत्व है, जो सभी को धारता।
खुद को नहीं लादता, बल्कि सबको तारता।
धर्म-मार्ग पर बढ़ें, तो धर्म-मर्म जानिए।
अधर्म के कुमार्ग पर, खुद भटक न जाइए।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ प्र)। मो : ०९४११६०७६७२

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

-स. गुरदीप सिंघ*

सबसे प्रमुख आवश्यकता किसी विचारधारा के प्रमाणिक पाठ (टैक्सट) की होती है। इस क्षेत्र में केवल सिक्ख कौम ही भाग्यशाली है जिसके पास रहिबरों के पावन वचन हू-ब-हू रूप में मौजूद हैं। दूसरे शब्दों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की पवित्र बाणी को श्री गुरु अरजन देव जी ने स्वयं संपादित किया है। यह आज भी सिक्ख कौम के पास प्रमाणिक रूप में सुरक्षित है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी जो सिक्खों के पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी निगरानी तले भाई गुरदास जी द्वारा श्री अमृतसर में रामसर नामक रमणीक स्थान में लिखवाया।

नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी की शहीदी के उपरांत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'खालसा' की सृजना की। इसके साथ ही पाउंटा साहिब और श्री अनंदपुर साहिब में बाणी की संभाल, लिखाई एवं व्याख्या का बड़े पैमाने पर प्रबंध किया और तलवंडी साबो में सम्पूर्ण बाणी के लिखित स्वरूप की सेवा का कार्य भाई मनी सिंघ जी द्वारा सम्पन्न करवाया। आप जी ने इसमें श्री गुरु तेग बहादर साहिब की बाणी दर्ज कर जैजावंती राग शामिल कर रागों की गिनती ३१ कर दी।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी सरल और विश्व महत्ता रखने वाली है। इससे समूची मानवता सही दिशा ले सकती है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का संदेश अपनाने के लिए कोई शर्त नहीं है। प्रत्येक देश, कौम, नसल, जाति, लिंग और धर्म का व्यक्ति श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के अनुसार अपना जीवन ढाल सकता है। निसंदेह सारा विश्व इनसे सही दिशा ले सकता है। धर्म ग्रंथों के सृजन सम्बंधी इतिहास पर दृष्टि डाली जाए तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की विलक्षणता की झलक स्पष्ट नज़र आती है क्योंकि :

१. श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरु रूप में प्रवान किया गया है। यह संसार का वाहिद धार्मिक इलाही ग्रंथ है जिसका प्रकाश करना, सुखासन करना, हुक्म लेने का विलक्षण विधि-विधान है जो किसी अन्य धर्म ग्रंथ को प्राप्त नहीं है।

२. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सिक्ख धर्म के प्रवर्त्तकों की बाणी को चमत्कारिक रूप में पेश नहीं किया गया।

३. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विद्यमान चिंतन मानव मुक्ति के दरवाज़े खोलता हुआ एक ऐसे मानुष्य की तस्वीर सृजत करता है जो मानवता की बंद खलासी और 'पति सेती' जीवन के लिए जीवन और मृत्यु को एक समान समझता है।

४. श्री गुरु ग्रंथ साहिब हिंदोस्तान के ५०० वर्षों (१२ वीं से १७वीं सदी तक) के इतिहास का स्रोत है।

५. श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 'शबद गुरु' का विलक्षण सिद्धांत पेश किया गया है। जिसका प्रकाश रहती दुनिया तक ज्यों का त्यों बना रहेगा।

*३०२ किदवाई नगर, लुधियाना १४१००८, मो: ९८८८१-२६६९०

श्री गुरु अरजन देव जी ने सबसे ज्यादा बाणी रचना और सम्पूर्ण बाणी का संकलन और संपादन किया। १५९९ ई में संपादना का कार्य आरंभ हुआ और १६०४ ई को यह महान कार्य सम्पूर्ण हुआ। 'आदि ग्रंथ' साहिब का पहला प्रकाश १ सितंबर, १६०४ ई को श्री हरिमंदर साहिब श्री अमृतसर में किया गया और बाबा बुड्ढा जी को प्रथम ग्रंथी नियुक्त किया गया और पहले प्रकाश के समय निम्न हुकमनामा आया :

सूही महला ५॥
संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कंमु करावणि आइआ राम ॥
धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अंम्रित जलु छाइआ राम ॥
अंम्रित जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे ॥
जै जै कारु भइआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे ॥
पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइआ ॥
अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइआ ॥ *(पन्ना ७८३)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में ६ गुरु साहिबान श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी, श्री गुरु अरजन देव जी, श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी दर्ज है। ग्यारा भट्ट-- भट्ट कलसहार जी, भट्ट जालप जी, भट्ट कीरत जी, भट्ट भिखा जी, भट्ट सल्ह जी, भट्ट भल्ह जी, भट्ट नल्ह जी, भट्ट गयंद जी, भट्ट मथुरा जी, भट्ट बल्ह जी, भट्ट हरिबंस जी। १५ भक्त साहिबान-- भक्त जयदेव जी, भक्त नामदेव जी, भक्त त्रिलोचन जी, भक्त परमानंद जी, भक्त सदना जी, भक्त बेनी जी, भक्त रामानंद जी, भक्त धंना जी, भक्त पीपा जी, भक्त सैण जी, भक्त कबीर जी, भक्त रविदास जी, भक्त फरीद जी, भक्त भीखन जी, भक्त सूरदास जी, शेख़ फरीद जी और ४ गुरसिक्ख: भाई मरदाना जी, बाबा सुंदर जी, राई बलवंड तथा भाई सता जी। कुल ३६ बाणीकारों की बाणी है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी ३१ रागों में बंटी हुई है। ये राग है-- १. सिरी रागु, २. साझ, ३ गउड़ी, ४. आसा, ५. गूजरी, ६. देवगंधारी, ७ बिहागड़ा, ८. वडहंसु, ९. सोरठि, १०. धनासरी, ११. जैतसरी, १२. टोडी, १३. बैराड़ी, १४. तिलंग, १५. सूही, १६. बिलावल, १७. गोंड, १८. रामकली, १९. नट नाराइन, २०. माली गउड़ा, २१. मारु, २२. तुखारी, २३. केदारा, २४. भैरउ, २५. बसंतु, २६. सारग, २७. मलार, २८. कानड़ा, २९. कलिआन, ३०. प्रभाती, ३१. जैजावंती

तीन बाणियां रागों के आरम्भ से पहले दर्ज हैं : १. जपु २. रहिरास (सो दरु और सो पुरखु), ३. सोहिला।

सबसे पहले मूल मंत्र है :

ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

जैजावंती राग की समाप्ति के बाद सलोक सहसक्रिती महला पहला सलोक सहसक्रिती महला ५, गाथा महला ५, फुनहे महला ५, चउबोले महला ५, सलोक भक्त कबीर के, सलोक सेख फरीद के, सवये स्री मुखबाक्य महला ५, सवईए भट्ट के, सलोक वारां ते वधीक, सलोक महला ९, मुंदावणी महला ५, और राग माला दर्ज है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी को तरतीब देने के बाद सलोक महला नौवां के बाद 'मुंदावणी' का शब्द दर्ज किया गया है। महान कोश के अनुसार यह मोहर छाप लगाने के लिए किया है।

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

मोर्चा गुरु का बाग

*-प्रि सतबीर सिंघ**

पाकिस्तान बनाने के बारे में कहा जाता है कि इसकी ज़मीन सर सय्यद अहमद ख़ान ने रखी, नींव (शिलान्यास) मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने तथा दीवारें और छत मुहम्मद अली जिनाह ने डालीं। अन्य काम लियाकत अली तथा दूसरे तो रंग-रोगन ही करते रहे।

इसी तरह अंग्रेजों से स्वतंत्रता के लिए कहा जा सकता है कि ज़मीन बाबाओं (१९०८ से १९२९) ने तैयार की। नक़शा जलियां वाले तैयार हुआ तथा नींव (शिलान्यास) गुरु के बाग में १५ अगस्त, १९४७ ई से पच्चीस वर्ष पूर्व अगस्त, १९२२ ई को रखी गई। दीवारें रावी के किनारे १९३० ई तथा छत आज़ाद हिंद फौज ने डाली। अन्य सब तो पेंट ब्रश पकड़ रंग-रोगन ही करते रहे।

पुराने खुफिया (गुप्त) रिकार्ड ग्वाह है कि जब कोई स्वतंत्रता का नाम भी नहीं लेता था, उस समय बाबाओं ने 'गदर' की गूंज डाली। मीठी लोरियां देकर सुलाए हिंदोस्तान को घड़ियाल की आवाज़ से जगाया। कभी 'पगड़ी संभाल' कहा, कभी 'होश संभाल' लिखकर झिंझोड़ा। बजबज घाट पर बरसती गोलियों का सामना हंसते हुए ही नहीं, बल्कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब की अगुवाई में किया।

पंजाब में हलचल मच गई। गद्दार अलोप हो गए। अंग्रेजों द्वारा चाहे सख़्ती का दौर चलाया गया परंतु लहर में वृद्धि होती गई। देखने में अवश्य आगू पकड़े गए और फांसी के फंदों पर भी १९१५ ई को चढ़ाए गए परंतु स्वतंत्रता के लिए ज़मीन तैयार हो गई थी और तैयार करने वाले कलगीधर साहिब के सिंघ थे। जिन सातों ने सबसे पहले फांसी के फंदे को चूमा उनमें से छः सिंघ थे तथा उनके पावन नाम--

सरदार करतार सिंघ सराभा, भाई बख़शीश सिंघ गिलवाली (श्री अमृतसर), सरदार जगत सिंघ सुर सिंघ (भाई बिधी चंद का गांव), सरदार सुरैण सिंघ के दो सज्जन-जो गिलवाली (श्री अमृतसर) के थे और भाई हरनाम सिंघ-भट्टी गुराया (गुरदासपुर)।

कुछ समय हुआ इंदिरा गांधी ने कहा था कि स्वतंत्रता की लड़ाई में सबसे ज्यादा हिस्सा उसके प्रांत यू पी ने डाला परंतु अंक कुछ और बोल रहे थे।

स्वतंत्रता के लिए भारत के कई राज्यों ने अभी करवट भी नहीं बदली थी, उस समय सिक्ख और पंजाब अंग्रेजों को परासत कर रहे थे, फांसी के फंदे चूम रहे थे, काले पानी की सज़ाएं काट रहे थे।

गुप्त सूचना अनुसार, कुल हिंदोस्तान में फांसी पर चड़ाए गए ४७ पुरुष, उनमें से ३८ सिक्ख थे। अजीवन कारावास और संपत्ति ज़ब्त ३८ की गई, उनमें से ३१ सिक्ख थे। केवल अजीवन कारावास ३० पुरुषों को हुई जिनमें से २८ सिक्ख थे। काले पानी केवल २९ शूरवीरों को भेजा गया, उनमें से २६ सिक्ख थे। सख़्त सज़ाएं कुल ४७ को हुई, उनमें से भी ३८ सिक्ख थे। यह केवल १९०८ से १९१८ तक

विवरण था।

प्रथम विश्व युद्ध के आरंभ होने से सभी आगू गांधी जी सहित अंग्रेजों की सहायता पर लगे रहे तथा फिर जलियां वाला बाग का साका हुआ। कुल १०३६ शहीद हुए परंतु सिक्खों की संख्या ४७९ थी।

यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि सिक्ख संपूर्ण हिंदोस्तान की संख्या का केवल एक प्रतिशत है तथा स्वतंत्रता के युद्ध में हिस्सा ८३ प्रतिशत जा पड़ता है।

१९२१ की २० फरवरी को श्री ननकाणा साहिब का साका हो गया। संपूर्ण सिक्ख जगत ही स्वतंत्रता के लिए उठ खड़ा हुआ। शहीदों ने स्वतंत्रता लेने का राह दिखा दिया। गांधी जी जब स्वयं तीन मार्च, १९२१ ई को साके वाली जगह श्री ननकाणा साहिब पहुंचे तब उन्होंने कहा 'जत्थे वालों ने कमाल कर दी है। उनके पास हथियार तो थे परंतु जैसा कि वो प्रण कर चुके थे, उन्होंने हथियारों पर हाथ न रखा संपूर्ण जलकर राख हो गये परंतु मजाल है किसी ने हाथ उठाया हो। अकालियों ने अपने ऊपर सुधार करने की ज़िम्मेदारी ले रखी थी, इसलिए उनकी कुर्बानी बहुत महान है।'

दोबारा एक बार संपूर्ण पंजाब जागृत हो गया। पंडित मदन मोहन मालविया ने एक बार बातचीत के दौरान कहा था--

"सिक्ख इतिहास वाले शहीद सिक्खां दे नमूने कित्थे चले गए? बंद-बंद कटाउण ते खोपरीयां उतरवाण वाले सिक्ख की मुक गए हन?" कौम ने संपूर्ण इतिहास दोबारा रच दिया। जंड के साथ बंधकर शहीद हुए, तेल डालकर जला दिए गए गोलियों के साथ मार दिए गए परंतु किसी ने आह तक न भरी। 'गुरु का बाग' ने तो संपूर्ण हिंदोस्तान में कुर्बानियों की खुशी भर दी। २१ अगस्त, १९२२ ई को सिंघों पर अत्याचार शुरू हुए तथा १३ सितंबर तक होते रहे। बी टी की लाठियां बरस रही थी सिक्ख खुशी-खुशी सहन कर रहे थे। कई प्रिथीपाल सिंघ जैसों ने लाठियों के ९८-९८ वार सहन किए। सरदार प्रिथीपाल सिंघ शहीद तो हो गए परंतु स्वतंत्रता के महल की नींव बहुत मज़बूत कर गए।

जब जत्था श्री अकाल तख़्त से प्रण कर 'शांतमई रहणा है', गुरु का बाग की तरफ शबद उच्चारण करता जा रहा था तो पुली पर उनको रोक लिया जाता था और पावों व गुटनों पर लाठियां मारकर उनको गिरा लिया जाता था। सिंघ गिरे हुए भी सतिनाम-वाहिगुरु का उच्चारण कर रहे थे। गिरे हुयों पर भी लाठियों की बौछाड़ कर दी जाती थी जैसे मूंज कूटा जाता है।

तब तक लाठियां बरसती रहती थी जब तक जत्थे के सिंघ बेहोश नहीं थे हो जाते। थोड़ी-सी होश आने पर जत्था आगे बढ़ने का प्रयत्न करता था तो दोबारा नये सिरे से पुलिस हल्ला बोलकर उन पर टूट पड़ती थी। जब अकाली पूरी तरह बेहोश हो जाते थे तो उनको एंबुलेंस कारों में डालकर अस्पताल ले जाया जाता था। हिंदोस्तान के आगूओं ने जब यह आंखों से देखा तो वो त्राहि-त्राहि कर उठे थे किंतु सिंघ हुक्म में बंधे हुए शांतचित, शांतमई थे।

एक बार एक बलोच सिपाही ने लाठियां मारते हुए, एक सिंघ के साथ गाली-गलोच करते हुए, साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को अपशब्द कहकर गुरु को बुलाने के लिए कहा तो नीचे से ऊंची आवाज़ में सिंघ ने कहा कि बता तो दूं कि मेरा गुरु गोबिंद सिंघ कहां है? जत्थेदार

का हुक्म है कि हाथ नहीं उठाना। सी ऐफ ऐंड्रीयूज़ ने जब हंसते हुए सिंघों को लाठियां खाते देखा तो उसने सिंघों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि एक नहीं वह अपने सामने अनेकों ही ईसा सूली पर चढ़ते देख रहा था।

श्री ऐंड्रीयूज ने अपने लिखित बयान में कहा-- इस बयान द्वारा मैं केवल यही बताने की कोशिश करूंगा जो मैंने श्री अमृतसर पहुंचकर १२ सितंबर, १९२२ ई को आंखों से देखा।

"एक बजे दोपहर मैं गुरु के बाग को चल दिया, रास्ते में जगह-जगह गांव में पुरुष और महलाएं खड़े थे जिन्होंने छबील लगाई हुई थी कि आते हुए जत्थे की थोड़ी-सी सेवा कर सके। सबसे अधिक मैंने महिलाओं की भरपूर श्रद्धा देखी। उनके चेहरों से आगे बढ़ते जत्थे के लिए जो धर्म हेतु बदले की भावना रहित कुर्बान होने जा रहे थे, ममता टपक रही थी।

बहुत मुश्किल के साथ हम आखिरकर गुरु के बाग पहुंचे। जिस पर सबसे पहले हमारी दृष्टि पड़ी, वो आठ मोटर गाड़ियां थी जिनको आम तौर पर मुसाफिरों को ढोने के लिए प्रयोग किया जाता था। अब उनको एंबूलेंस वैगना के रूप में प्रयोग किया जा रहा था।

जिस समय मैं गुरु के बाग के गुरुद्वारा साहिब पहुंचा तो सबसे अधिक आश्चर्य मुझे संगत में शांति देखकर हुआ। इतने बड़े इकट्ठ में घबराहट वाला जोश नहीं था। दर्शनी ड्योढ़ी के साथ ही (श्री गुरु ग्रंथ साहिब का) पाठ हो रहा था और भारी संख्या में संगत ध्यान के साथ श्रवण कर रही थी। पास में ही कुछ सेवादार आए हुए यात्रियों के लिए चक्की में आटा पीस कर रात के लंगर की तैयारी कर रहे थे। वहां पर इस बात का बिलकुल भी ख़्याल नहीं था कि अभी लाठियां पड़ी थीं या पड़ रही हैं या अबी सिंघ लाठियां सहन करके आए थे। जब मैंने एक से पूछा तो उसने बताया कि लाठियां बरस रही हैं।

यह सुनते ही मैं आगे बढ़ा वहां पर असंख्य लोग, एक खाली जगह (ज़मीन) पर बैठे थे और दर्द भरी आखों से देख रहे थे कि उनके सामने क्या हो रहा है? उनके चेहरों की तरफ ध्यान से देखा और एक मकान के कोने में उस जगह पर हो गया यहां से संपूर्ण मारपीट देखी जा सकती थी। देखने वाली संगत में कोई भी चीख-चिल्ला नहीं रहा था, केवल उनके होंठ कांप-कांपकर जाप एवं अरदास कर रहे थे। यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि उनको निर्देश दिया गया है कि वाहिगुरु, वाहिगुरु का जाप करें और वाहिगुरु के समक्ष अरदास करें कि परमात्मा फ़तहि बख़्शे। मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि उनका शांत मन रहना अरदास करना और मुंह से उफ तक न करना, मुझे ईसा की सूली स्मरण करा रहे थे। जो उन पर घटित हो रही थी, सचमुच लगभग ईसा की सूली पर चढ़ाई थी।

अब तक मैंने जूझते हुए सिंघों को आंखों से नहीं देखा था, केवल देखने वालों के मुंह से अनुमान लगाया था। जब मैं बढ़ी-सी दीवार फांदकर आगे बढ़ा तो अच्छाई-बुराई की टक्कर को सामने से देखा तो मुझे दर्शकों की अरदास और मुंह पर तनाव की समझ आई। यह ऐसा दृश्य था जिसको कोई कभी भी नहीं देख सकता और ईश्वर दोबारा मुझे कभी दिखाए भी न। वह चार काली दसतार बांधे हुए अकाली सिक्ख दर्जन सिपाहियों के सामने खड़े जिनमें से दो अंग्रेज अफसर भी थे। वह शबद पड़ते हुए पुलिस की कतार तक पहुंचे और एक गज़ के

फासले पर आकर रुक गए। वहां पर वह शांत चित्त रुक गए। उनके दोनों हाथ जुड़े हुए थे तथा यह प्रकट हो रहा था कि वह अरदास कर रहे हैं। फिर बिना कोई जत्थे द्वारा भड़काहट के एक अंग्रेज अधिकारी ने हाथ में पकड़ी लाठी से अरदास कर रहे एक सिंघ की हसली (कालर बोन) पर ज़ोर से मारा। यह सबसे घटिया बुज़दिलाना वार था। मैं बड़ी मुश्किल से अपने आप को काबू में रख सका। आने से पहले ही मैंने यह दृढ़ निश्चय कर लिया था कि कुछ भी हो मैं वचन एवं कर्म के साथ हस्तक्षेप नहीं करूंगा और शांत रहूंगा व उस प्रण पर मैं भी कायम रहूंगा जो जत्थे के अन्य सदस्य करकर आते हैं। अत: मेरी पूर्ण शांति अवश्य थी परंतु जिन्होंने यह साका नहीं देखा उनके लिए समझना मुश्किल है कि हमारे लिए चुप रहना कितना कठिन था। जो मारपीट मैंने देखी थी, वह अकाली सिंघ को नीचे गिराने के लिए काफी थी। वह नीचे गिर पड़ा और धीरे-धीरे पुन: उठा तथा उसी तरह फिर जुल्म सिंघ पर किया गया। चारों में से जो एक आगे बढ़ता, उस पर बार-बार कभी अंग्रेज द्वारा और कभी उसके आदेश तले सिपाहियों द्वारा असहनीय वार किए गये। अन्य तीनों को भरपूर वार कर शीघ्र ही गिरा दिया गया। यहां पर पुलिस का अत्याचार दरिंदों से बढ़कर था। मैंने स्वयं आखों से देखा कि एक आगे खड़े सिक्ख के पेट पर ज़ोर से पुलिस अधिकारी ने लात मारी।

यह बहुत ही घृणास्पद नीच प्रहार था कि मैं भी चीखे बगैर न रह सका और आगे दौड़ पड़ा। परंतु बाद में इससे भी घिनौनी हरकत मैंने उस वक्त देखी जब ज़मीन पर कटे हुए सपाट पड़े अकाली सिक्ख के पेट पर एक सिपाही ने अपने जूतों सहित भारी पावों के साथ खड़े होकर कंधे एवं गले के बीच अपना पूरा भार डालकर चोट पहुंचाई। तीसरी, पहले जैसी ही घिनौनी उस अकाली सिक्ख को मारी जब वह गिरे हुए सिक्ख को सहारा देने के लिए झुका था। इस प्रहार के साथ वह सिंघ उस निढाल (उत्साहहीन) बेहोश पड़े सिंघ पर गिर पड़ा, जिसको उठाने के लिए एंबूलेंस वैगना से दो कार्यकर्त्ता आ चुके थे। इस घिनौने कर्म को रोकने के लिए मैंने अंग्रेज अधिकारियों को कहा परंतु उन्होंने एक न सुनी।

यह दरिंदगी और गैर-इंसानियत हरकत का बयान करना और भी मुश्किल हो जाता है जब इस बात का प्रत्येक को ज्ञान है कि जिनकी मारपीट की जा रही है, वह वाहिगुरु का जाप करते हुए आ रहे थे और उन्होंने प्रण किया हुआ था कि बच-कर्म के साथ शांत रहेंगे तथा हाथ नहीं उठाएंगे। जिन अकाली सिक्खों ने पहले श्री हरिमंदर साहिब पर फिर गुरु का बाग शांतमई रहने का प्रण किया, वह ज्यादातर सेनिक ही थे। वह फ्लैडर्ज़ फ्रांस एवं मैसोपटामियां और ईस्ट अफरीका के मुहाज़ां पर जूझ चुके थे। वह अब उन अंग्रेजों के हाथों ही मारे जा रहे थे, जिनके साथ मिलकर वह कभी लड़े थे। वो दुख सहन कर प्रण निभा रहे थे। चाहे प्रत्येक चोट निर्दय (घातक) तथा तिरस्कृत (अपमानित) करने वाली थी परंतु जैसे वह खुशी-खुशी भाणा मान रहे थे, हर ज़रब (प्रहार) फ्तहि हो रही थी।

१३ सितंबर, १९२२ ई को धैर्य ने अत्याचार पर विजय पा ली। अत्याचार की पराजय हो गई लाठियों की मारपीट बंद हो गई। एक बार प्रत्येक पर प्रकट हो गया सिक्ख वही हैं।

गांधी जी ने भी तार दी कि :- 'जंगे-आज़ादी की पहली शांतमई लड़ाई जीती गई है।

बधाई हो!'

लाठियों के बाद गोलियों की बारी आई। सिंघों ने जैतो में सीना तान दिया। गोलियां चलती रहीं, सिंघ आगे बढ़ते गए। पंद्रह मिनटों में ६८ सिंघ शहीद हो गए। जो गुरु के बाग सी ऐफ़ ऐंड्रीयूज़ कांप उठे थे।

फिर १९४८ ई में भी यह सिंघ ही थे, जिनके सहारे आधा पंजाब और बंगाल बचा। मौलाना आज़ाद ने अपनी पुस्तक 'इंडिया विंज़ फ्रीडम' में स्पष्ट कर दिया था कि कांग्रेस तो ज़ोने (क्षेत्र) बनानी मानकर संपूर्ण पंजाब तथा संपूर्ण बंगाल, आसाम सहित मुसलिम लीग के अधीन करने को तैयार हो गई थी। २ मार्च, १९४८ ई को मास्टर तारा सिंघ ने नारा लगाकर आधा पंजाब और संपूर्ण कश्मीर बचा लिया।

बहुत कम लोगों को मालूम है कि स. बलदेव सिंघ ने अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले शिमला कल्ब में लेक्चर (भाषण) देते बताया था कि अंग्रेज और जिनाह सिक्खों को पूर्ण अधिकार वाला राज्य देने के लिए तैयार थे, वो ही थे जिन्होंने साफ इन्कार कर दिया। फिर एक वार्ता भी सुनाई कि जब लंडन की वार्त्ता अप्रैल, १९४८ की असफल हो गई और नेहरू जी उठकर चले गए और कमरे में जिनाह साहिब तथा मैं रह गए। मैं मुहम्मद अली जिनाह से पूछा कि आपको कितना बड़ा पाकिस्तान चाहिए? तो उस समय मेज़ पर पेपर वेट पड़ा हुआ था, उठाकर जिनाह ने कहा, बलदेव सिंघ! चाहे इतना ही हो परंतु लेना पाकिस्तान है।

माऊंट बैटन को भी यह पता चल गया था कि पाकिस्तान दिए बिना बात नहीं बननी। कैबल जॉनसन ने जब मीटिंग की समाप्ति के उपरांत डूडल्ज़ (चीच घचोलियां, जो माऊंट एकांत समय कागज़ पर खींचता रहता है) एकत्र किए थे तो जिनाह ने एक महल बनाकर ऊपर हलाली झंडा लहराया हुआ था, उस पर लिखा हुआ था-- 'पाकिस्तान जिंदाबाद!'

भगत सिंघ शहीद द्वारा निचले न्यायालय में 'जिस इनकलाब को वह ज़िंदाबाद' कहते थे, उसका अर्थ पूछा गया। उन्होंने बयान देते हुए कहा, इनक़लाब का यह अवश्य अर्थ नहीं कि खूनी हो, न ही यह अर्थ है कि किसी खास दोस्त को लूटा और मारपीट की जाए। यह कोई बम और पिस्तौल का मार्ग नहीं। इनक़लाब का अर्थ है कि यह प्रचलित निज़ाम जो दूसरों पर आश्रित (निर्भर) है बदल जाए। वाहक और मज़दूर, जो समाज का सबसे अनिवार्य अंग है कि संपूर्ण कमाई (धन) वह लूटकर ले जाते हैं, जो हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहते हैं। शाहूकार उनका रक्त चूसकर लाखों मनमर्ज़ी अनुसार उजाड़ते है और वह रोटी तक के लिए तरसते रहते हैं। यह अंतर समाप्त होना चाहिए। अगर यह ऐसे रहा तो यह एक तूफान का पेश खेमा है, लूटने वाली अग्नि के दहन पर बैठकर मौज़ कर रहा है और गरीब ख्वाबों के किनारे आहें भर रहे हैं। ❋



गुरबाणी चिंतनधारा : १३

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

साधसंगि मिलि करहु अनंद ॥
गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥
राम नाम ततु करहु बीचारु ॥
दुलभ देह का करहु उधारु ॥
अंम्रित बचन हरि के गुन गाउ ॥
प्रान तरन का इहै सुआउ ॥
आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥
मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥
सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥
मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥ (पन्ना २९३)

२२वीं असटपदी की पांचवी पउड़ी में गुरु अरजन देव जी ने साधसंगत के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए प्रभु का गुणगान करते हुए परमानंद की अवस्था की प्राप्ति का सहज मार्ग बताया है। साथ ही परमेश्वर को हाज़िर-नाज़िर जानते हुए जीवन में विचरण करने वाले जीवों की अज्ञानता का अंधकार मिट जाता है तथा उनके हृदय में किस प्रकार ज्ञान का प्रकाश होता है, इस तथ्य को भी उजागर किया है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि साधसंगत में एकत्र होकर आत्मिक आनंद प्राप्त करो। परमानंद स्वरूप उस परमेश्वर का गुणानुवाद करो अर्थात् आनंद के खज़ाने प्रभु की उस्तति करो। प्रभु-नाम रूपी तथ्य (गूढ़ रहस्य) का विचार करो ताकि दुर्लभ देह (शरीर) अर्थात् मानव जीवन का उद्धार करें। अमरता को प्राप्त करने वाले अकाल पुरख परमेश्वर के गुण गायन करो इस अनमोल जीवन को बचाने का यही एकमात्र साधन है। आठ पहर अर्थात् हर पल उस परमेश्वर को अंग-संग (हाज़िर नाज़िर) जानो। (ईश्वर की सर्वव्यापकता का बोध) अंत:करण के अंधकार को पूरी तरह मिटा (नष्ट कर) देगा। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि अगर मनोवांछित पदार्थों को प्राप्त करना चाहते हो तो प्रभु के पावन उपदेशों को सुनकर हृदय में बसाओ अर्थात् सतिगुरु के उपदेश को सुनकर हृदय में बसाने से सम्पूर्ण मुरादें पूर्ण हो जाती हैं।

वस्तुत: ईश्वर आनंद स्वरूप है और पूर्ण गुरु (संत पुरुष) की संगत के द्वारा परमेश्वर का नाम सुनो और उसे हृदय में बसाओ। ईश्वर को हृदय में बसाने के फलस्वरूप अज्ञान का अंधेरा दूर हो जाएगा और सत्य का सूर्य उदय होगा। सत्य और ज्ञान के प्रकाश से ही जीवन का सही मकसद (वास्तविक उद्देश्य) समझ में आएगा जिसके फलस्वरूप सही मार्ग पर चलते हुए उचित करने योग्य कार्य करके ही संसार रूपी भवसागर से पार उतरा जा सकता है और प्रभु मिलाप का सौभाग्य प्राप्त किया जा सकता है। फिर समस्त इच्छाएं पूर्ण हो जायेगी। फिर तो आनंद भरपूर हृदय गुरबाणी आशयानुसार पुकार उठेगा :

खुदी मिटी तब सुख भए मन तन भए अरोग ॥
नानक द्रिसटी आइआ उसतति करनै जोगु ॥
(पन्ना २६०)

हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥
राम नामु अंतरि उरि धारि ॥
पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥
मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥
दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥
सचु वापारु करहु वापारी ॥
दरगह निबहै खेप तुमारी ॥
एका टेक रखहु मन माहि ॥
नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥

२२वीं असटपदी की छठी पउड़ी में गुरु पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी जीव को हृदय घर में प्रभु-परमेश्वर को बसाकर लोक-परलोक संवारने की नसीहत दे रहे हैं। साथ ही जीव को व्यापारी मानते हुए सच्चा व्यापार करने का उपदेश दे रहे हैं ताकि जीव उस सच्चे मालिक के दर पर प्रवान हो सके।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि परमेश्वर का (सच्चा एवं प्यारा) नाम हृदय में बसाओ तथा लोक एवं परलोक दोनों ही संवार लो। पूरे गुरु की शिक्षा भी पूर्ण ही होती है और जिसके हृदय घर में गुरु का उपदेश (शिक्षा) बस जाता है उसे प्रभु रूपी सत्य की पहचान हो जाती है। मन एवं तन से एकाग्रचित होकर नाम-सिमरन का अभ्यास करो। (इसके फलस्वरूप) दुख-दर्द और मन का भय दूर हो जाएगा। हे जीव रूपी व्यापारियो! सच्चे नाम का व्यापार करो। ताकि तुम्हारे सौदे की मालिक की दरगाह में कीमत पड़ जाए। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में यही समझाते हैं कि मन में केवल एक का विश्वास रखो ताकि आवागमन से पूर्ण रूप में मुक्ति मिल जाए अर्थात् जन्म-मृत्यु के चक्कर से छुटकारा मिले।

वस्तुत: जीव को गुरबाणी में अनेक स्थानों पर व्यापारी मानकर उसे ऐसा सौदा करने के लिए प्रेरित किया गया है, जिसकी कीमत उस मालिक की दरगाह में पड़े। अक्सर होता यह है कि माया में गलतान हुआ जीव आजीवन जो व्यापार करता है वह केवल इस संसार में ही उससे प्राप्त होने वाले लाभ के बारे में ही सोचता है और इसी में इस कद्र गलतान हो जाता है कि पाप-पुण्य की विचार न करता हुआ स्वार्थ वश केवल अपने ही लाभ और फायदे की बात सोचता है और दूसरों को नुकसान पहुंचाने से भी गुरेज़ नहीं करता, लेकिन गुरबाणी तो हमें ऐसे व्यापार और लाभ प्राप्त करने की सीख देती है जो उस परमेश्वर के दर पर भी प्रवान हो, जैसा कि गुरबाणी में समझाया गया है :

वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥
तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥
अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥
(पन्ना २२)

इसके विपरीत खोटे एवं झूठे सौदा (व्यापार) करने वाले को तो जाल में फंसे हिरण की तरह सदैव दुखी ही होना पड़ता है। यथा :

खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ॥
फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥
(पन्ना २३)

साथ ही इस पउड़ी में यह भी स्पष्ट समझ लेना आवश्यक है कि गुरु की दीक्षा से यहां अभिप्राय गुरु की सच्ची शिक्षा एवं उपदेश से है, जिसे पढ़-सुनकर हमने हृदय में बसाना है। गुरबाणी आशयानुसार तो समस्त कीमती हीरे-जवाहरात, माणक-मोती तो हमारे अंदर ही हैं इन्हें प्रकट करने के लिए बस ज़रूरी है अगर हम गुरु की एक भी शिक्षा को हृदय में बसाकर उसके अनुसार जीवन बनाने का प्रयास करें यथा श्री गुरु नानक देव जी की पावन बाणी का प्रमाण है :

मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ *(पन्ना २)*

लेकिन पूर्ण सतिगुरु का मिलाप ईश्वर की रहमत से होता है जो जीव को ईश्वर में एक

रूप होने की युक्ति समझा देता है यथा :

तिन्हा मिलिआ गुरु आइ जिन कउ लीखिआ ॥
अंम्रितु हरि का नाउ देवै दीखिआ ॥
(पन्ना ७२९)

अत: हमें सच्चे गुरु की सच्ची शिक्षा को हृदय में बसाकर उसके अनुसार जीवन बनाकर अपना यह बहुमूल्य जीवन सार्थक करना है।

तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥
उबरै राखनहारु धिआइ ॥
निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥
प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥
जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥
नामु जपत मनि होवत सूख ॥
चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥
तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥
सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥
नानक ता के कारज पूरा ॥७॥

२२वीं असटपदी की सातवीं पउड़ी में गुरु पातशाह, अमृत के दाते परमेश्वर की सर्वव्यापकता एवं उसके ध्यान से अमरता की प्राप्ति का संकेत करते हुए यह भी स्पष्ट रूप से समझाया है कि प्रभु के भक्त की कोई बराबरी नहीं कर सकता लेकिन यह भक्ति का मार्ग दर्शाने वाला केवल पूर्ण गुरु ही है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि उस परमेश्वर से दूर भला कहां कोई जा सकता है? उसका ध्यान (भक्ति) ही मुक्ति का साधन है। जो इन्सान भय से रहित परमेश्वर की आराधना करता है वह भय मुक्त हो जाता है। प्रभु की कृपा से ही जीव का संसार रूपी भवसागर से पार उतारा होता है अर्थात् भवजल से छुटकारा होता है। जिसकी रक्षा परमात्मा खुद करता है उसे कोई दुख नहीं सताता। प्रभु के सिमरन से मन में सुख, आनंद बना रहता है। (सिमरन की बरकतों से) जीव चिंता तथा अहंकार से मुक्त हो जाता है। ऐसे भक्त की कोई बराबरी नहीं कर सकता। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह गुरु की महिमा को बयान करते हुए फरमान करते हैं कि जिस इन्सान के सिर पर रक्षक के रूप में पूर्ण गुरु खड़ा हो उसके समस्त कार्य संवर जाते हैं।

वास्तव में जीव के उद्धार का प्रमुख कारण होता है, उस सर्वव्यापी परमेश्वर की बंदगी! लेकिन उसकी बंदगी भी उसी की रहमत से ही मुमकिन है, जिस पर प्रभु अपनी मेहर करता है उसे पूर्ण गुरु से मिलवा देता है और पूर्ण गुरु की रहमत से प्रभु बंदगी संभव होती है और प्रभु बंदगी से दुखों, चिंताओं और विकारों से सहज ही छुटकारा मिल जाता है। भय मुक्त परमेश्वर की भक्ति ही जीव यमदूतों एवं नरकों के भय से मुक्त कर देती है क्योंकि तब जीव सर्वशक्तिशाली निर्भय प्रभु चरणों के सहारे जीवन व्यतीत कर रहा होता है। यथा गुरबाणी प्रमाण :

निरभउ भए सगल भै खोए गोबिद चरण ओटाई ॥
नानकु जसु गावै ठाकुर का रैणि दिनसु लिव लाई ॥ *(पन्ना १०००)*

अत: भय एवं चिंता से मुक्त करवाकर सुख आनंद का असल कारण जीव के लिए पूर्ण गुरु ही बना, जिसने संसार के प्रति सुरति को उलट कर सही दिशा प्रदान कर जीवन आनंद भरपूर कर दिया। यथा गुरबाणी प्रमाण :

मन तन रसना हरि चीन्हा ॥
भए अनंदा मिटे अंदेसे सरब सूख मो कउ गुरि दीन्हा ॥१॥ रहाउ ॥
इआनप ते सभ भई सिआनप प्रभु मेरा दाना बीना ॥ *(पन्ना ८२३)*

और किस प्रकार गुरु कृपा से विकार रूपी दुश्मनों से छुटकारा मिला और मुझे समर्थ प्रभु का सहारा प्राप्त हो गया। पंचम पातशाह की

बाणी में अन्यत्र भी यही भाव दृढ़ करवाया गया है यथा :

निवरे दूत दुसट बैराई गुर पूरे का जपिआ जापु ॥
कहा करै कोई बेचारा प्रभ मेरे का बड परतापु ॥
(पन्ना ८२४)

मति पूरी अंम्रितु जा की द्रिसटि ॥
दरसनु पेखत उधरत स्रिसटि ॥
चरन कमल जा के अनूप ॥
सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥
धंनु सेवा सेवकु परवानु ॥
अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥
जिसु मनि बसै सु होत निहालु ॥
ता कै निकटि न आवत कालु ॥
अमर भए अमरा पदु पाइआ ॥
साधसंगि नानक हरि धिआइआ ॥८॥२२॥

२२वीं असटपदी की अंतिम पउड़ी में गुरु साहिब उस परमेश्वर के ही विशिष्ट गुणों का बखान करते हुए फरमान करते हैं कि वह परिपूर्ण बुद्धि संपन्न एवं अमृत दृष्टि वाला है उद्धारकर्ता, अंतर्यामी प्रभु सर्वत्र प्रधान है। साधसंगत में एकत्र होकर उसका नाम जपने वाले को अमर पद की प्राप्ति हो जाती है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जिस परिपूर्ण परमेश्वर की समझ मुकम्मल (पूर्ण) है अर्थात् ऐसा मालिक जिससे कभी किसी प्रकार की कोई गलती नहीं होती। जिसकी दृष्टि से अमृत बरसता है। जिसके दीदार (दर्शन) से सृष्टि का उद्धार होता है। जिस परमेश्वर के चरण कमल सदृश्य अति सुंदर है, उसका स्वरूप अत्यंत सुंदर (मनोरम) है। उसकी सेवा धन्य है जिसे करके सेवक प्रवान हो जाता है। वह अंतर्यामी (घर-घर की जानने वाला) है एवं सर्वश्रेष्ठ पुरष है, जिसके हृदय में वह बस जाता है वह निहाल हो जाता है अर्थात् हर पल आनंद भरपूर रहता है। काल उसके पास नहीं आ सकता अर्थात् वह आवागमन से मुक्त हो जाता है। गुरु पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में पावन फरमान करते हैं कि जो इस प्रकार साधसंगत में हरि का ध्यान धरता है। ईश्वर का गुणगान सतसंगत में करता है वह अमर पद को प्राप्त करता है अर्थात् ऐसा जीव अमर हो जाता है और आवागमन के चक्कर से पूर्ण तथा मुक्त होकर सदैव कायम रहने वाला दर्जा प्राप्त कर लेता है।

वस्तुत: परमेश्वर के सुंदर मनमोहक एवं अविनाशी स्वरूप का बाणी में बहुतायत मात्रा में वर्णन किया गया है। बेशक परमेश्वर निर्गुण, निराकार है फिर भी उसकी सगुण रूप से उपासना का ज़िक्र अनेक स्थानों पर दृष्टिगोचर होता है, कहीं उसके सुंदर नयन-नक़श का चित्रण है तो कहीं उसके लंबे केशों का और अनुपम चरण कमलों की महिमा को गायन किया गया है यथा गुरबाणी प्रमाण है :

करण कारण समरथु सुआमी नानक तिसु सरणाई ॥
बंधन तोड़ि चरन कमल द्रिड़ाए एक सबदि लिव लाई ॥ . .
संतसंगि मिलि कीरतनु गाइआ निहचल वसिआ जाई ॥ (पन्ना ९१५)

वास्तव में उस निर्गुण निराकार का सगुण स्वरूप पूर्ण गुरु ही है जो उस परमेश्वर के नाम में लीन होकर उसी का रूप हो जाता है और उसका दयालु एवं परोपकारी स्वभाव ईश्वर जैसा ही होता है। पूर्ण संत एवं परमेश्वर में कोई भेद ही नहीं रह जाता। जीव जन्म-मृत्यु के चक्करों से भी पूर्ण तथा मुक्त हो जाता यथा :

अमिअ द्रिसटि सुभ करै हरै अघ पाप सकल मल ॥ . .
सु कहु टल गुरु सेवीऐ अहिनिसि सहजि सुभाइ ॥
दरसनि परसिऐ गुरू कै जनम मरण दुखु जाइ ॥
(पन्ना १३९२)

बस आवश्यकता है तो ऐसे दयालु प्रभु की शरण में आने की स्वयं की सियानपें त्यागकर गुरु की मार्फत तो किस प्रकार समस्त बंधनों से छुटकारा मिल जाता और गुरु कृपा करके उस परमेश्वर के नाम में ही लीन करने की क्षमता रखता है जैसा कि पंचम पातशाह ने सारग राग में अति सुंदर शब्द उच्चारण किया है, जिसे पढ़-सुनकर हृदय आनंद भरपूर हो जाता है यथा :

ठाकुर तुम्ह सरणाई आइआ ॥
उतरि गइओ मेरे मन का संसा जब ते दरसनु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥
अनबोलत मेरी बिरथा जानी अपना नामु जपाइआ ॥
दुख नाठे सुख सहजि समाए अनद अनद गुण गाइआ ॥१॥
बाह पकरि कढि लीने अपुने ग्रिह अंध कूप ते माइआ ॥
कहु नानक गुरि बंधन काटे बिछुरत आनि मिलाइआ ॥२॥ (पन्ना १२१८)

अत: स्पष्ट है मार्ग बड़ा सहज एवं सरल है लेकिन कलयुगी जीवों ने अपनी टेढी चालों से इसे कठिन एवं असाध्य बना लिया है। एक चिंतक की पंक्तियां इस संदर्भ में स्मरण हो आई है जो यहां उल्लेखनीय है, जैसे एक सांप जहर से भरा है, टेढी चालें चलता है लेकिन जब अपनी बिल में जाता है बिल्कुल सरल-सहज एवं सीधी चाल से, बस हमें भी गुरु के दर पर अत्यंत सहज भाव से सब तरह की चतुराइयां एवं कुटिल चालें छोड़कर आना होगा तभी हम अपने मूल से जुड़कर गुरु और परमेश्वर के लाड़ले प्यारे बच्चे बन सकेंगे और फिर कैसी रहमत के पात्र बनते हैं उसका हम अंदाज़ा ही नहीं लगा सकते। वाहिगुरु रहमत करे हम सहज एवं सरल मार्ग को अपना लें। ❁

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

(पृष्ठ ४५ का शेष)

यह शब्द अपने आप में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की महानता का एलान है। इसमें सत्, संतोख और नाम रूपी भोजन को परोसा गया है, जिसके नित्य प्रति सेवन से मनुष्य दुनियावी भूखों से ऊपर उठकर परमात्मा में अभेद हो जाता है। ये वस्तुएं सारी कायनात का आश्रय हैं। जो भी इस ग्रंथ में दर्ज बाणी को पढ़ेगा, इस पर विचार करेगा और सत्, संतोख तथा नाम रूपी भोजन को पचा लेगा, उसका आत्मिक कल्याण होगा :

मुंदावणी महला ५ ॥
थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥
अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥
जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥
एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥
तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥ (पन्ना १४२९)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरु पदवी सचखंड हजूर साहिब नादेड़ में ६ अक्तूबर, १७०८ ई को प्रदान की गई, जब जोति-ज्योति समा जाने के केवल एक दिन पहले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने देहधारी गुरु की परंपरा को समाप्त करके हुक्म जारी किया :

अकाल पुरख के बचन सिउं, प्रगट चलायो पंथ ॥
सभ सिक्खन को हुकम है गुरू मानिओ ग्रंथ ॥
(रहितनामा, भाई प्रहिलाद सिंघ) ❁

ख़बरनामा

जत्थेदार अवतार सिंघ ने सूचना व प्रसारण मंत्री को पत्रिका लिखी

श्री अमृतसर : ६ जुलाई : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने सूचना व प्रसारण मंत्री, भारत सरकार श्री अरुण जेतली को पत्रिका लिखी है। अपनी पत्रिका में जत्थेदार अवतार सिंघ ने श्री अरुण जेतली को संबोधित करते हुए कहा है कि गत: तीन दहाकों से ऑल इंडिया रेडियो के माध्यम से सचखंड श्री हरिमंदर साहिब का कीर्तन प्रतिदिन सुबह ४:०० से ६:०० तथा सांयकाल ४:३० से ५:३० बजे तक प्रसारित होता है।

उन्होंने कहा कि सिक्खों द्वारा कड़ा परिश्रम करने के बाद ही यह कीर्तन प्रसारण आरंभ हुआ था और विश्व स्तर पर संपूर्ण सिक्ख जगत गुरबाणी प्रसारण कार्यक्रम के साथ जुड़ा हुआ है। परंतु १ जुलाई, २०१५ को ऑल इंडिया रेडियो के माध्यम से गुरबाणी कीर्तन प्रसारण करने की बजाए कोई अन्य कार्यक्रम प्रसारण किया गया, जबकि अन्य सभी कार्यक्रमों का प्रसारण ठीक समय पर हुआ। इसलिए संपूर्ण सिक्ख जगत में गुस्से एवं रोष की लहर दौड़ रही है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय प्रसारण द्वारा की गई यह कार्यवाही अनुचित है और भविष्य में सूचना व प्रसारण द्वारा ऐसी गलती दोबारा न की जाए जिससे सिक्ख जगत से जुड़ी भावनाओं को ठेस पहुंचे।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी प्रो दविंदरपाल सिंघ के परिवार को सहायता देगी : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : ९ जुलाई : शिरोमणि गु प्र कमेटी प्रो दविंदरपाल सिंघ की रिहायी के लिए आरंभ से ही प्रयत्नशील है। परिवार की किसी भी तरह की ज़रूरत हो तो शिरोमणि गु प्र कमेटी हर संभव सहायता करेगी। इन विचारों को जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने स्वामी विवेकानंद मनोरोग अस्पताल में प्रो दविंदरपाल सिंघ के साथ मुलाकात के दौरान पत्रकार सम्मेलन में प्रकट किया। इस समय उनके साथ सिंघ साहिब ज्ञानी मल्ल सिंघ जत्थेदार, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब, भाई मनजीत सिंघ सचिव शिरोमणि कमेटी आदि उपस्थित थे।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि प्रो दविंदरपाल सिंघ ने बहुत लंबा समय कारावास काट ली है, परमात्मा कृपा करे वो एक दिन इससे छुटकारा पाकर परिवार में बैठें। उन्होंने कहा कि प्रो दविंदरपाल सिंघ का कारावास परिवर्तन स. प्रकाश सिंघ बादल, मुख्य मंत्री पंजाब के विशेष प्रत्यनों द्वारा संभव हुआ। इसलिए मैं उनका धन्यवाद करता हूं। उन्होंने कहा कि प्रो दविंदरपाल सिंघ की तबीयत में सुधार हो रहा है। उन्होंने कहा कि प्रो दविंदरपाल सिंघ ने अपनी रिहायी के लिए परमात्मा के आगे अरदास करने के लिए भी कहा है। उन्होंने बताया कि प्रो दविंदरपाल सिंघ की चढ़ती कला और रिहायी के लिए शिरोमणि गु. प्र. कमेटी सदैव ही चिंतित एवं प्रयत्नशील है। उन्होंने कहा कि स. मनजीत सिंघ सचिव को बोल दिया है कि प्रति दूसरे, तीसरे दिन प्रोफेसर परिवार को मिलकर जिस किसी वस्तु की ज़रूरत हो तुरंत मुहैया करवाई जाए।

इस समय प्रो. दविंदरपाल सिंघ की पत्नी बीबी नवनीत कौर ने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने प्रोफेसर साहिब की रिहायी के लिए

सदैव ही हां का नारा लगाया है। आज भी अध्यक्ष साहिब ने भरोसा दिलवाया है कि किसी भी प्रकार की ज़रूरत हो शिरोमणि गु. प्र. कमेटी हर संभव सहायता करेगी। उन्होंने कहा कि प्रोफेसर साहिब की तबीयत में दिन-प्रतिदिन सुधार हो रहा है, वह पहले से काफी राहत महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रोफेसर के दुरुस्त होने पर ही पैरोल तथा रिहायी के लिए प्रयत्न किए जाएंगे।

गुरुद्वारा चरन कमल के निर्माण हेतु ज़मीन मुहैया करवाई जाए : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : १० जुलाई : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने जम्मू-कश्मीर के मुख्य मंत्री श्री मुफ्ती मुहम्मद सय्यद को पत्रिका लिखी है। अपनी पत्रिका में उन्होंने श्री सय्यद को कहा कि सिक्खों के प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी ने अन्य स्थानों की अपेक्षा चीन व तिब्बत से आते समय अपनी तृतीय उदासी (प्रचार यात्रा) के दौरान जम्मू-कश्मीर के ज़िला ऊधमपुर की तहसील राम नगर के गांव मनज़ीला के गुरुद्वारा चरन कमल के स्थान पर भाईचारे का संदेश दिया तथा इस स्थान पर उनकी याद (स्मृति) में गुरुद्वारा साहिब का निर्माण किया गया था।

उन्होंने कहा कि १९८४ के दंगों के दौरान इस गुरुद्वारा साहिब की इमारत को जला दिया गया था। इस इमारत की मुरम्मत सिक्ख समुदाए द्वारा करवाई गई। उन्होंने कहा कि कुछ शरारती अनसरों द्वारा इस इमारत की दोबारा १९८७ में तोड़-फोड़ कर दी गई। उन्होंने कहा कि माल मंत्री की हिदायत के अनुसार सहायक कमिश्नर (राम नगर) ऊधमपुर ने उस जगह का निरीक्षण किया तथा वहां के निवासियों और चौंकीदार के बयान दर्ज किए तथा इस सम्बंधी संपूर्ण रिपोर्ट नंबर ३५९६/ ९४/ ऐस क्यू दिनांक २०-१२-२०१० को डिप्टी कमिश्नर, ऊधमपुर के सपुर्द की। उन्होंने कहा कि इस रिपोर्ट में स्पष्ट लिखा गया है कि नज़दीकी निवासियों को गुरुद्वारा साहिब की इमारत को नवनिर्मित करने में कोई आपत्ति नहीं थी। जो कि खसरा नंबर ३९२/५२ गांव सर मनज़ीला, तहसील राम नगर, ज़िला ऊधमपुर के अधीन आती है। उन्होंने कहा कि डिप्टी कमिश्नर, ऊधमपुर की रिपोर्ट जो कि डिवीज़नल कमिश्नर को भेजी गई है के अनुसार गुरुद्वारा साहिब की इमारत जो कि १५-२० कनाल है के नज़दीकी निवासी इसमें अपना योगदान डालना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि माननीय उच्च न्यायालय जम्मू-कश्मीर ने दिनांक २३-०३-२०१५ को मुकद्दमा जो डबल्यू पी नंबर १४६/ २०१५ में हुक्म किया है कि डिप्टी कमिश्नर, ऊधमपुर इस हुक्म की तसदीकशुदा कापी जारी होने से ६ सप्ताह के बीच-बीच सपीकिंग आर्डर जारी कर इसका समाधान करें।

उन्होंने कहा कि मैं सिक्खों की सिरमौर संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी जो कि विश्व-स्तर पर सिक्ख धर्म सम्बंधी घटनाओं को सुलझाती है, का अध्यक्ष होने के नाते कहना चाहता हूं कि आप इस घटना के प्रति अपनी निजी रुचि लेते हुए अपने उच्च अधिकारियों को कहें कि वह सिक्ख समुदाये की मांगों के अधार पर गुरुद्वारा साहिब के निर्माण के लिए शीघ्र ही ज़मीन मुहैया करवाएं।



प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०८-२०१५